श्रीगणेशाय नमः
श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीसीतार्चन सर्वस्वम्

बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं। सीय बदन सम हिमकर नाहीं॥

श्रीगणेशाय नम:

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीसीतार्चन सर्वस्वम्

लेखक- हृतिक मिश्र

श्रीराघव ग्रन्थमालाया: द्वितीयं पुष्पं

मङ्गलाचरण

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि । मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ। याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम् ॥

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् । यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ । वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् । सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।

यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥

बंदउँ नाम राम रघुबर को । हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥

बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥

महामंत्र जोइ जपत महेसू । कासीं मुकुति हेतु उपदेसू ॥

महिमा जासु जान गनराऊ । प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ॥

जान आदिकबि नाम प्रतापू । भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥

सहस नाम सम सुनि सिव बानी । जपि जेई पिय संग भवानी ॥

हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन ती को ॥

नाम प्रभाउ जान सिव नीको । कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

श्रीरामनामाय नमः

॥ इति मङ्गलाचरण ॥

पुरोवाक्

नमः परमहंसास्वादितचरणकमलचिन्मकरन्दायभक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचन्द्राय

आदिशक्ति जगज्जननी जगदम्बा श्रीरामवल्लभा भगवती माता श्रीसीता जी की महिमा अपार है। वे साक्षात् जगत को उत्पन्न करने वालीं आदिशक्ति हैं। यथा : **"आदिसक्ति जेहिं जग उपजाया।" (श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड)।** उनके अंश मात्र से अनगिनत माता लक्ष्मी, माता उमा और माता सरस्वती उत्पन्न होती हैं। यथा : **जासु अंस उपजहिं गुनखानी। अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी॥ (श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड)।** माता सीता ही जगत की सृष्टि, उसका पालन तथा उसका संहार करती हैं, वे सभी क्लेशों को हरने वालीं, सम्पूर्ण कल्याण करने वालीं तथा प्रभु श्रीराम जी की प्राण प्यारी हैं यथा : **उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्। सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥ (श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड)।** वे साक्षात् जीवनमुक्त विदेह महाराज सीरध्वज जनक की पुत्री हैं यथा : **अथ मे कृषतः क्षेत्रं लांगलादुत्थिता ततः॥ क्षेत्रं शोधयता लब्धा नाम्ना सीतेति विश्रुता। भूतलादुत्थिता सा तु व्यवर्धत ममात्मजा॥ (वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड)।** वे अपनी भक्ति से अपनी इष्ट देवी को प्रसन्न कर लेने वालीं परम भक्तिनी हैं। यथा : **बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी॥ (श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड)।** वे इतनी कृपामयी हैं कि वे उनको नाना कष्ट देने वाली राक्षसियों पर भी कृपा कर उनका हनुमान जी से रक्षण करती हैं। यथा : **"राजसंश्रयवश्यानां कुर्वतीनां पराज्ञया॥ विधेयानां च दासीनां कः कुप्येद् वानरोत्तम। भाग्यवैषम्यदोषेण पुरस्ताद्दुष्कृतेन च॥ मयैतत् प्राप्यते सर्वं स्वकृतं ह्युपभुज्यते । मैवं वद महाबाहो दैवी ह्येषा परा गतिः॥" (वाल्मीकि रामायण, युद्धकाण्ड)।** वे परम पति परायणा सर्वश्रेष्ठा पतिव्रता स्त्री हैं। यथा : **सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं। तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित॥ (श्रीरामचरितमानस, अरण्यकाण्ड)।** वे सहस्रमुख रावण तथा मूलकासुर का नाश करने वालीं परम पराक्रमशालिनी भी हैं। यथा : **शिरांसि रावणस्याशु निमेषान्तरमात्रतः । खड्गेन तस्य चिच्छेद सहस्राणीह लीलया॥ (अद्भुत रामायण, सर्ग २३), श्रीर्मूलकासुरमर्दिनी। (आनन्द रामायण,**

मनोहरकाण्ड)। वे लक्ष्मण जी आदि महावीरों को भी युद्ध में पराजित करने वाले परम बलशाली पुत्रों की माता हैं। यथा : **दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए। लव कुस बेद पुरानन्ह गाए॥ (श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड)।** तथा वे अपने पति परमब्रह्म परमेश्वर आनन्दकन्द पुराणपुरुष पूर्णपुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम जी की प्राण प्यारी भी हैं। यथा : **वैदेही प्राणैः प्रियतरा मम। (वाल्मीकि रामायण, अरण्यकाण्ड)॥**

इस प्रकार हमने भगवती श्रीसीता जी के अनन्त गुणों में से कुछ का वर्णन करा। भगवती सीता जी के सम्पूर्ण गुणों का वर्णन करना तो स्वयं माता सरस्वती, भगवान् शेषनाग और साक्षात् विश्वेश्वर भगवान् श्रीशिव जी के लिए भी संभव नही है, फिर मुझ मूढ़ की भला क्या गिनती ?, अतः हमसे जितना बन पड़ा हमने भगवती के गुणों का उतना वर्णन करा। वास्तव में तो करने कराने वाली तो माता सीता स्वयं ही हैं, और उन्हीं भगवती ने कृपा करके इस ग्रन्थ की रचना कराई है। जब हम अपने ग्रन्थ **"श्रीरामार्चन सर्वस्वम्"** की रचना कर रहे थे उस बीच हमने श्री शिवदत्त मिश्र जी द्वारा रचित **"दुर्गार्चन पद्धति"** नामक ग्रन्थ क्रय करा। आदिशक्ति जगज्जननी जगदम्बा भगवती माता श्रीदुर्गा जी पर रचे गए उस अद्भुत ग्रन्थ को देखकर हमारे हृदय में आया कि माता सीता जी पर भी इस प्रकार का कोई ग्रन्थ मिल जाए तो बड़ा अच्छा हो। अतः हमने खोज प्रारंभ की परंतु हमें निराश होना पड़ा, फिर कुछ समय के बाद हमें **"श्रीरामभक्तिकल्पलता"** नामक ग्रन्थ में भगवती श्रीसीता जी की पूजन विधि प्राप्त हुई, उसे देखकर हमें बड़ा हर्ष हुआ तथा हमने **"श्रीरामार्चन सर्वस्वम्"** में माता सीता जी की पूजन विधि भी लिखने का निश्चय कर लिया और ऐसा करा भी। फिर जब हमारा ग्रन्थ पूर्णतः को प्राप्त होने को था उस समय हमारे हृदय में जगदम्बा की प्रेरणा हुई कि **"श्रीरामार्चन सर्वस्वम्"** में माता श्रीसीता जी की पूजन विधि लिखने के स्थान पर भगवती के ऊपर एक भिन्न ग्रन्थ की रचना करी जाए। नीति कहती है कि किसी महत्वपूर्ण विषय का निर्णय मनुष्य को अकेले नही करना चाहिए। अतः हमने इस विषय पर एक निज जन से चर्चा करी तथा उनका परामर्श माँगा, उन्हें हमारा यह विचार अति प्रिय लगा। अतः हमने भी माता सीता की ही प्रेरणा और कृपा से माता सीता पर भिन्न ग्रन्थ रचने का निश्चय कर लिया तथा भगवती माता श्रीसीता जी की

कृपा से अब यह ग्रन्थ रच गया है और सभी भक्तों को सुख देने के लिए प्रस्तुत है। ग्रन्थ में वर्णित माता श्रीसीता जी की पूजन विधि मुख्यतः से श्रीरामभक्तिकल्पलता के आधार पर दी गई है तथा अन्य ग्रन्थों का भी आधार लिया गया है। ग्रन्थ की रचना आनन्द रामायण, अद्भुत रामायण, श्रीरामचरितमानस, सत्योपाख्यान, श्रीरामभक्तिकल्पलता,श्रीरामोपासना कल्पद्रुमादि ग्रन्थों तथा प्रामाणिक आचार्यों के वचनों के आधार पर करी गई है। ग्रन्थ में माता सीता जी की पूजन विधि के साथ ही अनेकानेक सर्वोपयोगी स्तोत्र आदि भी वर्णित हैं तथा श्रीसीता नवमी की पूजन विधि भी ग्रन्थ में दी गई है। ग्रन्थ के परिशिष्ट प्रकरण में माता सीता जी द्वारा सहस्रमुख रावण तथा मूलकासुर के वध आदि की अद्भुत कथाएँ वर्णित की गई हैं। अन्य सभी कथाएँ तो पूर्ण रूप से वर्णित हैं परन्तु सहस्रमुख रावण के वध की कथा अति बृहद् होने से ग्रन्थ विस्तार के भय से हमने कुछ संक्षेप में दी है। इनके साथ ही ग्रन्थ के मध्य-मध्य में मुकुट में लगी मणि के समान अनेक दोहे आदि भी दिए गए हैं। ग्रन्थ की रचना में विशेष रूप से सहयोग देने के लिए मैं **श्री सुरज बेरकिळे जी** का अनेकानेक धन्यवाद करना चाहूँगा तथा ग्रन्थ रचना में यथा समय यथा अपेक्षित सहयोग देने के लिए मैं **श्रीअशुतोष भट्ट जी** का भी अनेकानेक धन्यवाद करना चाहूँगा। इन दोनों महानुभवों के सहयोग के कारण ही यह ग्रन्थ पूर्ण हो पाया है, माता सीता इन पर अपनी कृपा करें। अब अन्त में भगवान् श्रीराम जी की प्राणवल्लभा आदिशक्ति पराम्बा भगवती माता श्रीसीता जी से मैं यही प्रार्थना करूँगा कि उनकी जिस कृपामयी दृष्टि के पड़ने मात्र से जीव लोकपाल हो जाते हैं, वे अपनी उसी दृष्टि से मुझ दीन को भी देखें तथा ऐसी कृपा करें कि उनकी कृपा से यह ग्रन्थ सभी भक्तों को अत्यन्त प्रिय लगे तथा उन सबके लिये यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी भी सिद्ध हो॥ **नारायण..**

- हृतिक मिश्र

संवत् २०८१,

फाल्गुन शुक्ल द्वितीया

सम्पर्क सूत्र- 8303317498

श्रीसीतार्चन सर्वस्वम्

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

अनुक्रमणिका

पूजन प्रकरण	पृष्ठ संख्या
1. पूजन उपचारो की स्थापना	11
2. पूजन की तैयारी	11-12
3. श्रीसीता पूजन	12-58
• पूजन पूर्व के कर्तव्य तथा पवित्रीकरण	12-13
• आचमन तथा आसन शुद्धिकरण	13-14
• प्राणायाम	14
• देवता नमस्कार	14
• गणेश स्मरण तथा विष्णु स्मरण	14-15
• संकल्प	15-16
• दिग्रक्षण	16-17
• भैरव नमस्कार	17
• दीप प्रज्वलन तथा पूजन	17
• शङ्ख पूजन तथा प्रोक्षण	18-19
• घण्टा पूजन	19
• कलश पूजन	20-21

- आत्म पूजा 21
- श्रीगणेश पूजन 23-25
- श्रीसीता मानसिक पूजन 26
- श्रीसीता राजोपचार पूजन 29-58

उत्सव प्रकरण

1. श्रीसीता नवमी पूजन 59-84

- व्रत का सङ्कल्प 59
- मूर्ति स्थापन 59-60
- स्वस्त्ययन 60-61
- पूजन संकल्प 61-62
- दिग्रक्षण 62
- सिद्धिबुद्धिसहित श्रीमहागणपति पूजन 62-69
- कलश स्थापन 70-76
- नवग्रह पूजन 77-80
- श्रीसीता नवमी पूजन 81-84

स्तोत्र प्रकरण

1. श्रीसीतानमस्कार स्तोत्र 85

2. श्रीरत्नसिंहासनीय श्रीसीतापञ्चायतन स्तोत्र 86

3. श्रीसीता अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र 87-89

4. श्रीसीताकृपाकटाक्ष स्तोत्र 89-91

5. श्री तुलसी कृता श्रीसीता स्तुति (1) 91

6. श्री तुलसी कृता श्रीसीता स्तुति (2) 91-92

7. श्रीसीतारक्षाकवचम् 92-93

8. श्रीजानकी नवकम् 93-94

9. श्रीजानकीस्तुति 94-95

10. श्रीजानकीद्वादशनामस्तोत्रम् 95

11. श्रीजनकजाप्रपत्तिसार स्तोत्रम् 96-98

12. श्रीजानकीरक्षाकवचम् 98

13. श्रीजानकी त्रैलोक्यविजय कवचम् 99-100

14. श्रीरामवल्लभा स्तोत्रम् 101

15. श्रीसीतावतार स्तुति 101-102

परिशिष्ट प्रकरण

1. मूलकासुरमर्दिनी भगवती सीता 103-115

2. सहस्रमुखरावण संहन्त्री भगवती सीता 116-129

3. श्रीसीता माँ के श्राप 129-132

4. श्रीसीता जी को माता अनसूया जी का उपदेश 133-136

5. श्रीसीताराम की होली क्रीड़ा 137-138

चित्र सूची :

1.भगवान् श्रीगणेश जी 22

2. बालरूपिणी भगवती सीता 27

3. पतिपूजा परायणा भगवती सीता 28

॥ इति अनुक्रमणिका ॥

इस पुस्तक का सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है। इसके किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण अथवा किसी भी विधि (जैसे- इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यन्त्र में भण्डारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सके निषिद्ध है॥

पूजन प्रकरण

पूजन उपचारो की स्थापना

भगवती श्रीसीता जी को पाद्य, अर्घ्य, आचमन तथा मधुपर्क अर्पित करने के लिए अपने सामने चार पात्रों की स्थापना करे । तदनन्तर स्वर्ण चांदी या अथवा ताम्बे के अर्घ्यपात्र और पाद्यपात्र में पवित्र जल भर दे फिर अर्घ्य पात्र में चन्दन, पुष्प, यव, अक्षत, कुश का अगला भाग, तिल, दूर्वा और सरसों डाल दे। फिर पाद्य पात्र में श्यामाक, दूर्वा, कमल और अपराजिता डाल दे। इसके बाद आचमन पात्र में जायफल, लवङ्ग और कङ्कोल डाल दे। दही, मधु और घृत के संयोग से मधुपर्क बनता है। इसे काँसे के पात्र द्वारा भगवती सीता को निवेदित करना चाहिए॥

श्रीसीता माँ के लिये पाद्य आदि की यह व्यवस्था शारदा तिलक के अनुसार बताई गयी है तथा यह व्यवस्था सभी देवी-देवताओं के लिए मान्य है ॥

पूजन की तैयारी

पूजन के लिये आसीन होने से पूर्व पूजन की आवश्यक तैयारी कर लेनी चाहिए। सूती वस्त्र को तीन बार मोड़कर उससे ताजे जल को छानकर कलश में वह जल भर देना चाहिए। पूजा में जितना भी जल उपयोग करे वो सारा सूती वस्त्र को तीन बार मोड़कर उसके द्वारा छाना हुआ ताजा जल ही होना चाहिए। तदनन्तर किसी पात्र के द्वारा शङ्ख में भी जल भरकर उसको अपने दाएँ भाग में शङ्ख की जिस ओर से जल गिरता है उसके उस भाग को देवता की ओर रखते हुए उसके आधार पर स्थापित कर देना चाहिए । शङ्ख को जल में डुबाना तथा उसे पृथ्वी पर रखना ये दोनो कर्म निषिद्ध हैं। तदनन्तर शङ्ख में दूर्वा, चन्दन आदि डाल देने चाहिए तथा अपने वाम भाग में कलश को स्थापित करने के लिए अक्षत पुंज स्थापित कर देना चाहिए

तथा पूजन में उपयोगी अक्षतों को भी तीन बार धोकर उनको कुमकुम के द्वारा रंग लेना चाहिए। फिर अपनी बायीं ओर जल भरा कलश, घण्टा तथा देवता के सामने धूपदानी स्थापित करके एक दीपक घृत का हो तो अपने दाईं ओर और यदि तेल का हो तो अपनी बायीं ओर स्थापित कर लेना चाहिए तथा सामने अथवा दाई ओर कुंकुम और कपूर के साथ घिसा गाढ़ा चन्दन तथा पुष्प आदि रख ले। पुष्पों को हाथ में तथा चन्दन ताम्र पात्र में न रखे और पूजन में जल को रखने के लिए काँस्य पात्र का उपयोग न करें। काँसे के पात्र में रखे हुए जल का स्नान तथा देव पूजन में उपयोग करना वर्जित है, अतः पूजा में ताम्बे आदि के पात्र ही उपयोग करें॥

॥ इति श्री ॥

श्रीसीता पूजन

पूजन पूर्व के कर्तव्य

सर्वप्रथम तो स्नान करके बिना सिले वस्त्र धारण कर जल से अपने चरण धोकर पूजन कक्ष में प्रवेश करे। तत्पश्चात् पूजा की सभी सामग्रियों को यथास्थान रखकर कुश अथवा ऊन के आसन पर पद्मासन, सिद्धासन अथवा सुखासन से बैठ जाए तथा निम्न मन्त्र से शिखा बाँध ले :

“चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे”

कभी भी बिना आसन पर बैठे पूजन न करे क्योंकि श्रीकालिका पुराण

के अनुसार व्यक्ति को कभी भी खड़े रहकर पूजन नही करना चाहिए।

निम्न मन्त्र उच्चारित कर फिर आसन बिछाकर उसपर बैठना चाहिए :

विष्णुना त्वं धृता पृथ्वि ! सर्वे लोकास्त्वया धृता: ।

अतः सर्वं सहे देवि वस्तुं मे स्थानमुत्तमम् ॥

अब तीन कुशों से निर्मित पवित्री बाई अनामिका के तथा दो कुशों से निर्मित पवित्री दाहिनी अनामिका के मूल में धारण कर ले। यदि पवित्री उपलब्ध न हो सके तो स्वर्ण की अँगूठी धारण कर सकते हैं। तत्पश्चात् अपने दक्षिण हस्त में जल लेकर पवित्रीकरण मन्त्र का उच्चारण करे :

पवित्रीकरण मन्त्र-

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:॥

अब अपनी मध्यमा तथा अनामिका अँगुली के द्वारा उस जल को **पुण्डरीकाक्ष पुनातुः, पुण्डरीकाक्ष पुनातुः, पुण्डरीकाक्ष पुनातुः** इन मन्त्रों का एक-एक बार उच्चारण करते हुए कुल तीन बार अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर छिड़क ले।

अब निम्न मन्त्रों के द्वारा 3 बार आचमन करे :

केशवाय नमः । नारायणाय नमः । माधवाय नमः ।

अब **"गोविंदाय नम:"** इस मन्त्र का उच्चारण कर अँगूठे के मूल भाग के द्वारा ओष्ठों को दो बार पोंछ ले तत्पश्चात् **"हृषीकेशाय नम:"** इस मन्त्र के द्वारा हस्त प्रक्षालन करके फिर अपने दक्षिण अंगुष्ठ के द्वारा अपनी नाक का, अपने नेत्रों का तथा अन्त में अपने दोनों कर्णों का स्पर्श करे।

अब हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़कर जल छोड़ दे-

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि:, सुतलं छन्द:, कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः ॥

आसन शुद्धिकरण-

अब दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे तत्पश्चात्

उस जल को अंगुलियों के मध्य के छिद्रों से आसन पर छिड़के :

पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

प्राणायाम-

अब मन में **श्रीराम, श्रीराम** ऐसा उच्चारण करते हुए तथा साथ में श्रीसीतालक्ष्मण जी के सहित भगवान् श्रीरामचन्द्र जी के दिव्य स्वरूप का ध्यान करते हुए तीन प्राणायाम करे ॥

अब निम्न मन्त्रों से देवताओं को नमस्कार करके गणेश स्मरण तथा विष्णु स्मरण करे-

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः । श्रीवाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । श्रीशचीपुरन्दराभ्यां नमः । श्रीमातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । श्रीइष्टदेवताभ्यो नमः। श्रीकुलदेवताभ्यो नमः । श्रीग्रामदेवताभ्यो नमः। श्रीवास्तुदेवताभ्यो नमः। श्रीस्थानदेवताभ्यो नमः । श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेताय श्रीरामचन्द्राय नमः ।

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।

एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

श्रीगणेश स्मरण-

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

अब आगे वर्णित मन्त्रों का पाठ कर भगवान् विष्णु का स्मरण करे।

श्रीविष्णु स्मरण-

श्रीविष्णवे नमः, श्रीविष्णवे नमः, श्रीविष्णवे नमः ।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

श्रीविष्णवे नमस्तुभ्यम् ॥

सङ्कल्प-

अब हाथ में जल, पुष्प तथा अक्षत लेकर पूजन का सङ्कल्प करे क्योंकि सङ्कल्प विहीन पूजन निष्फल होता है। अगर बस भगवती की प्रसन्नता के लिए पूजन करना है तो निष्काम और अगर सांसारिक सुखों की प्राप्ति की इच्छा है तो सकाम संकल्प करना चाहिए। पूजन का संकल्प कर लेने के उपरान्त हाथ में लिए हुए जल आदि को किसी पात्र में छोड़ देना चाहिए ॥

निष्काम सङ्कल्प-

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीय-परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे ..नगरे / ग्रामे / क्षेत्रे[1] ..नामसंवत्सरे[2] ..मासे[3] शुक्ल / कृष्णपक्षे ..तिथौ[4] ..वासरे[5] ..गोत्र:[6] ..शर्माऽहं /वर्माऽहं /गुप्तोऽहं/ दासोऽहं/देवीदाऽहम्/दासीदाऽहम्[7] भगवतीसीताप्रीत्यर्थं सीतापूजनं करिष्ये ।

सकाम सङ्कल्प-

शर्माऽहं आदि तक पूर्ववत् बोलकर फिर आगे लिखे को बोले **"मम आत्मनः सपरिवारस्य सकुटुम्बस्य ज्ञाताज्ञातसकलपापक्षयार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं**

क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं आधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षफलप्राप्त्यर्थं नित्यकल्याणलाभाय भगवतीसीताप्रीत्यर्थं च सीतापूजनं करिष्ये ।"

पुनः हाथ में जल ग्रहण कर निम्न संकल्प करे :

तत्रादौ दिग्रक्षणं दीपशंखघंटापूजनं कलशार्चनं श्रीगणेश पूजनं च करिष्ये ।

---

1. यदि किसी तीर्थ में पूजन कर रहे हों तो उस तीर्थ का नाम, नगर में हों तो उस नगर का नाम और गाँव में हो तो उस गाँव का नाम उच्चारित करे ।

2. जो संवत्सर चल रहा हो उसका नाम बोले ।

3. चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन । इनमें से जो भी मास चल रहा हो उसका नाम उच्चारित करे।

4. प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावास्या तथा पूर्णिमा । इनमें से जो भी तिथि चल रही हो उसका नाम बोले।

5. रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि । इनमें से जो भी दिन हो उसका नाम उच्चारित करे ।

6. अपने गोत्र का उच्चारण करे।

7. ब्राह्मण अपने नाम के अन्त में शर्मा, क्षत्रिय वर्मा, वैश्य गुप्त तथा शूद्र दास बोलें। इसी प्रकार ब्राह्मण तथा क्षत्रिय वर्ण की स्त्रियाँ देवीदाऽहम् तथा वैश्य और शूद्र वर्ण की स्त्रियाँ दासीदाऽहम् बोलें॥

दिग्रक्षण-

बाएँ हाथ में पीली सरसों लेकर उसे दाएं हाथ से आच्छादित करके आगे वर्णित मन्त्रों का पाठ करे :

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥

भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः । ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पूजाकर्म करोम्यहम् ॥

अब उस अभिमन्त्रित सरसों को सभी दिशाओं में छिड़ककर तीन बार बाईं एड़ी द्वारा पृथ्वी का ताड़न करे फिर वाम हस्त में जल लेकर दाहिनी अनामिका द्वारा उसका नेत्रों से स्पर्श कराए ॥

श्री भैरव नमस्कार-

अब निम्न मन्त्र से भैरव जी को नमस्कार कर उनसे पूजन करने की आज्ञा माँगे :

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

दीप प्रज्वलन तथा पूजन-

अब गणपति का स्मरण कर एक दीपक अगर घी का हो तो अपने दाहिनी ओर और तेल का हो तो बाईं ओर किसी आधार पर रखकर प्रज्वलित करके निम्न मंत्र से दीपस्थ देव की पूजा करे :

दीपस्थदेवतायै नमः । आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्न मन्त्र के द्वारा दीप की प्रार्थना करे :

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् । यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव ॥

दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन दीपः प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

अब शङ्ख पूजन करे।

शङ्ख पूजन-

शङ्ख में चन्दन, दूर्वा, तुलसी तथा पुष्प डालकर उसे पवित्र जल के द्वारा भर दे।

इसके बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण कर शङ्ख में तीर्थों का आवाहन करे

तत्पश्चात् दक्षिण हस्त द्वारा अंकुश मुद्रा का प्रदर्शन करे :

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ! नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

अब निम्न मन्त्रों से शङ्खस्थ देवता का पूजन करके उन्हे नमस्कार करे :

शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम् ।

पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गङ्गा सरस्वती ॥

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया ।

शङ्खे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥

शङ्खस्थ देवतायै नमः। आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे :

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृत: करे । नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य ! नमोऽस्तु ते ॥

अब धेनु मुद्रा का प्रदर्शन कर शङ्ख, चक्र तथा गरुड़ मुद्रा

प्रदर्शित करे तदुपरान्त परमीकरण मुद्रा का प्रदर्शन करे ।

अब दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन शङ्खः प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

अब प्रोक्षण करें।

प्रोक्षण-

अब शङ्ख के जल को निम्न मन्त्र का उच्चारण कर कुश के द्वारा

तीन बार अपने ऊपर, पूजन सामग्री पर तथा धरती पर छिड़के।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:॥

अब घण्टे का पूजन करे।

घण्टा पूजन-

अब निम्न मन्त्र के द्वारा घण्टे की प्रार्थना करे तत्पश्चात्

घण्टे का वादन कर उसे उसके स्थान पर स्थापित कर दे :

सर्ववाद्यमयीघण्टायै नमः ॥

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम् । कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ ॥

अब निम्न मन्त्र से गरुड़ जी का आवाहन कर उनका

पूजन कर उन्हें नमस्कार करके गरुड़ मुद्रा प्रदर्शित करे।

घण्टास्थ गरुडाय नमः । आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन घण्टास्थ गरुड: प्रीयतां**

यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

अब कलश पूजन करें।

कलश पूजन-

अब अपने वाम भाग में स्थापित करे हुए कलश में आगे वर्णित मन्त्र से

वरुण देव का आवाहन कर उनका पूजन करे तत्पश्चात् उन्हें नमस्कार करे।

मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन वरुण: प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

अब दक्षिण हस्त की अनामिका अंगुली के द्वारा कलश का स्पर्श करते

हुए आगे वर्णित मन्त्रों को उच्चारित कर कलश में तीर्थों आदि का आवाहन करे :

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः । अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ! नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

अब अक्षत-पुष्पों से निम्न वर्णित विधि के अनुसार पूजन करे :

पूर्वे ऋग्वेदाय नम:, दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः, पश्चिमे सामवेदाय नमः,

उत्तरे अथर्वणवेदाय नमः, कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः ॥

अब निम्न मन्त्र से सभी आवाहित देवताओं आदि का पूजन कर उन्हें नमस्कार करे :

गायत्र्यादिभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्नलिखित मन्त्रों का पाठ कर प्रार्थना करे :

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ ! विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमं पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव !

सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

अब कुम्भ मुद्रा का प्रदर्शन करे तत्पश्चात् निम्न वर्णित विधि से आत्म पूजा करे ॥

आत्मपूजा-

अब हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर उन अक्षतों को स्वयं पर छोड़े :

देहो देवालयः प्रोक्तः जीवो देवः सनातनः । त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ॥

आत्मने नमः । आत्मपूजां समर्पयामि ॥

॥ इति श्री ॥

श्रीगणेश पूजन

ध्यान-

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं

प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् ।

दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं

वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः । ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से गणेश जी का ध्यान कर एक पुष्प अर्पित करे।

आवाहन-

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।

माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥

सिद्धिबुद्धिसहितं श्रीगणेशमावाहयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से गणेश जी का आवाहन कर एक पुष्प अर्पित करे।

आसन-

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम् । स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित ! ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः । आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥

आसन के लिए पाँच पुष्प समर्पित करे।

अब गणेश जी को चन्दन अर्पित करे।

चन्दन-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। चन्दनं समर्पयामि ॥

पुष्प तथा पुष्पमाला-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ॥

दूर्वा-

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि॥

सिन्दूर-

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। सिन्दूरं समर्पयामि ॥

धूप-

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। धूपमाघ्रापयामि ॥

दीप-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। दीपं दर्शयामि ॥

प्रभु के आगे 5 या 7 बार दिया घुमाकर उन्हे दीप दिखाए फिर अगर दिया घी का है तो प्रभु के दाई ओर और अगर तेल का है तो बाई ओर रख दे और फिर जल से अपने हाथ धुल ले॥

नैवेद्य-

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि पानीय जलं च समर्पयामि ॥

प्रभु को नैवेद्य निवेदित कर उनके पीने के लिए जल समर्पित करे ॥

॥ इति श्रीगणेश पूजन विधि ॥

श्रीगणेश स्तुति

गाइये गनपति जगबंदन । संकर-सुवन भवानी-नंदन ॥ १ ॥

सिद्धि-सदन, गज-बदन, बिनायक । कृपा-सिंधु, सुंदर, सब-लायक ॥ २ ॥

मोदक-प्रिय, मुद-मंगल-दाता । बिद्या-बारिधि, बुद्धि-बिधाता ॥ ३ ॥

माँगत तुलसिदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥ ४ ॥

भावार्थ- सम्पूर्ण जगत् के वन्दनीय, गणों के स्वामी श्री गणेश जी का गुणगान कीजिये, जो श्रीशिव-पार्वती जी के पुत्र और उनको प्रसन्न करनेवाले हैं। जो सिद्धियों के स्थान हैं, जिनका हाथी का-सा मुख है, जो समस्त विघ्नों के नायक हैं, कृपा के समुद्र हैं, सुन्दर हैं, सब प्रकार से योग्य हैं। जिन्हें मोदक बहुत प्रिय है, जो आनन्द और कल्याण को देनेवाले हैं, विद्या के अथाह सागर हैं, बुद्धि के विधाता हैं। ऐसे भगवान् श्रीगणेश जी से यह तुलसीदास हाथ जोड़कर केवल यही वर माँगता है कि मेरे मन मन्दिर में भगवान् श्रीसीताराम जी सर्वदा निवास करें॥

श्रीसीता मानसिक पूजन

ध्यान-

नीलाम्भोजदलाभिरामनयनां नीलाम्बरालङ्कृतां
गौराङ्गीं शरदिन्दुसुन्दरमुखीं विस्मेरबिम्बाधराम् ।
कारुण्यामृतवर्षिणीं हरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां
ध्यायेत् सर्वजनेप्सितार्थफलदां रामप्रियां जानकीम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि ।
साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि ।
साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि ।
साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै रं वह्न्यात्मकं दीपं परिकल्पयामि ।
साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै सर्वात्मकं नमस्कारान् परिकल्पयामि ॥

॥ इति श्रीसीता मानसिक पूजन विधि ॥

बालरूपिणी भगवती सीता

पतिपूजा पारायणा भगवती सीता

श्रीसीता राजोपचार पूजन

ध्यान-

सिंहासनसमारूढां शुक्लचन्दनचर्चिताम् । किरीटाङ्गदकेयूरकटकादिविभूषणैः ॥

भूषितामखिलैर्मन्दस्मिताञ्चितमुखाम्बुजाम् । ऊर्मिलाकरपाथोजधृतश्वेतातपत्रकाम् ॥

माण्डवी श्रुतकीर्तिभ्यां वीज्यमानप्रकीर्णकाम् । वनदेवतया चापि विजयाभिधया पुरः ॥

स्थितया रचिताञ्जल्या विनयेनोपसेविताम् । राजराजेश्वरीं देवीं ध्यायामि जनकात्मजाम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से सीता जी का ध्यान कर एक पुष्प अर्पित करे।

आवाहन-

आवाहये त्वां पूजार्थं जनकेश्वरपुत्रिके । भर्तृपार्श्वगताऽपि त्वमत्र सन्निहिता भव ॥

साङ्गां सपरिवारां सीतामावाहयामि, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से सीता जी का आवाहन कर एक पुष्प अर्पित करे।

आसन-

सार्वभौमप्रिये मातः नानारत्नविचित्रितम् । आसनं फणिभिर्दिव्यैः धृतमध्यास्यतां त्वया ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से आसान के लिए पाँच पुष्पों को अर्पित करे।

पाद्य-

सुवर्णपात्रे निक्षिप्तमानीतं सरयूजलम् । मम पावनताहेतोः कुरु पादावनेजनम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । पाद्यं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता के चरणों में जल अर्पित करे।

अर्घ्य-

रविमण्डलमध्यस्थहिरण्मयवपुःप्रिये । अर्घ्यं ददामि ते मातर्मल्लिकावासितं जलम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता के हाथों पर जल अर्पित करे।

आचमन-

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् । तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । आचमनं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को आचमन अर्पित करे।

मधुपर्क-

कांस्ये कांस्येन पिहितो दधिमध्वाज्यसंयुतः । मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । मधुपर्कं समर्पयामि,

मधुपर्कान्ते आचमनं च समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को मधुपर्क समर्पित कर आचमन अर्पित करे।

स्नान-

सरयूयमुनागङ्गागौतमीसह्यजादितः । नीताभिर्मन्त्रपूताभिरद्भिः स्नाहि महीसुते ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । स्नानं समर्पयामि, स्नानान्ते आचमनं च समर्पयामि॥

इस मन्त्र से माता को स्नान कराकर आचमन अर्पित करे।

दुग्ध स्नान-

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । पय: स्नानं समर्पयामि,

पय: स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

इस मन्त्र से माता को गो दुग्ध से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराए।

दधि स्नान-

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देवि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । दधिस्नानं समर्पयामि,

दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को गो दधि से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराए।

घृत स्नान-

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । घृतस्नानं समर्पयामि,

घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को गो घृत से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराए।

मधु स्नान-

पुष्परेणुसमुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । मधुस्नानं समर्पयामि,

मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को मधु से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराए।

शर्करा स्नान-

इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् । मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । शर्करास्नानं समर्पयामि,

शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को महीन पीसी हुई गुड़ से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराए।

पञ्चामृत स्नान-

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्। पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि,

पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को पञ्चामृत से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराए।

उद्वर्तन स्नान-

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् । उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि,

उद्वर्तनस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को उबटन लगाकर शुद्ध जल से स्नान कराए।

गन्धोदक स्नान-

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुमिश्रितम् । सलिलं देवदेवेशि शुद्धस्नानाय गृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । गन्धोदकस्नानं समर्पयामि,

गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को चन्दन-अगरु मिश्रित जल से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराए।

अभिषेक-

श्री स्तोत्रम्

इन्द्र उवाच-

नमस्ये सर्वलोकानां जननीमब्धिसम्भवाम् । श्रियमुन्निद्रपद्माक्षीं विष्णुवक्षःस्थलस्थिताम् ॥

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपावनि ।

संध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती ॥

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने । आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्तिफलदायिनी ॥

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च । सौम्या सौम्यं जगद्रूपं त्वयैतद्देवि पूरितम् ॥

का त्वन्या त्वामृते देवि सर्वयज्ञमयं वपुः । अध्यास्ते देवदेवस्य योगिचिन्त्यं गदाभृतः ॥

त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम् । विनष्टप्रायमभवत् त्वयेदानीं समेधितम् ॥

दाराः पुत्रास्तथागारं सुहृद्धान्यधनादिकम् । भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणान्नृणाम् ॥

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम् । देवि त्वद्दृष्टिदृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम् ॥

त्वमम्बा सर्वभूतानां देवदेवो हरिः पिता । त्वयैतद् विष्णुना चाम्ब जगद् व्याप्तं चराचरम् ॥

मानं कोषं तथा कोष्ठं मा गृहं मा परिच्छदम् । मा शरीरं कलत्रं च त्यजेथाः सर्वपावनि ॥

मा पुत्रान् मा सुहृद्वर्गान् मा पशून् मा विभूषणम् ।

त्यजेथा मम देवस्य विष्णोर्वक्षःस्थलालये ॥

सत्येन समशौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः। त्यज्यन्ते ते नराः सद्यः संत्यक्ता ये त्वयामले ॥

त्वयावलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः । कुलैश्वर्यैश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि ॥

स श्लाघ्यः स गुणी धन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान् ।

स शूरः स च विक्रान्तो यस्त्वया देवि वीक्षितः ॥

सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकला गुणाः ।

पराङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे ॥

न ते वर्णयितुं शक्ता गुणान् जिह्वापि वेधसः। प्रसीद देवि पद्माक्षि मास्मांस्त्याक्षीः कदाचन॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । अभिषेकं समर्पयामि ॥

शुद्धोदक स्नान-

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम् ।

समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को शुद्ध जल से स्नान कराए।

वस्त्र-

अमूल्यरत्नखचितममूल्यं सूक्ष्ममेव च । वह्निशुद्धं निर्मलं च वसनं देवि गृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः। वस्त्रं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को वस्त्र अर्पित करे।

कञ्चुकी-

तव कञ्चुलिकां रत्नखचितां मातरर्पये । पापकञ्चुकनिर्मोक्षं फलं मे देहि जानकि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । कञ्चुकीं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को कञ्चुकी अर्पित करे।

पादुका-

नवरत्नयुते मयाऽर्पिते कमनीये तपनीयपादुके ।

सविलासमिदं पदद्वयं कृपया देवि तयोर्निधीयताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । पादुके समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता के लिए दो पादुकाएँ अर्पित करे।

केशपाशसंस्करण-

बहुभिरगरुधूपैः सादरं धूपयित्वा भगवति तव केशान् कङ्कतैर्मार्जयित्वा ।

सुरभिभिररविन्दैश्चम्पकैश्चार्चयित्वा झटिति कनकसूत्रैर्जूटयन् वेष्टयामि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । केशपाशसंस्करणं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को कंघी अर्पित करे।

सौवीराञ्जन-

सौवीराञ्जनमिदमम्ब चक्षुषोस्ते विन्यस्तं कनकशलाकया मया यत् ।

तन्नूनं मलिनमपि त्वदक्षिसङ्गात् ब्रह्मेन्द्राद्यभिलषणीयतामियाय ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । सौवीराञ्जनं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को सुरमा अर्पित करे।

कङ्कण-

माणिक्यमुक्तामणिखण्डयुक्ते सुवर्णकारेण च संस्कृते ये ।

ते किङ्किणीभिः स्वरिते सुवर्णे मयाऽर्पिते देवि ! गृहाण कङ्कणे ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । कङ्कणे समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को कङ्कण अर्पित करे।

कुण्डल-

ययोः शुभान्याखचितानि मातर्माणिक्यखण्डानि सुशोभितानि ।

ताटङ्कयुग्मे कनकस्य कृत्वा मयाऽर्पिते देवि ! गृहाण चैते ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । कुण्डले समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को दो कुण्डल अर्पित करे।

हार-

मातस्त्वदर्थं मणिमौक्तिकाभिः कृतं मनोज्ञं कलकण्ठभूषणम् ।

मयैव कण्ठे तव देवि ! चाऽर्पितं ग्रैवेयकं नाम गृहाण भूषणम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । ग्रैवेयकं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को हार अर्पित करे।

अङ्गद-

हेम्ना कृतं ह्यङ्गदयुग्मकं च मनोहरं सुन्दरचित्रयुक्तम् ।

बाह्वोर्गृहाणाऽऽशु मयाऽर्पितं ते मनोज्ञमाभूषणभूषणोत्तमम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । अङ्गदे समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को दो अङ्गद अर्पित करे।

अङ्गुलीयकम्-

प्रवालगोमेदमयैश्च रत्नैः कृतां तथा हेममयां मनोहराम् ।

तस्यां कुरु त्वं मुखवीक्षणं च गृहाण देव्याङ्गुलिमुद्रिकां च ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः। अङ्गुलिमुद्रिकां समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को अँगूठी अर्पित करे।

कटिभूषण-

काञ्चीं शुभां हाटकनिर्मितां मया त्रैलोक्यमातः कटिभूषणाय ।

दत्तां यथेमां त्वमजे च धत्से ह्युद्धर्तुमस्मान् वह मातृगर्भात् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः। काञ्चीं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को कटिभूषण अर्पित करे।

नूपुर-

सुसुन्दरे हारकनिर्मिते द्वे पादाङ्गदे नूपुरनामधेये ।

गृहाण मातः पदयोः प्रदत्ते सुकिङ्किणीभिश्च विराजिते ते ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । नूपुरे समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को दो नूपुर अर्पित करे।

मुकुट-

मातस्तवेमं मुकुटं हरिन्मणिप्रवालमुक्तामणिभिर्विराजितम् ।

गारुत्मतैश्चाऽपि मनोहरं कृतं गृहाण मातः शिरसो विभूषणम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । मुकुटं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को मुकुट अर्पित करे।

चन्दन-

अनसूयाङ्गरागेण वासितेऽम्ब तवाङ्गके । कर्पूरवासितं लिम्प सितं मलयजद्रवम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः। चन्दनं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को सफेद चन्दन अर्पित करे।

कस्तूरी तिलक-

कस्तूरीतिलकं फाले कुरु मैथिलि मत्कृते । सकलङ्केन्दुशोभां ते तेन धत्तां मुखाम्बुजम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । कस्तूरी तिलकं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को कस्तूरी का तिलक लगाए।

सौभाग्य सूत्र-

सौभाग्यसूत्रं वरदे ! सुवर्णमणिसंयुतम् । कण्ठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को सौभाग्यसूत्र अर्पित करे।

हरिद्रा-

हरिद्रारञ्जिता देवि ! सुख सौभाग्यदायिनि । तस्मात्त्वं पूज्याम्यत्र सुखं शान्तिं प्रयच्छ मे॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । हरिद्रां समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को हल्दी अर्पित करे।

कुंकुम-

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्। कुङ्कमेनाऽर्चिता देवि ! प्रसीद परमेश्वरि॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः। कुङ्कुमं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को कुंकुम अर्पित करे।

अक्षत-

अक्षतांश्च सुरेश्रेष्ठे कुंकुमाक्तान् सुशोभितान्। मया निवेदितान् भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । अक्षतान् समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को अक्षत अर्पित करे।

काजल-

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे ! शान्तिकारकम्। कर्पूरज्योति समुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ! ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । कज्जलं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को काजल अर्पित करे।

अब भगवती को सुगन्धित तेल तथा इत्र अर्पित करे।

सुगन्धित तेल तथा इत्र-

जननि चम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः ।

सुरभिगन्धमिदं च चतुःसमं सपदि सर्वमिदं प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से माता को सुगंधित तेल तथा इत्र अर्पित करे।

सिन्दूर-

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्। पूजिताऽसि मया देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । सिन्दूरं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को सिन्दूर अर्पित करे।

पुष्पमाला-

पद्मशङ्खजपुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रताम् । पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ! ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । पुष्पमालां समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को पुष्पमाला अर्पित करे।

पुष्पाणि-

मालतीमाधवीमल्ली केतकीजातिपङ्कजैः । पूजये पुरुहूतादिपूज्यां त्वां पृथिवीसुते ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः। पुष्पाणि समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को पुष्पों को अर्पित करे।

अब भगवती श्रीसीता माता जी को तुलसी अर्पित करे।

तुलसी-

तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम् । भवमोक्षप्रदां रम्यामर्पयामि हरिप्रियाम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । तुलसी दलं तुलसीमञ्जरीं च समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को तुलसी दल तथा तुलसी मंजरी अर्पित करे।

दूर्वा-

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् । आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को दूर्वा अर्पित करे।

अब तुलसी दल, कमल आदि से भगवती का अंग पूजन तथा गुण पूजन करे।

अङ्ग पूजन-

1. पाकशासनपूजितायै नमः, पादौ पूजयामि ।

2. पार्थिवव्यञ्जनान्वितायै नमः, पादरेखाः पूजयामि ।

3. पल्लवमृदुपदायै नमः, पादतलं पूजयामि ।

4. प्रणतहार्दतमोऽपहायै नमः, पादनखान् पूजयामि ।

5. गुणिकृतालयायै नमः, गुल्फौ पूजयामि ।

6. गङ्गाप्रसादनपरायै नमः, जङ्घायुगलं पूजयामि ।

7. आजानशुद्धचरितेड्यायै नमः, जानुनी पूजयामि ।

8. उरुविक्रमपतिनन्दितायै नमः, ऊरू पूजयामि ।

9. घटिताशरपतिमृत्यवे नमः, कटिं पूजयामि ।

10 आकाशमध्यायै नमः, मध्यं भागं पूजयामि ।

11.ब्रह्माण्डकोटिनिलयोदरायै नमः, उदरं पूजयामि ।

12. पद्मनाभप्रियसख्यै नमः, नाभिं पूजयामि ।

13. रामार्पितहृदयायै नमः, रोमावलिं पूजयामि।

14. अश्वस्तनिकमुनिमोक्षदायै नमः, स्तनौ पूजयामि।

15. कण्ठालंबितखरारातये नमः, बाहू पूजयामि ।

16. जटायुर्जीवितप्रदायै नमः, करतले पूजयामि ।

17. कण्ठजितकोकिलायै नमः, कण्ठं पूजयामि ।

18. मुखविजितचन्द्रायै नमः, मुखं पूजयामि ।

19. श्रितजनापसारितकृतान्तायै नमः, दन्तान् पूजयामि।

20. शिष्टौघसन्नुतायै नमः, ओष्ठौ पूजयामि ।

21. भक्तजनहृदयकृतवासायै नमः, नासां पूजयामि।

22. श्रीरामचुम्बितमुख्यै नमः, कपोलौ पूजयामि।

23. त्रिभुवननेत्रैय नमः, नेत्रे पूजयामि ।

24. शिवचापारोपणपणायै नमः, भ्रूचापौ पूजयामि ।

25. विश्राणितसर्वकर्मफलायै नमः, फालं पूजयामि ।

26. दशशिरश्शिरःकर्तनप्रियायै नमः, शिरः पूजयामि ।

27. वाणीपतिवन्दितायै नमः, वेणीं पूजयामि ।

28. गर्वरहितायै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि ॥

गुण पूजन-

1. पालितपरमापराधिकायै नमः, कृपालहरीं पूजयामि

2. हनूमतोरक्षितराक्षसीकायै नमः, दीनशरण्यतां पूजयामि ।

3. तृणान्तरितरावणायै नमः, पातिव्रत्यधर्मं पूजयामि ।

4. अनभ्युपगतहनुमत्स्पर्शायै नमः, भर्तृभक्तिं पूजयामि ।

5. जन्मान्तरकृतपापानुवादिन्यै नमः, मानुषभावानुवर्तनं पूजयामि ।

6. दुःखेऽपि शुचिस्मितायै नमः, नित्यप्रसन्नतां पूजयामि ।

7. परुषवचोधिक्कृतलक्ष्मणायै नमः, देवकार्यधुरन्धरतां पूजयामि ।

8. कृतरावणहितोपदेशायै नमः, शत्रोरपिहितपरतां पूजयामि ।

9. गर्वरहितायै नमः, सर्वान् गुणान् पूजयामि ॥

पुष्प पूजन-

1. कमलासनप्रसुवे नमः, कमलं समर्पयामि ।

2. कुवलयाधिपवल्लभायै नमः, कुवलयं समर्पयामि ।

3. हेमवल्लीसमाङ्गकायै नमः, मल्ली कुसुमं समर्पयामि ।

4. ख्यातिविलसितायै नमः, जाति पुष्पं समर्पयामि ।

5. श्रितकंपहरायै नमः, चंपक पुष्पं समर्पयामि ।

6. अतुल प्रभावायै नमः, तुलसी मञ्जरीं समर्पयामि ।

7. पर्वामृतांशुवदनायै नमः, सर्वाणि पुष्पाणि समर्पयामि ॥

श्रीसीताष्टोत्तरशतनाम पूजन-

माता का एक-एक नाम उच्चारित करते हुए उन्हें तुलसी दल अर्पित कर भगवती सीता के एक सौ आठ नामों द्वारा उनका पूजन करे।

१. श्री श्रीसीतायै नमः । २. श्री जानक्यै नमः । ३. श्री देव्यै नमः ।

४. श्री वैदेह्यै नमः । ५. श्री राघवप्रियायै नमः । ६. श्री रमायै नमः।

७. श्री अवनिसुतायै नमः । ८. श्री रामायै नमः । ९. श्री राक्षसान्तप्रकारिण्यै नमः ।

१०. श्री रत्नगुप्तायै नमः । ११. श्री मातुलुङ्गयै नमः । १२. श्री मैथिल्यै नमः ।

१३. श्री भक्ततोषदायै नमः । १४. श्री पद्माक्षजायै नमः । १५. श्री कञ्जनेत्रायै नमः ।

१६. श्री स्मितास्यायै नमः । १७. श्री नूपुरस्वनायै नमः । १८. श्री वैकुण्ठनिलयायै नमः ।

१९. श्री मायै नमः। २०. श्री श्रियै नमः । २१. श्री मुक्तिदायै नमः ।

२२. श्री कामपूरण्यै नमः । २३. श्री नृपात्मजायै नमः । २४. श्री हेमवर्णायै नमः ।

२५. श्री मृदुलाङ्गयै नमः । २६. श्री सुभाषिण्यै नमः । २७. श्री कुशाम्बिकायै नमः ।

२८. श्री दिव्यदायै नमः । २९. श्री लवमात्रे नमः । ३०. श्री मनोहरायै नमः ।

३१. श्री हनुमद्वन्दितपदायै नमः । ३२. श्री मुग्धायै नमः । ३३. श्री केयूरधारिण्यै नमः ।

३४. श्री अशोकवनमध्यस्थायै नमः। ३५. श्री रावणादिकमोहिन्यै नमः।

३६. श्री विमानसंस्थितायै नमः। ३७. श्री सुभ्रुवे नमः । ३८. श्री सुकेश्यै नमः ।

३९. श्री रशनान्वितायै नमः । ४०. श्री रजोरूपायै नमः । ४१. श्री सत्त्वरूपायै नमः ।

४२. श्री तामस्यै नमः । ४३. श्री वह्निवासिन्यै नमः ४४. श्री हेममृगासक्तचित्तायै नमः ।

४५. श्री वाल्मीक्याश्रमवासिन्यै नमः । ४६. श्री पतिव्रतायै नमः ।

४७. श्री महामायायै नमः । ४८. श्री पीतकौशेयवासिन्यै नमः ।

४९. श्री मृगनेत्रायै नमः । ५०. श्री बिम्बोष्ठ्यै नमः । ५१. श्री धनुर्विद्याविशारदायै नमः ।

५२. श्री सौम्यरूपायै नमः । ५३. श्री दशरथस्नुषायै नमः । ५४. श्री चामरवीजितायै नमः ।

५५. श्री सुमेधादुहित्रे नमः । ५६. श्री दिव्यरूपायै नमः । ५७. श्री त्रैलोक्यपालिन्यै नमः ।

५८. श्री अन्नपूर्णायै नमः । ५९. श्री महालक्ष्म्यै नमः । ६०. श्री धियै नमः ।

६१. श्री लज्जायै नमः । ६२. श्री सरस्वत्यै नमः । ६३. श्री शान्त्यै नमः ।

६४. श्री पुष्ट्यै नमः । ६५. श्री क्षमायै नमः । ६६. श्री गौर्यै नमः ।

६७. श्री प्रभायै नमः । ६८. श्री अयोध्यानिवासिन्यै नमः । ६९. श्री वसन्तशीतलायै नमः ।

७०. श्री गौर्यै नमः । ७१. श्री स्नानसन्तुष्टमानसायै नमः ।

७२. श्री रमानामभद्रसंस्थायै नमः । ७३. श्री हेमकुम्भपयोधरायै नमः ।

७४. श्री सुरार्चितायै नमः । ७५. श्री धृत्यै नमः ।

७६. श्री कान्त्यै नमः । ७७. श्री स्मृत्यै नमः । ७८. श्री मेधायै नमः ।

७९. श्री विभावर्यै नमः । ८०. श्री लघूदरायै नमः । ८१. श्री वरारोहायै नमः ।

८२. श्री हेमकङ्कणमण्डितायै नमः । ८३. श्री द्विजपत्न्यर्पितनिजभूषायै नमः ।

८४. श्री राघवतोषिण्यै नमः। ८५. श्री श्रीरामसेवनरतायै नमः ।

८६. श्री रत्नताटङ्कधारिण्यै नमः । ८७. श्री रामवामाङ्गसंस्थायै नमः ।

८८. श्री रामचन्द्रैकरञ्जिन्यै नमः । ८९. श्री सरयूजलसंक्रीडाकारिण्यै नमः ।

९०. श्री राममोहिन्यै नमः । ९१. श्री सुवर्णतुलितायै नमः । ९२. श्री पुण्यायै नमः ।

९३. श्री पुण्यकीर्त्यै नमः । ९४. श्री कलावत्यै नमः । ९५. श्री कलकण्ठायै नमः ।

९६. श्री कम्बुकण्ठायै नमः । ९७. श्री रम्भोर्वै नमः । ९८. श्री गजगामिन्यै नमः ।

९९. श्री रामार्पितमनायै नमः । १००. श्री रामवन्दितायै नमः ।

१०१. श्री रामवल्लभायै नमः । १०२. श्री श्रीरामपदचिह्नाङ्कायै नमः ।

१०३. श्री रामरामेतिभाषिण्यै नमः । १०४. श्री रामपर्यङ्कशयनायै नमः ।

१०५. श्री रामाङ्घ्रिक्षालिन्यै नमः । १०६. श्री वरायै नमः ।

१०७. श्री कामधेन्वन्नसन्तुष्टायै नमः । १०८. श्री मातुलुङ्गकरे धृतायै नमः ।

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । अष्टोत्तरशतनामभिः पूजनं समर्पयामि ॥

नानापरिमलद्रव्य-

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् । नानापरिमलद्रव्यं गृहाण परमेश्वरि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को अबीर, गुलाल, हल्दी, कुंकुम तथा सिन्दूर अर्पित करे।

सौभाग्य पेटिका-

हरिद्रां कुङ्कुमं चैव सिन्दूरादिसमन्विताम् । सौभाग्यपेटिकामेतां गृहाण परमेश्वरि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । सौभाग्यपेटिकां समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को सौभाग्य पेटिका अर्पित करे।

धूप-

गन्धद्रव्योद्भवः पुण्यः प्रीतिदो दिव्यगन्धदः । मया निवेदितो भक्त्या धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । धूपमाघ्रापयामि ॥

इस मन्त्र से माता को धूप अर्पित करे।

दीप-

जगच्चक्षुःस्वरूपं च ध्वान्तप्रध्वंसकारणम् । प्रदीपं शुद्धरूपं च गृह्यतां परमेश्वरि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । दीपं दर्शयामि ॥

इस मन्त्र से माता को दीप दिखाए।

नैवेद्य-

तुष्टिदं पुष्टिदं चैव प्रीतिदं क्षुद्विनाशनम् । पुण्यदं स्वादुरूपं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । नैवेद्यं निवेदयामि ॥

इस मन्त्र से माता को नैवेद्य निवेदित करे।

आचमन-

गंगोत्तरीवेगसमुद्भवेन सुशीतलेनातिमनोहरेण ॥

त्वं पद्मपत्राक्षि मयाऽर्पितेन शंखोदकेनाचमनं कुरुष्व ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । आचमनं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को आचमन अर्पित करे।

पूर्वापोशान-

क्षीरमेतदिदमुत्तमोत्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुज्ज्वलं मधु।

मातेरेतदमृतोपमं त्वया संभ्रमेण परिपीयतां मुहुः ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । पूर्वापोशानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को पूर्वापोशान के लिए जल अर्पित करे।

पानीय जल-

सुवासितं शीतलं च पिपासानाशकारणम्। जगज्जीवनरूपं च जीवनं देवि गृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । पानीय जलं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को पीने के लिए जल अर्पित करे।

उत्तरापोशान-

कर्पूरसौगन्ध्यसमन्वितं देवि ! सुजाह्नवीतीर्थं समाहृतं मुदा ॥

सुशीतलं प्रीतिकरं सुनिर्मलं ह्यपोशनं चोत्तरकं गृहाण ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । उत्तरापोशानं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को उत्तरापोशान के लिए जल अर्पित करे।

हस्तप्रक्षालनादि-

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि,

मुखप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि ॥

अब माता को करोद्वर्तन समर्पित करे।

करोद्वर्तन-

उष्णोदकैः पाणियुगं मुखं च प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रे ।

कर्पूर मिश्रेण सकुंकुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि॥

इस मन्त्र से अपने दाएँ हाथ को ऊपर तथा बाएँ को नीचे करके दोनो हाथो की अनामिका और अंगूठे से देवी को घिसा हुआ गीला चंदन अर्पित करे, पहले अपने दाएँ हाथ से देवी के दाएँ हाथ पर चन्दन अर्पित करे फिर अपने बाएँ हाथ से देवी के बाएँ हाथ पर चन्दन अर्पित करे॥

फल-

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् । तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । फलं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को फल अर्पित करे।

ताम्बूल-

ताम्बूलं च वरं रम्यं कर्पूरादिसुवासितम् । जिह्वाजाड्यच्छेदकरं ताम्बूलं देवि गृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । ताम्बूलं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को ताम्बूल अर्पित करे।

दक्षिणा-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । दक्षिणां समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को दक्षिणा अर्पित करे।

छत्र-

चक्रवर्तिप्रिये छत्रं चन्द्रमण्डलसन्निभम् । धारये ते सर्वरत्नजालकं सुखमास्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । छत्रं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को छत्र अर्पित करे।

चामर-

चामरं हे महादेवि ! चमरीपुच्छनिर्मितम् । गृहीत्वा पापराशीनां खण्डनं सर्वदा कुरु ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । चामरं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को दो चामर अर्पित करे।

तालवृन्त-

रौप्येण दण्डेन युतेन शब्दैर्युक्तेन वै रौप्यसुकिङ्किणीनाम् ।

सुतालवृत्तेन तवाङ्गकानि मातः ! सुमन्दं परिवीजयामि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । तालवृन्तं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को पंखा अर्पित करे।

दर्पण-

दर्पणं विमलं रम्यं शुद्धबिम्बप्रदायकम् । आत्मबिम्बप्रदर्शार्थमर्पयामि महेश्वरि ! ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । दर्पणं दर्शयामि ॥

इस मन्त्र से माता को दर्पण दिखाए।

अब माता को शिबिका अर्पित करे।

शिबिका-

आरोहांब मया दत्तां शिबिकां रत्नभूषिताम् । अहं मदीयसहितो वहाम्येनां यथासुखम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । शिबिकार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को शिबिका के लिए पुष्प अर्पित करे।

आन्दोलिका-

ऊर्मिलाऽऽद्यैः स्वीयजनैस्सेव्यमानाऽद्य सर्वतः ।

आन्दोलिकां ममेमां त्वमातिष्ठ कृपया मयि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः। आन्दोलिकार्थे समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को आन्दोलिका के लिए पुष्प अर्पित करे।

तुरंग-

प्रियगतिरतितुंगो रत्नपल्याणयुक्तः कनकमयविभूषः स्निग्धगंभीरघोषः ॥

भगवति कलितोऽयं वाहनार्थे मया ते तुरगशतसमेतो वायुवेगस्तुरंगः ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । तुरंगार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को तुरंग के लिए पुष्प अर्पित करे।

मातंग-

मधुकरव्रतकुंभो न्यस्तसिंदूररेणुः कनककलितघंटाकिंकिणीशोभिकंठः ।

श्रवणयुगलचंचच्चामरो मेघतुल्यो जननि तव मुदे स्तान्मत्तमातंग एषः ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । मातंगार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को मातंग के लिए पुष्प अर्पित करे।

रथ-

द्रुततरतुरगैर्विराजमानं मणिमयचक्रचतुष्टयेन युक्तम् ॥

कनकमयमहं वितानयुक्तं भगवति ते हि रथं समर्पयामि ।।

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । रथार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को रथ के लिए पुष्प अर्पित करे।

सैन्य-

हयगजरथपत्तिशोभमानं दिशि दिशि दुंदुभिमेघनादयुक्तम् ॥

अपिबहुचतुरंगसैन्यमेतद्भगवति भक्तिभरेण तेऽर्पयामि ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । सैन्यं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को सैन्य अर्पित करे।

प्राकार-

परिधीकृतसप्तसागरं बहुसंपत्सहितं मयाऽम्बिके ।

विपुलं धरणीतलाभिधं प्रबलं दुर्गममंब तेऽर्पितम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । प्राकारं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को प्राकार अर्पित करे।

गीत-

किन्नर्यो रक्तकण्ठ्यस्ते गायन्ति चरितं सदा । गायामि रामं प्रति ते मधुरं धर्मकीर्तनम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । गीतं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता के लिये उनसे संबन्धित गीत गाए अथवा गायन कराए।

नृत्य-

दृष्टवत्याऽपि मे मातारंभादिनटनं त्वया । मदीयनर्तकीवृन्द नर्तनं वीक्ष्य हृष्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । नृत्यं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता के लिये नृत्य करे अथवा कराए।

आरार्तिक्य-

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् । आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । आरार्तिक्यं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता की आरती करे।

॥ श्रीसीता जी की आरती ॥

आरति श्रीजनक दुलारी की। सीताजी रघुबर-प्यारी की ॥

जगत-जननि जगकी विस्तारिणि, नित्य सत्य साकेत विहारिणि ।

परम दयामयि दीनोद्धारिणि, मैया भक्तन हितकारी की ॥ आरति..

सतीशिरोमणि पति-हित-कारिणि, पति-सेवा-हित-वन-वन-चारिणि ।

पति-हित पति वियोग स्वीकारिणि, त्याग-धर्म-मूरति धारी की ॥ आरति..

विमल-कीर्ति सब लोकन छाई, नाम लेत पावन मति आई ।

सुमिरत कटत कष्ट दुखदायी, शरणागत-जन-भय-हारी की ॥

आरति श्रीजनक दुलारी की। सीताजी रघुबर-प्यारी की ॥

आरती लेकर हाथ धुल ले तत्पश्चात् पुष्पांजलि अर्पित करे।

मन्त्रपुष्पाञ्जलि-

श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को पुष्पांजलि अर्पित करे।

प्रार्थना-

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् । सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥

दशाननविनाशाय जाता धरणिसम्भवा। मैथिली शीलसम्पन्ना पातु नः पतिदेवता ॥

रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवति देहि मे । पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे ॥

इन मन्त्रों से प्रार्थना करे।

अब अपने अधिकार तथा इच्छा अनुसार जिन भी स्तोत्र आदि का पाठ करना हो वह कर ले तत्पश्चात् श्रीसीता जी की प्रदक्षिणा करे ।

प्रदक्षिणा-

मातः प्रदक्षिणीकुर्वे त्वामद्य जनकात्मजे । मम प्रदक्षिणं सर्वमायुस्सत्वं बलं कुरु ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता की प्रदक्षिणा करे।

नमस्कार-

प्रणिपातप्रसन्नेति त्वमागस्यपि घुष्यसे । नित्यं शतापराधोऽहं वन्देऽम्ब त्वां प्रसादयन् ॥

करुणाकरचित्तायै कल्याणनिधये नमः । काकुत्स्थवल्लभायै ते कमलायै नमो नमः ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । नमस्कारान् समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को नमस्कार करे।

वासगृह-

अथ मणिमयमंचकाभिरामे द्युतिमति पुष्पवितानराजमाने ॥

प्रसरद्गुरुधूपधूपितेऽस्मिन्भगवतिवासगृहेऽस्तु ते निवासः ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । वास गृहं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को वास गृह समर्पित करे।

गण्डूष जल-

अथ मातरुशीस्वासितं निजतांबूलरसेन रंजितम् ।

तपनीयमये पतद्गृहे मुखगंडूषजलं निधीयताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । गण्डूष जलं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को गण्डूष जल अर्पित करे।

पर्यङ्क-

रत्नेन्द्रसारखचितं वह्निशुद्धांशुकान्वितम् । पुष्पचन्दनचर्चाढ्यं पर्यङ्कं देवि गृह्यताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । पर्यङ्कं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को पर्यङ्क अर्पित करे।

अलक्तक-

तव देवि सरोजचिह्नयोः पदसनिर्जितपद्मरागयोः ।

अतिरक्ततरैरलक्तकैः पुनरुक्तां रचयामि रक्तताम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । अलक्तकं समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को अलक्तक अर्पित करे।

सुखशय्या-

क्षणमथ जगदंब मंचकेऽस्मिन् मृदुतरतुलिकया विराजमाने ।

अतिरहसि मुदा रामेण सार्धं सुखशयनं कुरु मां हृदि स्मरन्ती॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः । सुखशय्यां समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से माता को शय्या अर्पित करे।

जप-

अब निम्न वर्णित मन्त्रों के द्वारा माला की वन्दना करे तत्पश्चात्

"सीतायै नमः" इस मन्त्र का कम से कम एक माला जप करे :

मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि । चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे । जपकाले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥

अब निम्न मन्त्रों द्वारा पुनः माला की वन्दना कर उसे माथे से लगाए :

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव । शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा ॥

अब अपने द्वारा किये गये जप को निम्न मन्त्र के द्वारा भगवती श्रीसीता जी को समर्पित कर दे :

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥

अब माता से पूजन में हुए अपराधों के लिए क्षमा प्रार्थना करे।

अपराध क्षमापन-

विस्मृत्य मातरमपि त्वामंब विचराम्यहम् । श्रुतिं स्मृतिं च जानानोऽप्यकार्ये सततं रमे ॥

काकं तं रक्षितवतीं त्वामंब शरणं श्रये । मद्रक्षा ते भरो मातर्नोच्यतेऽतः परं मया ॥

देह्यंबाऽऽदेहमखिलं सुखं यत्कांक्षितं मम । स्वपदं प्रापयान्ते मां नमस्ते जगदंबिके ॥

इस मन्त्र से माता से पूजन में हुए अपराधों के लिए क्षमा माँगे।

समर्पण-

अब हाथ में जल लेकर **"अनेन यथाज्ञानोपचारकृतेन पूजनेन भगवती सीता प्रीयतां न मम"** यह उच्चारित कर समस्त पूजन कर्म माता सीता जी को अर्पित कर दे तथा जल छोड़ दे।

पूर्णता की प्रार्थना-

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि । यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

इस मन्त्र से माता से पूर्णता की प्रार्थना करे तत्पश्चात् माता का विसर्जन करे।

विसर्जन-

गच्छ गच्छ जगन्मातर्गच्छ त्वां परमेश्वरि । पूजाभागं गृहाणेमं स्वस्थाने गच्छ पूजिते ॥

साङ्गायै सपरिवारायै सीतायै नमः।

विसर्जयामि, विसर्जनार्थे अक्षतान् पुष्पं च समर्पयामि ॥

इस मन्त्र से अक्षत और एक पुष्प अर्पित कर माता का विसर्जन कर दे।

अब हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे तत्पश्चात् उन अक्षतो को गणेश जी आदि पर छोड़कर सभी आवाहित देवताओं का विसर्जन करे :

"यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥"

अब अपने आसन का एक कोना उठा उसके नीचे दो बूंद जल डाल दे तदनन्तर उस जल से एक बार **श्री इन्द्राय नम:** और एक बार **श्री शक्राय नम:** कहकर अपने माथे पर तिलक कर ले तदनन्तर आसन से उठकर भगवती माता श्रीसीता जी के चरणामृत का पान करे ॥

अब निम्न मन्त्र से देवी का चरणोदक ग्रहण तथा शिर पर धारण करे :

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् । देव्याः पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम् ॥

॥ इति श्रीसीता राजोपचार पूजन विधि ॥

॥ श्रीरामचरितमानस ॥

सोहति सीय राम कै जोरी । छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी ॥

सखीं कहहिं प्रभुपद गहु सीता । करति न चरन परस अति भीता ॥

अर्थात्- श्रीसीताराम जी की जोड़ी ऐसी सुशोभित हो रही है मानो सुन्दरता और श्रृंगार रस एकत्र हो गये हों। सखियाँ कह रही हैं- सीते ! स्वामी के चरण छुओ; किन्तु सीता जी अत्यन्त भयभीत हुई उनके चरण नहीं छूतीं॥

दोहा- गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि ।

मन बिहसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥

अर्थात्- गौतम जी की स्त्री अहल्या की गति का स्मरण करके सीता जी श्रीराम जी के चरणों को हाथों से स्पर्श नहीं कर रही हैं। सीता जी की अलौकिक प्रीति जानकर रघुकुलमणि भगवान् श्रीरामचन्द्र जी मन में हँसे॥

उत्सव प्रकरण

श्रीसीता नवमी पूजन

श्रीसत्योपाख्यान, उत्तरार्द्ध, अध्याय 2, श्लोक संख्या 4-6 में वर्णित है :

मासोत्तमे महापुण्ये वैशाखे माधवप्रिये। कुजवारे शुक्लपक्षे नवमी पुष्यसंयुता ॥

पृथिव्या पूजनं कृत्वा जनकस्तु नरेश्वरः । हलेन कर्षणं चक्रे सर्वेषां पश्यतां सताम् ॥

लाङ्गलस्य मुखाग्रात्तु रमाकन्या विनिर्गता। भित्वा क्षितितलं सद्यः सीतानाम्ना बभूव सा ॥

अर्थात्- जब मिथलानरेश महाराज जनक मासों में उत्तम मास महापुण्यप्रद माधवप्रिय वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मंगलवार के दिन पुष्य नक्षत्र में अपने यज्ञ के लिए भूमि पूजन करके स्वर्ण निर्मित हल को भूमि पर चलाने लगे तब उस हल के अग्र भाग के पृथ्वी में लगते ही उससे साक्षात् भगवती रमा कन्या रूप में प्रगट हुईं, उनका नाम सीता हुआ॥

अतः सभी भक्तों को इस पुण्यमयी तिथि पर व्रत तथा सीता जी का पूजन करना चाहिए॥

व्रत का सङ्कल्प-

वैशाख शुक्ल नवमी के दिन प्रात:काल नित्यकर्मों से निवृत्त होकर हाथों में पुष्प, फल तथा अक्षतों सहित जल से भरा ताम्र पात्र लेकर निम्न वाक्य उच्चारित कर व्रत का सङ्कल्प करे :

अहमद्य श्रीसीताप्रीत्यर्थं श्रीसीतानवमी व्रतं करिष्ये

इस प्रकार व्रत का सङ्कल्प लेकर पात्र के जल, पुष्प और अक्षतों को किसी पात्र में छोड़ दे।

मूर्ति स्थापन-

शुद्ध भूमि पर तोरण आदि से अलंकृत सुन्दर मण्डपमें स्थापित की हुई सुन्दर चौकोर वेदिका

के ऊपर भगवती श्रीसीता जी तथा भगवान् श्रीराम जी के विग्रह अथवा चित्र की स्थापना करे। भगवती श्रीसीता जी तथा भगवान् श्रीराम जी की प्रतिमा के साथ कुलपुरोहित श्रीशतानन्द जी, महाराज श्रीजनक जी, माता श्रीसुनयना जी, हल तथा श्रीपृथ्वी देवी जी की भी स्थापना करे॥

अब पूर्वोक्त प्रकार से पवित्रीधारण, पवित्रीकरण, आचमन,आसन शुद्धिकरण तथा प्राणायाम करके निम्न वर्णित स्वस्त्ययन का पाठ करे तदुपरान्त श्रीविष्णु स्मरण कर सङ्कल्प करे॥

स्वस्त्ययन-

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः । श्रीवाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । श्रीशचीपुरन्दराभ्यां नमः ।

श्रीमातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । श्रीइष्टदेवताभ्यो नमः । श्रीकुलदेवताभ्यो नमः ।

श्रीग्रामदेवताभ्यो नमः। श्रीवास्तुदेवताभ्यो नमः । श्रीस्थानदेवताभ्यो नमः। श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेताय श्रीरामचन्द्राय नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः ।

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।

विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते । पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।

वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् । सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

अब पूर्वोक्त प्रकार से ही श्रीविष्णु भगवान् का स्मरण कर निम्न सङ्कल्प करे :

पूजन सङ्कल्प-

विष्णु...शर्माऽहं आदि तक पूर्ववत् बोलकर फिर निम्न वर्णित अनुसार उच्चारित करे ।

“मम आत्मन: सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीसीता प्रीत्यर्थं च श्रीसीतापूजनं करिष्ये।”

पुनः हाथ में जल लेकर निम्न सङ्कल्प बोले :

तदङ्गत्वेन दिग्रक्षणं दीपशङ्खघण्टापूजनं निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं

सिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतिपूजनं कलशस्थापनं नवग्रहपूजनं च करिष्ये ॥

दिग्रक्षण-

बाएँ हाथ में पीली सरसों लेकर उसे दाएं हाथ से आच्छादित करके निम्न मन्त्रों का पाठ करे :

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः । स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥

भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः । ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पूजाकर्म करोम्यहम् ॥

अब उस अभिमन्त्रित सरसों को सभी दिशाओं में छिड़क दे फिर तीन बार बाईं एड़ी द्वारा पृथ्वी का ताड़न कर वाम हस्त में जल लेकर दाहिनी अनामिका से उसका नेत्रों से स्पर्श कराए।

तत्पश्चात् भैरव नमस्कार करके दीप, शङ्ख तथा घण्टा पूजन कर

सिद्धिबुद्धि के सहित भगवान् श्रीमहागणपति जी का पूजन करे।

सिद्धिबुद्धिसहित श्रीमहागणपति पूजन

सर्वप्रथम भगवान् महागणपति जी फिर उनके दोनों तरफ माता सिद्धि और माता बुद्धि की स्थापना करे। अगर इनके विग्रह अथवा चित्र न हो तो ताम्बे या मिट्टी के पात्र में कुमकुम से अष्टदल कमल बनाकर उस पात्र को चावल से ऊपर तक भर दे फिर उसपर महागणपति जी की स्थापना के लिए एक सुपारी में कलावा लपेट कर उसको स्थापित करे फिर उसके बाएँ तथा दाएँ भाग में दोनों देवियों की स्थानपा के लिये एक-एक सुपारी स्थापित करे और इन्ही पर भगवान् श्रीमहागणपति जी का श्रीसिद्धिबुद्धि जी के सहित आवाहन कर उनका पूजन करे॥

ध्यान-

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढं त्रिनेत्रं

पाशं चैवाङ्कुशाख्यं परशुमभयदं बाहुभिर्धारयन्तम्।

शक्त्या युक्तं गजास्यं पृथुतरजठरं सिद्धिबुद्धिसमेतं

रक्तं चन्द्रार्धमौलिं सकलभयहरं विघ्नराजं नमामि ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

आवाहन-

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।

माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥

सिद्धिबुद्धिसहितं श्रीमन्महागणाधिपतिम् आवाहयामि । आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

आसन-

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्। स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित ! ॥

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥

इस प्रकार प्रत्येक उपचार के मन्त्र साथ **सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतिये नमः।** उच्चारित करे तथा इसके साथ ही **पाद्यं समर्पयामि॥** आदि भी पूर्ववत् ही उच्चारित करे॥

पाद्य-

सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम् । विघ्नराज ! गृहाणेदं भगवन् भक्तवत्सल ! ॥

अर्घ्य-

गणाध्यक्ष ! नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर ! । अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम् ॥

आचमन-

विनायक ! नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित ! । गङ्गोदकेन देवेश ! कुरुष्वाचमनं प्रभो ! ॥

स्नान-

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

दुग्ध स्नान-

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

दधि स्नान-

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

घृत स्नान-

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

मधु स्नान-

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

शर्करा स्नान-

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् । मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

पञ्चामृत स्नान-

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

गन्धोदक स्नान-

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनिःसृतम् । इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं च गृह्यताम् ॥

अभिषेक-

श्रीसङ्कष्टनाशन गणेश स्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् । भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये ॥

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् । तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च । सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् । एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः । न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् । पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥

जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् । संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् । तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥

शुद्धोदक स्नान-

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम् । समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥

वस्त्र-

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् । देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

उपवस्त्र-

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति । उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम् ॥

यज्ञोपवीत-

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

चन्दन-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

अक्षत-

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

पुष्प तथा पुष्पमाला-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

दूर्वा-

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

अङ्ग पूजन-

1. गणेश्वराय नमः, पादौ पूजयामि । 2. विघ्नराजाय नमः, जानुनी पूजयामि ।

3. आखुवाहनाय नमः, ऊरू पूजयामि । 4. हेरम्बाय नमः, कटिं पूजयामि ।

5. कामारिसूनवे नमः, नाभिं पूजयामि । 6. लम्बोदराय नमः, उदरं पूजयामि ।

7. गौरीसुताय नमः, स्तनौ पूजयामि । 8. गणनायकाय नमः, हृदयं पूजयामि ।

9. स्थूलकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि । 10. स्कन्दाग्रजाय नमः, स्कन्धौ पूजयामि ।

11. पाशहस्ताय नमः, हस्तौ पूजयामि । 12. गजवक्त्राय नमः, वक्त्रं पूजयामि ।

13. विघ्नहर्त्रे नमः, ललाटं पूजयामि । 14. सर्वेश्वराय नमः, शिरः पूजयामि ।

15. गणाधिपाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि ॥

सिन्दूर-

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् । शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

परिमल द्रव्य-

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् । नानापरिमलद्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

सुगन्धित तेल तथा इत्र-

तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च । मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

धूप-

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

दीप-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश ! त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

नैवेद्य-

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च । आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

पूर्वापोशानादि-

पूर्वापोशानं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशानं समर्पयामि।

हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि। मुखप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि॥

करोद्वर्तन-

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् । करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥

फल-

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

ताम्बूल-

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् । एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

दक्षिणा-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

आरार्तिक्य-

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् । आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

पुष्पाञ्जलि-

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

प्रदक्षिणा-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥

विशेषार्घ्य-

अब एक ताम्रपात्र में जल लेकर उसमें चन्दन, अक्षत, पुष्प तथा द्रव्य को डाल ले तदुपरान्त उसके ऊपर नारियल रख कर दोनो हाथों से ताम्र पात्र पकड़कर निम्न मन्त्रों द्वारा प्रभु को विशेषार्घ्य समर्पित करे :

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो । वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥

अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ॥

प्रार्थना-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय सुखदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः। नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति ।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥

अब हाथ में जल लेकर आगे वर्णित मन्त्र का उच्चारण कर
सकल पूजनकर्म भगवान् श्रीमहागणपति जी को समर्पित कर दे :

अनेन कृतपूजनेन सिद्धिबुद्धिसहितः श्रीमहागणपतिः प्रीयतां न मम ॥

॥ इति सिद्धिबुद्धिसहित श्रीमहागणपति पूजन विधि॥

कलश स्थापन-

सर्वप्रथम कलश स्थापित किये जानेवाली भूमि पर कुंकुम के द्वारा अष्टदल कमल बना ले तत्पश्चात् निम्न वर्णित विधि के अनुसार कलश स्थापित करे।

भूमि स्पर्श-

विश्वाधाराऽसि धरणि शेषनागोपरि स्थिता । उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥

इस मन्त्र से अष्टदलकमल बनाई हुई भूमि का स्पर्श करे।

यव प्रक्षेप-

यवोऽसि धान्यराजस्त्वं सर्वोत्पत्तिकरः शुभः ।

प्राणिनां जीवनोपायस्त्वां भूमौ स्थापयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से उस भूमि पर यव स्थापित करे। यव न हों तो अक्षत स्थापित करे।

कलश स्थापन-

हेमरूप्यादिसम्भूतं ताम्रजं सुदृढं नवम् । अच्छिद्रं धौतकल्माषं कलशं स्थापयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से यवों के ऊपर कलश स्थापित करे।

कलश में जलपूरण-

जीवनं सर्वजीवानां पावनं पावनात्परम् । बीजं सर्वौषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में जल भर दे।

चन्दन प्रक्षेप-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुगन्धाय कलशे प्रक्षिपाम्याहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में चन्दन डाल दे।

धान्य प्रक्षेप-

धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम् । बलप्रदां तु सर्वेषां कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में धान्य डाल दे।

सर्वौषधी प्रक्षेप-

ओषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः । दूर्वासर्षपसंयुक्ताः कलशे ताः प्रक्षिपाम्याहम्॥

इस मन्त्र से कलश में सर्वौषधि अर्थात्- मुरा, जटामांसी, वच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी और दारूहल्दी, सटी (कचूर), चम्पक तथा मुस्ता को दूर्वा तथा सरसों सहित डाल दे।

दूर्वा प्रक्षेप-

दूर्वां ह्यमृतसम्पन्नां शतमूलां शताङ्कुराम् । शतं पातकसंहन्त्रीं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में दूर्वा डाल दे।

पञ्चपल्लव-

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः । पञ्चैतान् पल्लवानस्मिन्कलशे स्थापयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में पञ्चपल्लव अर्थात् बरगद, गूलर, पीपल, आम और पाकड़ के पत्ते दे।

सप्तमृत्तिका-

अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद् हृदात् ।

राजस्थानाच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ॥

इस मन्त्र से कलश में सप्तमृत्तिका अर्थात् घुड़साल, हाथीसाल, बाँबी,

नदियों के संगम, तालाब, राजा के द्वार तथा गोशाला की मिट्टी डाल दे।

पूगीफल-

पूगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पापनाशनम् । पुत्रपौत्रादिफलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में सुपारी डाल दे।

पञ्चरत्न-

कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् । एतानि पञ्चरत्नानि कलशे प्रक्षिपाम्यहम्॥

इस मन्त्र से कलश में पञ्चरत्न अर्थात् सोना, हीरा, मोती, पद्मराग और नीलम डाल दे।

हिरण्य-

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदं कलशे संक्षिपाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश में स्वर्ण डाल दे।

पंचरत्नों के अभाव में आधा कर्ष अर्थात् लगभग ८ ग्राम स्वर्ण कलश में डाल दे। यदि स्वर्ण भी न हो तो गोघृत को ही डाल दे। पंचरत्नों के बाद कलश में जो स्वर्ण डाला जाता है उसके अभाव में भी गोघृत ही डाल दे ॥

कलशवेष्टनम्-

सूत्रं कार्पाससम्भूतं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा । येन बद्धं जगत्तेन कलशं वेष्टयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश को कण्ठ में रक्त सूत्र से वेष्टित करे।

कलश के ऊपर धान्य से भरा हुआ पूर्णपात्र स्थापित करे-

पिधानं सर्ववस्तूनां सर्वकार्यार्थसाधनम् । सम्पूर्णः कलशो येन पात्रं तत्कलशोपरि ॥

इस मन्त्र से धान्य से भरे हुए पूर्णपात्र को कलश के ऊपर स्थापित करे।

पूर्णपात्र के ऊपर नारियल रखे-

श्रीफलं तु शुभं प्रोक्तं सर्वकार्यप्रसाधनम् । लक्ष्मीदं फलदं शुद्धं कलशे स्थापयाम्यहम् ॥

इस मन्त्र से कलश के ऊपर लाल कपड़ा तथा कलावा लपेटे हुए नारियल को रखे।

अब कलश में निम्न विधि से श्रीवरुण देव जी का पञ्चोपचारों से पूजन करे।

वरुण देव का आवाहन-

मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ॥

अपाम्पतये वरुणाय नमः । अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं

सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि, स्थापयामि ॥

अब निम्न मन्त्रों के द्वारा वरुण देव का पूजन करे :

अपाम्पतये वरुणाय नमः । चन्दनं समर्पयामि ॥

अपाम्पतये वरुणाय नमः । पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ॥

अपाम्पतये वरुणाय नमः । धूपमाघ्रापयामि ॥

अपाम्पतये वरुणाय नमः। दीपं दर्शयामि ॥

अपाम्पतये वरुणाय नमः । नैवेद्यं निवेदयामि ॥

अब अनामिका अँगुली से कलश का स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्रों के द्वारा कलश में तीर्थों आदि का आवाहन करे :

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

अब निम्न वर्णित विधि से वरुणादि आवाहित देवताओं का पूजन करे-

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। स्नानं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। वस्त्रं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। वस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। यज्ञोपवीतान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। उपवस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। चन्दनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। अक्षतान् समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। धूपमाघ्रापयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। दीपं दर्शयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। नैवेद्यं निवेदयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। पूर्वापोशानं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि।

उत्तरापोशानं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि।

मुखप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। करोद्वर्तनं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। ताम्बूलं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। कृतायाः पूजायाः षाड्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । आरार्तिक्यं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। नमस्कारान् समर्पयामि ॥

अब निम्न मन्त्रों से कलश की प्रार्थना करे :

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः । आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ।

सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।

सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥

अब हाथ में जल लेकर निम्न वाक्य का उच्चारण कर समस्त पूजन कर्म वरुण देव को समर्पित कर दे फिर जल छोड़ दे :

अनेन अस्मद्कृतेन कलशे पूजनाख्येनकर्मणा वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम ॥

॥ इति श्री कलश स्थापन विधि ॥

नवग्रह पूजन

ग्रहों की स्थापना के लिये एक चौकी पर निम्न चित्र के अनुसार चार खड़ी पाइयों और चार पड़ी पाइयों का चौकोर मण्डल बनाये। इस प्रकार नौ कोष्ठक बन जायेंगे। तत्पश्चात् बीच वाले कोष्ठक में सूर्य, अग्नि कोण में चन्द्र, दक्षिण में मंगल, ईशान कोण में बुध, उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में शनि, नैर्ऋत्य कोण में राहु और वायव्य कोण में केतु की चित्र में लिखे रंगों तथा बने आकारों के अनुरूप रंग के आकार बना स्थापना करे।

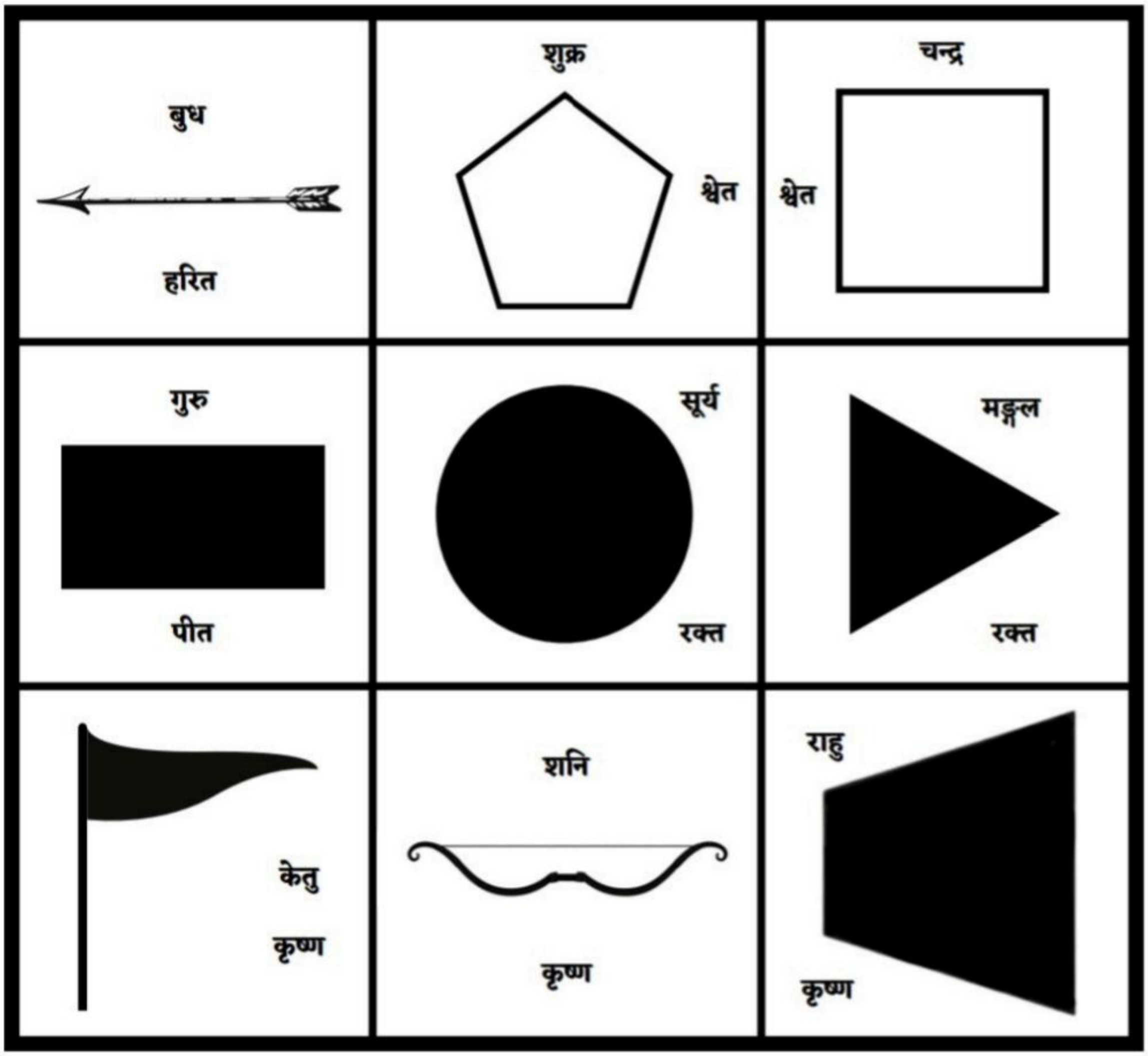

अब निम्न वर्णित मन्त्रों के द्वारा नवग्रहों का आवाहन कर उनका पूजन करे।

सूर्य (मध्य में, लाल गोलाकार)

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

सूर्याय नमः। सूर्यमावाहयामि, स्थापयामि ॥

चन्द्र (अग्निकोण में, श्वेत चतुष्कोण)

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् । नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥

यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

सोमाय नमः। सोममावाहयामि, स्थापयामि ॥

मङ्गल (दक्षिण में, लाल त्रिकोण)

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् । कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥

अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

भौमाय नमः । भौममावाहयामि, स्थापयामि ॥

बुध (ईशानकोण में, हरा बाण)

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् । सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥

मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

बुधाय नमः । बुधमावाहयामि, स्थापयामि ॥

बृहस्पति (उत्तर में, पीला दीर्घचतुरस्र)

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् । बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥

सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

बृहस्पतये नमः । बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि ॥

शुक्र (पूर्व में, श्वेत पञ्चकोण)

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् । सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥

भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

शुक्राय नमः। शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि ॥

शनि (पश्चिम में, काला धनुष)

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् । छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

शनैश्चराय नमः। शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि ॥

राहु (नैर्ऋत्यकोण में, काला सूर्पाकार)

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् । सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥

राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

राहवे नमः। राहुमावाहयामि, स्थापयामि ॥

केतु (वायव्यकोण में, कृष्ण ध्वजा)

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ

केतवे नमः। केतुमावाहयामि, स्थापयामि ॥

अब **"आवाहितसूर्यादिनवग्रहेभ्यो देवेभ्यो नमः"** इस मन्त्र

से नवग्रहों का पञ्चोपचार आदि के द्वारा पूजन करे।

अब निम्न मन्त्रों द्वारा प्रार्थना करे:

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।

गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः

सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः ।

राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं नित्यं

प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः ॥

अब हाथ में जल लेकर **"अनया पूजया सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्तां न मम"**

यह वाक्य उच्चारित कर सकल पूजन कर्म नवग्रहों को समर्पित कर दे॥ **नारायण..**

॥ इति श्रीनवग्रह पूजन ॥

श्रीसीता नवमी पूजन

निम्न वर्णित मन्त्र से भगवती श्रीसीता जी का ध्यान कर उनका आवाहन करे :

ध्यान-

ताटङ्कमण्डलविभूषितगण्डभागां चूडामणिप्रभृतिमण्डनमण्डिताङ्गीम्।

कौशेयवस्त्रमणिमौक्तिकहारयुक्तां ध्यायेद् विदेहतनयां शशिगौरवर्णाम् ॥

साङ्गायै सपरिवारायै जनकसुनयनाशतानन्दादिसहितायै श्रीरामसहितायै सीतायै नमः।

ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

'मण्डलाकार कर्णाभूषणों से जिनके कपोल अति सुन्दर लग रहे हैं, चूड़ामणि आदि अनेकविध आभूषणों से जिनके विभिन्न अङ्ग अलंकृत हैं, जो रेशमी वस्त्र तथा मणि एवं मोती के हारों से विभूषित हैं और जिनका चन्द्रमा के समान गौरवर्ण है, उन जनकात्मजा भगवती सीता का ध्यान करना चाहिये। इस प्रकार माता श्रीसीता जी का ध्यान करके उन्हें एक पुष्प अर्पित करे।

आवाहन-

आवाहये त्वां पूजार्थं जनकेश्वरपुत्रिके । भर्तृपार्श्वगताऽपि त्वमत्र सन्निहिता भव ॥

साङ्गं सपरिवारं जनकसुनयनाशतानन्दसहितं श्रीरामसहितं सीतामावाहयामि,

आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

अब निम्न मन्त्रों से हल देवता तथा पृथ्वी देवी का भी आवाहन करे।

श्रीहल देवाय नमः । आवाहयामि॥

श्रीपृथ्वि देव्यै नमः । आवाहयामि॥

अब भगवती का पूर्वोक्त प्रकार से नृत्यार्पण पर्यंत पूजन करे। हर उपचार के मंत्र के साथ मूल

मन्त्र के रूप में **"साङ्गायै सपरिवारायै जनकसुनयनाशतानन्दादिसहितायै श्रीरामसहितायै सीतायै नमः।"** इसका उच्चारण करे।

अब निम्न विधि के अनुसार जनक जी आदि का पूजन करे :

श्रीजनक पूजन-

देवी पद्मालया साक्षादवतीर्णा यदालये। मिथिलापतये तस्मै जनकाय नमो नमः ॥

'जिनके गृह में साक्षात् लक्ष्मी देवी ही उत्पन हुई थीं, उन

मिथिलापति श्रीजनक जी के लिये बारंबार नमस्कार है।'

उपर्युक्त मन्त्र से महाराज श्रीजनक जी की वन्दना करके

"श्रीजनकाय नमः" इस मन्त्र से उनका पञ्चोपचार पूजन करे।

श्रीसुनयनाम्बा पूजन-

सीताया जननी मातर्महिषी जनकस्य च। पूजां गृहाण मद्दत्तां महाबुद्धे नमोऽस्तु ते॥

'मात: ! आप श्रीसीता जी की माता तथा महाराज जनक की पटरानी हैं,

मेरे द्वारा की हुई इस पूजा को ग्रहण करें। महाबुद्धे ! आपको प्रणाम है

उपर्युक्त मंत्र से श्रीसुनयना जी की वंदना करके **"श्रीसुनयनाम्बायै नमः"** इस मन्त्र से उनका पञ्चोपचारों द्वारा पूजन सम्पन्न करे तत्पश्चात् शतानन्द जी का पूजन करे।

श्रीशतानन्द पूजन-

निधानं सर्वविद्यानां विद्वत्कुलविभूषणम् । जनकस्य पुरोधास्त्वं शतानन्दाय ते नमः ॥

'शतानन्दजी! आप सभी विद्याओं के आगार, विद्वत्शिरोमणि

एवं श्रीजनक जी के पुरोहित हैं। आपको नमस्कार है।'

उपर्युक्त मन्त्र से श्रीशतानन्द जी की वन्दना करके **“श्रीशतानन्दाय नमः”**

इस मन्त्र से श्रीशतानन्द जी का पञ्चोपचारों द्वारा पूजन सम्पन्न करे।

श्रीहल पूजन-

जीवयस्यखिलं विश्वं चालयन् वसुधातलम् । प्रादुर्भावयसे सीतां सीर तुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥

'हे हल! पृथ्वी को जोतते समय तुमने सीता जी को प्रकट किया है

एवं सम्पूर्ण विश्व का तुम्हारे द्वारा पोषण होता है। तुम्हें नमस्कार है।'

उपर्युक्त मन्त्र से श्रीहल की वन्दना करके **“श्रीहलाय नमः”**

इस मन्त्र से हल देवता का पञ्चोपचारों द्वारा पूजन करे।

श्रीपृथ्वी देवी पूजन-

त्वयैवोत्पादितं सर्वं जगदेतच्चराचरम् । त्वमेवासि महामाया मुनीनामपि मोहिनी ॥

त्वदायत्ता इमे लोकाः श्रीसीतावल्लभा परा । वन्दनीयासि देवानां सुभगे त्वां नमाम्यहम् ॥

'पृथ्वी मातः ! यह सम्पूर्ण चराचर जगत् आपसे ही उत्पन्न हुआ है। आप ही मुनियों को भी मोहित करनेवाली महामाया हैं। ये सभी लोक आपके अधीन हैं। आप पराशक्ति हैं एवं सीता जी आपको परमप्रिय हैं। आप देवों के लिये भी वन्दनीया हैं। सुभगे ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ।'

इस प्रकार श्रीपृथ्वी देवी की वन्दना करके **“श्रीसुभगायै नमः”**

इस मन्त्र से धरती माता का पञ्चोपचारों के द्वारा पूजन करे।

अब पूर्ववत् ही आरती करके पुष्पांजलि अर्पित करे तत्पश्चात्

प्रार्थना करके स्तोत्र पाठ कर प्रदक्षिणा आदि सब पूर्ववत् ही करे।

इस प्रकार सीता नवमी के दिन श्रीसीता जी का पूजन करे तथा रात्रि में कीर्तन आदि करते हुए जागरण करे फिर अगले दिन स्नान आदि करके नित्य कर्मों को सम्पन्न कर सीता माता का पूजन करे फिर ब्राह्मणों तथा सुहागिनी स्त्रियों को भोजन कराकर उन्हें दक्षिणा तथा वस्त्राभूषण आदि देकर व्रत की पारणा करे॥

॥ इति श्रीसीता नवमी पूजन विधि ॥

श्रीभावार्थ रामायण के बालकाण्ड के अनुसार एक बार भगवान् श्रीपरशुराम जी राजा जनक के गृह में भोजन के लिए आए तब उन्होंने भोजन के लिए जाने से पूर्व शिव जी द्वारा प्रदान करा गया धनुष महल में ही एक जगह रख दिया। जब परशुराम जी भोजन कर रहे थे तब उस धनुष के पास सीता माता आईं और उन्होंने उस धनुष को घोड़ा समझा तथा वे धनुष को घोड़ा, बाण को चाबुक और उसकी डोरी को लगाम समझकर उससे खेलने लगीं और उस शिव धनुष को उस स्थान से दूर ले गईं। जब भगवान् परशुराम जी भोजन करके आए और उन्होंने धनुष को उसके स्थान पर नही पाया तो वे राजा जनक पर अत्यन्त क्रोधित हुए तब जनक जी ने धनुष की खोज कराई तथा स्वयं भी खोजने लगे। तब उन्होंने देखा कि सीता जी उससे खेल रहीं हैं, तब वे सीता माता तथा धनुष को लाने लगे परंतु वह पिनाक धनुष उनसे नही उठा। तब उन्होंने श्रीसीता जी से कहा कि पुत्री ! इस धनुष को ले चलो तब श्रीसीता माँ उस धनुष को घोड़े ऐसा चलाती हुईं परशुराम जी के पास ले आईं। यह देख श्रीपरशुराम जी श्रीजनक जी से बोले- ये तो साक्षात् आदिशक्ति हैं, इनका विवाह तो स्वयं परमेश्वर से ही होगा। हे जनक ! मैं यह धनुष तुम्हे देता हूँ। तुम इनका विवाह उसी से कराना जो इस धनुष पर डोरी चढ़ा सके, यह हमारी आज्ञा है॥

स्तोत्र प्रकरण

श्रीसीतानमस्कार स्तोत्रम्

एकदा नैमिषारण्ये शौनकाद्याः महर्षयः । नारदं परिपप्रच्छ कथां परमपावनीम् ॥

कथयस्व महाबाहो स्तवञ्चपरमं पदं । यस्य श्रवण मात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

श्रीनारद उवाच-

सीतास्तोत्रं प्रवक्ष्यामि सर्वपापप्रणाशनम् ॥

सीता च जानकीदेवी मैथिली राघवप्रिया नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

लोकमाता जगद्धात्री कुशस्य जननी शुभा नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

वैदेही वेदमाता च सावित्री भुवनेश्वरी नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

रामस्य महिषी पुण्या सर्वपापप्रणाशिनी नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

अयोनिजा महाविद्या महापातकनाशिनी नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

नमस्तस्यै नमस्तस्यै सीतायै च नमो नमः। इदं स्तोत्रं महत्पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥

सर्वपापविमुक्तात्मा विष्णुलोकं स गच्छति। पुत्रार्थी लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ॥

मोक्षार्थी लभते मोक्षं कन्याविन्दति सत्पतिम्। तस्यगृहे सदा लक्ष्मी कर्हिचिन्नैव मुञ्चति ॥

दातव्यं भक्तियुक्ताय शिष्याय विमलात्मने। दाम्भिकाय न दातव्यं भक्तिहीनाय सर्वथा ॥

गोपनीयमिदंस्तोत्रं त्रिषुलोकेषु सर्वदा ॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले शिव-भैरव संवादे श्रीसीतानमस्कारस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीरत्नसिंहासनीय श्रीसीतापञ्चायतन स्तोत्रम्

वन्दे विदेहतनयापदपुण्डरीकं कैशोरसौरभसमाहृतयोगिचित्तम् ।

हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं सम्मानशालिपरिपीतपरागपुञ्जम् ॥ १ ॥

दूर्वादलद्युतितनुं तरुणाब्जनेत्रं हेमाम्बरंवरविभूषणभूषिताङ्गम् ।

कन्दर्पकोटिकमनीयकिशोरमूर्तिं पूर्तिं मनोरथभुवांभजजानकीशम् ॥ २ ॥

कर्पूरगौरवपुषं शरदिन्दुवक्त्रं नीलाम्बरं सरसिजाक्षमनन्तमाद्यम् ।

वामोर्मिलं ललितभूषणभूषिताङ्ग रामानुजं भजमनोऽभयदं निजानाम् ॥ ३ ॥

विश्वम्भरं भरतमम्बुजपत्रनेत्रं नीलाम्बुदामवपुषं कनकाभवस्त्रम् ।

भक्ताभयप्रदमनेकविभूषणाढ्यं जाड्यापहं सुभजतां भजमाण्डवीशम् ॥ ४ ॥

कैशोरमूर्तिमनुरूपमनूपरूपं पञ्चेषु सुन्दरतनुं श्रुतिकीर्तिकान्तम् ।

गौरं सुवर्णमणिभूषणमम्बुजाक्षं पीताम्बरं भजमनोऽखिल सिद्धिहेतुम् ॥ ५ ॥

उद्यद्दिनेशकररञ्जितकञ्जवक्त्रं पिङ्गारुणाब्जनयनं नयनाभिरामम् ।

सौवर्णवर्णवसनं रत्नादिभूषं भक्तेष्टकामदतरुं भज वायुसूनुम् ॥ ६ ॥

श्री सीतापञ्चायतनस्तोत्रं प्रातःकाले पठेत्तुयः ।

इहलोके परेवाऽपि तस्य किञ्चिन्नदुर्लभम् ॥७॥

॥ इति सुन्दरीतन्त्रोक्तं श्रीरत्नसिंहासनीय श्रीसीतापञ्चायतन स्तोत्रम् ॥

श्रीसीता अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

विनियोग:-

अस्य श्रीसीतानामाष्टोत्तरमन्त्रस्य अगस्तिऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः । रमेति बीजम्।

मातुलुङ्गीति शक्तिः। पद्माक्षजेति कीलकम्। अवनिजेत्यस्त्रम्।

जनकजेति कवचम्। मूलकासुरमर्दिनीति परमो मन्त्रः।

श्रीसीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं सकलकामनासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

ध्यान-

वामाङ्गे रघुनायकस्य रुचिरे या संस्थिता शोभना

या विप्राधिपयानरम्यनयना या विप्रपालानना ।

विद्युत्पुञ्जविराजमानवसना भक्तार्तिसंखण्डना

श्रीमद्राघवपादपद्मयुगलन्यस्तेक्षणा सावतु॥

जो एक सुन्दर सिंहासन पर श्रीराम जी के वामाङ्ग में आसीन (विराजित) हैं, मृग के नेत्रों की तरह जिनके सुन्दर नेत्र हैं, जो चन्द्रमा के तुल्य मुखवाली हैं, जो बिजली के समूह की तरह दमकने वाले वस्त्र पहने हुए हैं, जो अपने भक्तों की पीड़ा दूर करने में कुछ उठा नहीं रखतीं, जिनके नेत्र श्रीरामचन्द्र जी के युगल चरण-कमलों में लगे हैं, वे सीता जी हमारी रक्षा करें।

स्तोत्र-

श्रीसीता जानकी देवी वैदेही राघवप्रिया । रमावनिसुता रामा राक्षसान्तप्रकारिणी ॥

रत्नगुप्ता मातुलुङ्गी मैथिली भक्ततोषदा । पद्माक्षजा कञ्जनेत्रा स्मितास्या नूपुरस्वना ॥

वैकुण्ठनिलया मा श्रीर्मुक्तिदा कामपूरणी । नृपात्मजा हेमवर्णा मृदुलाङ्गी सुभाषिणी ॥

कुशाम्बिका दिव्यदा च लवमाता मनोहरा । हनुमद्वन्दितपदा मुग्धा केयूरधारिणी ॥

अशोकवनमध्यस्था रावणादिकमोहिनी । विमानसंस्थिता सुभ्रूः सुकेशी रशनान्विता ॥

रजोरूपा सत्त्वरूपा तामसी वह्निवासिनी । हेममृगासक्तचित्ता वाल्मीक्याश्रमवासिनी ॥

पतिव्रता महामाया पीतकौशेयवासिनी । मृगनेत्रा च बिम्बोष्ठी धनुर्विद्याविशारदा ॥

सौम्यरूपा दशरथस्नुषा चामरवीजिता । सुमेधादुहिता दिव्यरूपा त्रैलोक्यपालिनी ॥

अन्नपूर्णा महालक्ष्मीर्धीर्लज्जा च सरस्वती ।

शान्तिः पुष्टिः क्षमा गौरी प्रभायोध्यानिवासिनी ॥

वसन्तशीतला गौरी स्नानसन्तुष्टमानसा । रमानामभद्रसंस्था हेमकुम्भपयोधरा ॥

सुरार्चिता धृतिः कान्तिः स्मृतिर्मेधा विभावरी । लघूदरा वरारोहा हेमकङ्कणमण्डिता ॥

द्विजपत्न्यर्पितनिजभूषा राघवतोषिणी । श्रीरामसेवनरता रत्नताटङ्कधारिणी ॥

रामवामाङ्गसंस्था च रामचन्द्रैकरञ्जनी । सरयूजलसंक्रीडाकारिणी राममोहिनी ॥

सुवर्णतुलिता पुण्या पुण्यकीर्तिः कलावती । कलकण्ठा कम्बुकण्ठा रम्भोरुर्गजगामिनी ॥

रामार्पितमना रामवन्दिता रामवल्लभा । श्रीरामपदचिह्नाङ्का रामरामेतिभाषिणी ॥

रामपर्यङ्कशयना रामाङ्घ्रिक्षालिनी वरा । कामधेन्वन्नसन्तुष्टा मातुलुङ्गकरे धृता ॥

दिव्यचन्दनसंस्था श्रीर्मूलकासुरमर्दिनी । एवमष्टोत्तरशतं सीतानाम्नां सुपुण्यदम् ॥

ये पठन्ति नरा भूम्यां ते धन्याः स्वर्गगामिनः। अष्टोत्तरशतं नाम्नां सीतायाः स्तोत्रमुत्तमम् ॥

जपनीयं प्रयत्नेन सर्वदा भक्तिपूर्वकम् । सति स्तोत्राण्यनेकानि पुण्यदानि महान्ति च ॥

नानेन सदृशानीह तानि सर्वाणि भूसुर । स्तोत्राणामुत्तमं चेदं भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणाम् ॥

एवं सुतीक्ष्ण ते प्रोक्तमष्टोत्तरशतं शुभम् । सीतानाम्नां पुण्यदं च श्रवणान्मङ्गलप्रदम् ॥

नरैः प्रातः समुत्थाय पठितव्यं प्रयत्नतः । सीतापूजनकालेऽपि सर्ववाञ्छितदायकम् ॥

॥ इति श्रीआनन्दरामायणे श्रीसीताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीसीताकृपाकटाक्ष स्तोत्रम्

मुनीन्द्र वृन्दवन्दिते त्रिलोकशोक हारिणि, प्रसन्नवक्त्र पङ्कजे निकुञ्ज भूविलासिनि।
विदेह भूपनन्दिनि नृपेन्द्रसूनु संगते, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥१॥

अशोकवृक्षवल्लरीवितानमण्डपस्थिते, प्रवालजालपल्लवप्रभारुणाङ्घ्रि कोमले ।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्॥२॥

तडित्सुवर्ण चम्पक प्रदीप्त गौरविग्रहे, मुखप्रभापरास्त कोटि शारदेन्दु मण्डले।
विचित्र चित्र सञ्चरच्चकोर शाव लोचने, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्॥३॥

अनङ्गरङ्गमङ्गलप्रसङ्गभङ्गुरध्रुवां, सुविभ्रमस्तु सम्भ्रमद् दृगन्तबाणपातनैः।
निरन्तरं वशीकृतावधेशभूपनन्दने, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्॥४॥

मदोन्मदादियौवने प्रमोदमानमण्डिते, प्रियानुरागरञ्जिते कलाविलासपण्डिते।
अनन्यधन्यकुञ्जराजि कामकेलिकोविदे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्॥५॥

विशेषहावभाव धीरहीरहारभूषिते, प्रभूतशात कुम्भ-कुम्भ कुम्भि कुम्भ सुस्तनि ।
प्रशस्तमन्दहास्यचूर्ण-पूर्ण सौख्यसागरे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्॥६॥

मृणालबालवल्लरी तरङ्गरङ्गदोलिते, लताग्रलास्यलोलनीललोचनाविलोकने ।
ललल्लुलन् मिलन्मनोजमुग्धमोहमाश्रये, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥७॥

सुवर्णमालिकाञ्चिते त्रिरेखकम्बुकण्ठके, त्रिसूत्रमङ्गलीगुणत्रिरत्नदूरदीप्यते ।

सलोलनीलकुन्तले प्रसूनगुच्छगुम्फिते, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥८॥

नितम्बबिम्बलम्बमानपुष्पमेखलागुणे, प्रशस्तरत्नकिङ्किणीकलापमध्यमञ्जुले।

करीन्द्रशुण्डदण्डिकावरोहशोभगौरके, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्॥९॥

अनेकमन्त्रनादमञ्जुनूपुरारवस्खले, सुराजराजहंसवंशनिःक्वणातिगौरवे।

विलोलहेमवल्लरीविडम्बिचारुचङ्क्रमे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम् ॥ १० ॥

अनन्तकोटिविष्णुलोकनम्रपद्मजार्चिते, हिमाद्रिजापुलोमजाविरंचिजावरप्रदे।

अपारसिद्धिवृद्धिदिग्धसत्पदाङ्गुलीनखे, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्॥११॥

मखेश्वरी क्रियेश्वरी स्वधेश्वरी सुरेश्वरी, त्रिवेदभारतीश्वरी प्रमाणशासनेश्वरी।

रमेश्वरी क्षमेश्वरी प्रमोदकाननेश्वरी, कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्॥ १२ ॥

इतीदमद्भुतस्तवं निशम्य भूमिनन्दिनी, करोति सन्ततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम्।

भवत्यनेकसञ्चितं त्रिरूपकर्मनाशनं, लभेत्तथा नरेन्द्रसूनु मन्दिरप्रवेशनम्॥ १३ ॥

राकायां च नवम्यां च दशम्यां च विशुद्धधीः।

एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकः सुधीः ॥१४॥

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः ।

सीताकृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात्प्रेमलक्षणा ॥१५॥

उरुदघ्ने नाभिदघ्ने हृदघ्ने कण्ठदघ्नके।

सीताकुण्डे जले स्थित्वा यः पठेत्साधकः सतम्॥१६॥

तस्यसर्वार्थसिद्धिः स्यात् वाक्यसामर्थ्यमेव च।

ऐश्वर्यं च लभेत्साक्षात् दृशापश्यतिजानकीम्॥ १७॥

तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते महावरम्। तेन पश्यति नेत्राभ्यां तत्प्रियं श्यामसुन्दरम्॥१८॥

नित्य लीला प्रवेशं च ददाति श्रीरघूत्तमः । अतः परतरं प्रार्थ्यं वैष्णवानां न विद्यते॥१९॥

॥ इति श्रीसीता कृपाकटाक्ष स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री तुलसी कृता श्रीसीता स्तुति (1)

कबहुँक अंब, अवसर पाइ ।

मेरिऔ सुधि द्याइबी, कछु करुन कथा चलाइ ॥ १ ॥

दीन, सब अँगहीन, छीन, मलीन, अघी अघाइ ।

नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ ॥ २ ॥

बूझिहैं 'सो है कौन', कहिबी नाम दसा जनाइ ।

सुनत राम कृपालुके मेरी बिगरिऔ बनि जाइ ॥ ३ ॥

जानकी जगजननि जनकी किये बचन सहाइ ।

तरै तुलसीदास भव तव नाथ-गुन गन-गाइ ॥ ४ ॥

॥ इति श्री तुलसी कृता श्रीसीता स्तुतिः सम्पूर्णा ॥

श्री तुलसी कृता श्रीसीता स्तुति (2)

कबहुँ समय सुधि द्यायबी, मेरी मातु जानकी ।

जन कहाइ नाम लेत हौं, किये पन चातक ज्यों,

प्यास प्रेम-पानकी ॥ १ ॥

सरल कहाई प्रकृति आपु जानिए करुना-निधान की ।

निजगुन, अरिकृत अनहितौ,

दास-दोष सुरति चित रहत न दिये दानकी ॥ २ ॥

बानि बिसारनसील है मानद अमानकी ।

तुलसीदास न बिसारिये, मन करम बचन जाके,

सपनेहुँ गति न आनकी ॥ ३॥

॥ इति श्री तुलसी कृता श्रीसीता स्तुतिः सम्पूर्णा ॥

श्रीसीतारक्षाकवचम्

सर्वेश्वरीं सर्वमुनीन्द्रवन्दितां मुक्तिप्रदां संसृतिविघ्नहारिणीं ।

साकेत सिंहासनमध्यस्थां नमामि सीतां सकलेष्टकामदान् ॥

श्रीसीता मे शिरः पातु ललाटं जानकी सदा । सत्यश्री नेत्रयुगलं कर्णौ त्रैलोक्यस्वामिनी ॥

नासिकां नित्यकैशोरी भ्रूयुगं योगिवन्दिता । ओष्ठौ पातु सुधास्निग्धा दन्तान्देवेन्द्रपूजिता ॥

चिबुकं चन्द्रमुखी पातु जिह्वां श्रीरामवल्लभा ।

गण्डं पातु पराशक्तिः कण्ठं क्रीडाविनोदिनी॥

हृदयं राघवप्राणा करौ कमललोचना । उदरं भूसुता पातु कटिं मङ्गलविग्रहा ॥

जानुदेशं जगद्धात्री पादौ प्रणतपालिका । नखान्नित्यनवा पातु पूर्णापादा तलं तथा ॥

पृष्ठं पुण्यप्रदा पातु संकटे संयुगेश्वरी । सर्वत्र सर्वदा पातु प्रमोदविपिनेश्वरी ॥

प्रात: पातु परानन्दा मध्याह्ने माधवीश्वरी । सायाह्ने शक्तिमूलाश्च रात्रौरामाभिनन्दिनी ॥

इतीदं कवचं दिव्यं सर्वरक्षाकरं परम् । तस्यः सर्वार्थसिद्धिः स्यात् प्रातर्नित्यं पठेद्यदि ॥

सदानुग्रह सम्पन्ने श्रीमन्त्रार्थैकविग्रहे । कौशलेन्द्रप्रिये देवी रक्ष मां शरणागतं ॥

॥ इति श्रीसीतारक्षाकवचम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीजानकी नवकम्

ब्रह्मोवाच-

जनकजात्मजे राघवप्रिये कनकभासुरे भक्तपालिके ।

दशरथात्मजप्राणवल्लभे तव पदांबुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥१॥

मूलकासुरप्राणघातिके रामरक्षिते रामसेविते ।

राममोहिनि स्यंदनस्थिते त्वत्पदांबुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥२॥

राममञ्चकाधिष्ठिते रमे रामवीजिते रामलालिते ।

रामसंस्तुते रामरंजिते त्वत्पदाम्बुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥३॥

लोकपावनि श्रीरजे वरे भूमिकन्यके लोकपालिके ।

पद्मलोचने धरात्मजे परे त्वत्पदांबुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥४॥

कंजलोचने नागगामिनि स्वीयसत्सुखे रम्यरूपिणि ।

रुक्मभूषिते मौक्तिकांकिते त्वत्पदांबुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥५॥

जलरुहानने चित्रवासिनि त्वमवसि सर्वदा स्वीयसेवकान् ।

मुनिरिपून् सदा दुःखदायिके त्वत्पदांबुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥६॥

त्वन्मुखेक्षणाद्रक्षसां पतिः प्राप संक्षयं रामसत्प्रिये ।

त्वद्दृगेक्षणाल्लज्जिता मृगी त्वत्पदांबुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥७॥

कुशलवांबिके जलरुहानने जलरुहेक्षणे पापदाहिके ।

मधुरसुस्वने नूपुरस्वने त्वत्पदांबुजालिः शिरोऽस्तु मे ॥८॥

घ्राणमुत्तमं ते स्मितानने तेऽधरः शुभो बिंबसन्निभः ।

अद्य वै त्वया मूलकासुरो मारितो रणे तारिता वयम् ॥९॥

ब्रह्मणेरितं नवकमुत्तमं भास्करोदये पठति यः पुमान् ।

सर्ववांछितं लभति सोऽत्र ना प्राप्नुयात्सुखं रामसन्निधिम् ॥१०॥

॥ इति श्रीआनन्द रामायणे श्रीजानकी नवकं सम्पूर्णम् ॥

श्रीजानकी स्तुति

श्रीहनुमान् उवाच-

जानकि त्वां नमस्यामि सर्वपापप्रणाशिनीम् । दारिद्र्यरणसंहर्त्रीं भक्तानामिष्टदायिनीम् ॥

विदेहराजतनयां राघवानन्दकारिणीम् । भूमेर्दुहितरं विद्यां नमामि प्रकृतिं शिवाम् ॥

पौलस्त्यैश्वर्यसंहर्त्रीं भक्ताभीष्टां सरस्वतीम् । पतिव्रताधुरीणां त्वां नमामि जनकात्मजाम् ॥

अनुग्रहपरामृद्धिमनघां हरिवल्लभाम् । आत्मविद्यां त्रयीरूपामुमारूपां नमाम्यहम् ॥

प्रसादाभिमुखीं लक्ष्मीं क्षीराब्धितनयां शुभाम् ।

नमामि चन्द्रभगिनीं सीतां सर्वाङ्गसुन्दरीम्॥

नमामि धर्मनिलयां करुणां वेदमातरम् । पद्मालयां पद्महस्तां विष्णुवक्षःस्थलालयाम् ॥

नमामि चन्द्रनिलयां सीतां चन्द्रनिभाननाम्। आह्लादरूपिणीं सिद्धिं शिवां शिवकरीं सतीम् ॥

नमामि विश्वजननीं रामचन्द्रेष्टवल्लभाम्। सीतां सर्वानवद्याङ्गीं भजामि सततं हृदा ॥

॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे सेतुमाहात्म्ये श्रीजानकीस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

श्रीजानकीद्वादशनामस्तोत्र

विनियोग-

अस्य श्रीजानकीद्वादशनामस्तोत्रमन्त्रस्य नारदऋषिः अनुष्टुप् छन्दः

त्रिगुणात्मिका शक्तिः श्रीजानकी देवता श्रीसीताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ध्यान-

ध्यायेच्चम्पकगौराङ्गीं हेमाभां नीलवस्त्रकाम् ॥

दिव्यकल्पोज्वलाङ्गीं च रामवामस्थितां मुदा । रत्नसिंहासनगतां सर्वाभरणभूषिताम् ॥

सर्वालङ्कारसंयुक्तां वीणावादनतत्पराम् । ध्यायेत् सीतां हृदिगतां दिव्यस्त्रीगणसेविताम् ॥

स्तोत्र-

नमामि जनकनन्दिनी अजादिदेववन्दिनी । सदासुसन्तरञ्जिनी पिशाचगर्वगञ्जिनि ॥ १॥

मुनीन्द्रवासरागिणी श्रीरामवामभागिनी । सुबुद्धिदाप्रमोदिनी श्रीकोशलाविनोदिनी ॥ २॥

गुणादिवेदगायिनी सुभक्तसुखदायिनी । अनन्तदुःखमोचिनी नमोऽस्तु विश्वलोचनी ॥ ३॥

पुनीत नाम द्वादशं पठन्तित्यक्त आलसम् । प्रसन्नसर्वदेवकं वदन्ति रामसेवकम् ॥ ४॥

॥ इति श्रीजानकीद्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीजनकजाप्रपत्तिसार स्तोत्रम्

न वाग्वपुर्बुद्धिभिरेव कस्यचित् कदापि हिंसास्तु शरीरिणा वृथा ।

भवत्यदाम्बोरुह चिन्तनं विना न चाप यात्वदम्बुज वीक्षणेक्षणः ॥ १ ॥

हसन्तु निन्दन्तु वदन्तु दुर्वचो जनानियुक्ता हृदयस्थितेन वै।

केनापिदेवेन दयाश्रितं सदा न संस्थितिं स्वां प्रजहास्तु मे मनः ॥ २ ॥

निन्दाभयं मेऽस्तु तथा न जातु चिद्यथेह निद्रा चरणान्ममोरसि।

परोपकाराय सदास्तु मे मतिर्न चापकाराय कदापि कस्यचित्॥३॥

माक्रूर दृष्टिर्मम सत्सु भूयान्निरी क्ष्यमाणोस्य सकोप नेत्रैः ।

मासेवतस्तान विपक्वबुद्ध च साधून्मदो मे हृदयं वृणोतु ॥४॥

अपात्र पूजा न च पात्रहेलनं तिरस्क्रिया नाप्यपराध्यतां सताम्।

अदण्डय दण्डेस्तु न में कृतघ्नता मयो क्रिया कापि विदेहनन्दिनी ॥ ५ ॥

योषित्सु सर्वासु च मातृबुद्धिस्तथास्तु मे स्वसृमति:प्ररूढाः।

बालेषु सर्वेषु च बन्धुबुद्धिर्मानीच बुद्धिः सततं ममास्तु ॥६॥

विश्वासघातो न तथा कदर्यता नाभक्ष्यपेयाशनपानमस्तु मे।

न शास्त्र संवर्जित कर्मसुस्पृहा कदापिभूयान्महिते महीयसाम्॥७॥

सहिष्णुता क्षान्तिरमन्दशुमुषीवात्सल्यताऽव्याज कृपा विनम्रता।

उदारता ह्री मृदुता सुशीलता न जातु चैता हृदयं त्यजन्तु मे॥८॥

मदाश्रिताः क्लेशयुता न सन्तु वै विशेषतो भागवता उपेक्षया।

नाऽग्यागताःक्रूरगिरा दृशार्दिता समुछवसन्तु स्मयदूषितात्मनः॥९॥

ऋते त्वदुच्छिष्टमथान्यवस्तुषु स्याद्भोग बुद्धिर्न कदापिमामकी ।

त्वदर्थमेवाऽखिलचेष्टितं हि मे भक्तापराधो न कदापि मां स्पृशेत्॥१०॥

रतिः प्रवृत्तौ विरतिर्निवृत्तौ सङ्गोऽसतां नास्तु सतामसङ्गः।

सर्वेषु सर्वास्वनुरागदृष्टिर्मा दोषदृष्टिर्मम कर्हिचित्स्यात् ॥ ११ ॥

स्वभृत्यसंपोषणसक्तचेतसा नोपेक्षितःसन्तुमया-त्वदाश्रिताः।

लोभाद्भयाद्वा निजधर्मवर्जिताः क्रियास्तु नो कापि तवानुकम्पया ॥१२॥

स्वन्पोषमं मानुषमेत्य जन्म स्ववर्वासिमृग्यं क्षण भङ्गुरं च ।

वैरं न कुर्यां तव तुष्टिकामः केनाप्यहं श्री निमिवंश भूषे॥१३॥

न्यायालयं ते क्षमता प्रधानं न्यायप्रधानं न वदन्ति सन्तः ।

क्षान्तिरप्रधाना मातरस्तु तस्मायायप्रधाना न मम क्षमाब्धे ॥ १४॥

भयं न मे स्याच्चरतः स्वधर्मं कालादपिं प्राप्तविवेक दृष्टेः।

मत्तस्तथा तन्न पिपीलिकानां सौभाग्यमेतत्कृपया प्रयच्छ॥१५॥

स्वशिक्षये वा दृढयन्स्वधर्मे समाश्रितान्भागवते प्रधाने।

अनेक सांसारिक भोगशक्तं न काङ्क्षितं जन्म चिराय लोके ॥ १६॥

त्वद्धामवासस्तव कीर्ति गानं त्वन्नामसंकीर्तन मेव नित्यम्।

अम्बाशुभोत्सङ्ग विहारशीले स्वरूपसञ्चिन्तनमस्तु मह्यम् ॥ १७॥

अन्यान्य देवार्चन वन्दनस्मृतिस्तवप्रपत्तिः श्रवणानुरागिता ।

स्वप्नेऽपि भूयादिह भक्तिकोटिका नानन्यता पाठपरायणस्यमे ॥ १८ ॥

पूज्यानुवन्द्या परिभावनीयाज्ञेयानुज्ञेया समुपासनीया ।

श्रेयः परं काङ्क्षिभिरात्मनिष्ठैस्त्वमेवहित्वाखिल कर्म जालम् ॥ १९ ॥

स मे पिता सा जननी स बन्धुः सखा स दाता स पतिः गुरुःसः ।

कृपालुतोपेक्षित सर्वदोषः सेवा सहायो य इहास्त्वमीहः ॥ २० ॥

परमलालनैः पाल्यते त्वया निरयकर्म कृन्मादृशो जनः ।

करुणया यया हेतुहीनया कुरु न मां तया सेवयोज्झितम्॥२१॥

विनय एव मेज्यऽहि साञ्जलिः सुनयनाकभूषे प्रसीदतम् ।

अनुदिनं तवोच्छिष्ट जीवतो वनरुहाक्षि मो चेत्तु का गतिः ॥ २२ ॥

॥ इति श्रीजनकजाप्रपत्तिसार स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीजानकीरक्षाकवचम्

श्री जानक्या जगन्मातुः रक्षाकवचमुत्तमम्। सर्वरक्षाकरं दिव्यं श्रूयतां सर्वसौख्यदम् ॥

ईशान्यामीश्वरी पातु आग्नेयामतुलप्रभा। नित्यानन्दा तु नैर्ऋत्यां वायव्यां भक्तवत्सला ॥

पूर्वे परमेश्वरी पातु दक्षिणे तु दयार्णवा। पश्चिमे पुण्यश्लोका च उत्तरे उर्विजा सदा ॥

ऊर्ध्वे उद्यच्छतार्का च अधस्तादघहारिणी। श्रीसीता सर्वतः पातु सदा श्रीरामवल्लभा ॥

रक्षाकवचमेतत्तु श्रीजानक्यामुदाहृतम् । यः पठेत्परया भक्त्या स रक्षितश्च सर्वदा ॥

॥ इति श्रीजानकीरक्षाकवचं सम्पूर्णम् ॥

श्रीजानकी त्रैलोक्यविजय कवचम्

अस्य श्री जानकी देव्याः कवचं लोक दुर्लभम्।

तवस्नेहात् प्रवक्ष्यामि सर्वसारारव्ययमुत्तमम् ॥

जगद्धात्री महाशक्तिर्महामायेति जानकी। तस्याः कवचं विप्रेन्द्र कः क्षमो गुणवर्णने ॥

कवचं जानकी देव्यास्त्रैलोक्य विजयप्रदम् । यस्य प्रपठनात् मर्त्यलोक्य विजयी भवेत् ॥

पठनात् श्रवणात् यस्य ब्रह्मा विष्णु शिवादयः। विश्वोद्भवलयादीनां शक्तिमन्तो भवन्त्यपि ॥

ध्यानं तस्याः प्रवक्ष्यामि सर्वेषां मुक्तिदायकम्। दुर्लभं चैव विबुधां सर्वदा शंकरप्रियम् ॥

ध्यान-

सर्वशक्तिमयीं सीता द्विभुजां सुस्मिताननाम्। गौरवर्णां विशालाक्षीं नीलवस्त्र धरापराम् ॥

रक्तभूषण संयुक्तां रत्नरत्नोपशोभिताम्। सगुणां निर्गुणां चैव महामाधुर्य सान्विताम् ॥

गोलोकमण्डले रम्ये सन्तानक वनान्तरे। सखिभिः कोटिभिर्युक्तां रत्नसिंहासनस्थिताम् ॥

कोटिसूर्यप्रतिकाशां सचिदानन्दविग्रहाम् । परिपूर्णतमां शक्तिं प्रभामण्डलमण्डिताम् ॥

सर्वेषां बीजरूपां च योगीन्द्रैरभि वन्दिताम्। श्रीरामवल्लभां सीतां चिन्तयेद्भक्तवत्सलाम् ॥

विनियोग-

अस्य श्रीजानकी कवचस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः

श्रीजानकी आह्लादिनि शक्तिर्देवता सर्वकार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

कवच-

जानकी मे शिरः पातु भालं जनकनन्दिनी। नेत्रयुग्मं च वैदेही श्रोत्रयुग्मं वरानना ॥

सीता मे च मुखं पातु स्कंधौ पातु हरिप्रिया। हृदयं मे जगद्धात्री नाभिं मे रामवल्लभा ॥

महामाया कटिं पातु जानुनी धरणीसुता। पादयुग्मं सदापातु रक्षःकुलविनाशिनी ॥

पूर्वे तु मां सदा पातु राघवेन्द्रप्रियसखी। मूलप्रकृतिर्याभ्यां च प्रतीच्यां सर्ववन्दिता ॥

सर्वशक्ति स्वरूपा च कौवेर्या परिरक्षतु । इदं हि सर्वसाराख्यं जानक्याः कवचं परम् ॥

भुक्ति मुक्ति प्रदातारं देवानामपि दुर्लभम् । मन्त्राणां बीजरुपश्च बीजानां बीजमव्ययम् ॥

पावनं पावनानां च सर्वपापौघनाशनम्। सर्वाभीष्टप्रदं चैव सर्वारिष्ट निवारणम् ॥

सिद्धिदः साधकानां हि सर्वेषामर्थदायिकम् । श्रीरामचरणाम्भोजे दृढ भक्तिप्रदं शुभम् ॥

यः पठेत् धारयेत् नित्यं सदा सर्वगतः सुखी। सीता तस्य गृहं त्यक्तवा नैव याति कदाचन ॥

विलिख्य भूर्जपत्रे च स्वर्णस्थं धारयेद्यदि। कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥

जानक्याः कवचं नित्यं यः पठेत् वैष्णवोत्तम। सर्वपाप विनिर्मुक्तो ब्रह्मानन्द सुखं लभेत् ॥

सर्वशक्तिमयी सीता गुणातीता चिदात्मिका। निमिषार्द्धे जगत्सर्वं करोति विकरोति च ॥

ईशानी सर्वजीवानां ब्रह्माणी ब्रह्ममन्दिरे। विष्णुगृहे च लक्ष्मी स्यात् पार्वती शंकरप्रिया ॥

माहेश्वरी पराशक्ति योगमायेति जानकी। नाना रूपधरा सीता क्रीडते रामसन्निधौ ॥

तस्यास्तु जानकी देव्याः कवचं देवि गोपितम्। गुह्याद्गुह्यतरं सारं न वक्तव्यं कदाचन ॥

यन्मया सर्वसाराख्यं तव स्नेहात् प्रकाशितम् । यस्मै कस्मै न दातव्यं प्राणात्प्रियतमं मम॥

॥ इति श्री ब्रह्मसंहितायां श्री जानकी त्रैलोक्यविजय कवचं सम्पूर्णम् ॥

श्रीरामवल्लभा स्तोत्रम्

नीलनीरजदलायतेक्षणां लक्ष्मणाग्रजभुजावलम्बिनीम् ।

शुद्धिमिद्धदहने प्रदित्सतीं भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ १ ॥

रामपदविनिवेशितेक्षणामङ्गकान्तिपरिभूतहाटकाम् ।

ताटकारिपरुषोक्तिविक्लवां भावये मनसि रामवल्लभाम्॥ २ ॥

कुन्तलाकुलकपोलमाननं राहुवक्त्रगसुधाकरद्युतिम् ।

वाससा पिदधतीं ह्रियाकुलां भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ३॥

कायवाङ्मनसगं यदि व्यधां स्वप्नजागृतिषु राघवेतरम् ।

तद्दहाङ्गमिति पावकं यतीं भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ४ ॥

इन्द्ररुद्रधनदाम्बुपालकैः सद्विमानगणमास्थितैर्दिवि ।

पुष्पवर्षमनुसंस्तुताङ्घ्रिकां भावये मनसि रामवल्लभाम्॥५॥

संचयैर्दिविषदां विमानगैर्विस्मयाकुलमनोभिवीक्षिताम्।

तेजसा पिदधतीं सदा दिशो भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ६ ॥

॥ इति श्री श्रीरामवल्लभा स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीसीतावतार स्तुति

भई प्रगट कुमारी भूमि-विदारी, जन हितकारी भयहारी ।

अतुलित छबिधारी मुनि-मनहारी जनकदुलारी सुकुमारी ॥

सुन्दर सिंहासन तेहिं पर आसन कोटि हुताशन द्युतिकारी ।

सिर छत्र बिराजै सखिसंग भ्राजै, निज-निज कारज करधारी ॥

सुर सिद्ध सुजाना हनै निसाना चढ़ै बिमाना समुदाई ।

बरसहिं बहु फूला मंगलमूला अनुकूला सिय गुन गाई ॥

देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े सुख बाढ़े उर अधिकाई ।

अस्तुति मुनि करहीं आनँद भरहीं पायन परहीं हरषाई ॥

ऋषि नारद आए नाम सुनाए सुनि सुख पाए नृप ज्ञानी ।

सीता अस नामा पूरन कामा सब सुखधामा गुन खानी ॥

सिय सन गुनिराई बिनय सुनाई समय सुहाई मृदुबानी ।

लालनि तन लीजै चरित सुकीजै यह सुख दीजै नृप रानी ॥

सुनि मुनिबर बानी सिय मुसकानी लीला ठानी सुखदाई ।

सोवत जनु जागीं रोवन लागीं नृप बड़भागी उर लाई ॥

दम्पति अनुरागेउ प्रेम सुपागेउ यह सुख लागेउ मन लाई ।

अस्तुति सिय केरी प्रेमलतेरी बरनि सुचेरी सिर नाई ॥

दोहा-

निज इच्छा मखभूमि ते प्रगट भईं सिय आय ।

चरित किए पावन परम बरधन मोद निकाय ॥

॥ इति श्रीसीतावतार स्तुति सम्पूर्णा ॥

परिशिष्ट प्रकरण

सहस्रमुखरावण संहन्त्री भगवती सीता

श्रीअद्भुत रामायण के अनुसार

जब श्रीराम जी ने रावण वध कर दिया तथा उनका राज्याभिषेक भी हो गया तब चारों दिशाओं से अगस्त्य, विश्वामित्र आदि अनेक ऋषि प्रभु से मिलने के लिए अयोध्या में आए। भगवान् श्रीराम जी उन सभी मुनियों से पत्नी तथा भ्राताओं सहित अति विनम्र भाव से मिले तथा उनका पूजन करा। इसके बाद जब वे सब ऋषि अपने-अपने आसनों पर आसीन हो गए तब उन सबने रावण वध करके सभी ऋषियों, देवताओं आदि पर अनुग्रह करने के लिए भगवान् श्रीराम जी की अत्यंत प्रशंसा करी तथा उनके अत्यंत सुंदर रूप का भी वर्णन करा फिर वे मुनि बोले कि इस सबमें महादेवी सीता को महान कष्ट झेलना पड़ा है। इस बात का स्मरण करने पर हमारा मन उद्विग्न हो रहा है। जब मुनियों ने बारम्बार ऐसी दयार्द्र वाणी कही तब माता श्रीसीता जी हँसने लगीं और उन मुनियों से बोलीं- हे विप्रो ! रावण वध के संबंध में मुनि जनों ने जो प्रशंसा के वचन कहें हैं वे सब तो परिहास के रूप में कहे जाने योग्य हैं। निःसन्देह रावण अत्यन्त दुराचारी था तथा उसने सबको चिंतित कर रखा था तो भी उसका वध करना कोई विशेष सराहनीय कार्य नहीं कहा जा सकता। यह सुनकर सभी मुनि आश्चर्यचकित हो एक दूसरे को देखने लगे और कहने लगे कि अयोनिजा सीता हमारी बातों को हास्यास्पद समझ रहीं हैं। इसके मूल कारण से हम पूर्णतः अनभिज्ञ हैं। उनके ऐसे वचन सुनकर भयविह्वल माता सीता ने करबद्ध हो उन्हें प्रणाम कर कहा- हे मुनिजनो ! मैं पामर जीवों की भाँति मिथ्यावादिनी नहीं हूँ। यदि आपकी आज्ञा हो तो सब कुछ कह सुनाऊँ। तब सभी ऋषियों की अनुमति पाकर तथा पति, देवर, मन्त्री आदि प्रमुख व्यक्तियों के आदेश से माता सीता बोलीं- जब मेरा विवाह नही हुआ था और मैं अपने पिता के घर रहती थी तब हमारे यहाँ चातुर्मास पर्यन्त वास करने के लिये एक ब्राह्मण का आगमन हुआ तथा मेरे धर्मपरायण पिता ने मुझे उनकी सेवा-परिचर्या

में लगा दिया। मैं उनकी नियम पूर्वक सेवा करती थी। वे मेरी सेवा से प्रसन्न रहते थे और मुझे अनेक कथाएँ सुनाते थे। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा- हे सीते ! सुमाली राक्षस की कैकसी नाम की एक पुत्री जिसका विवाह विश्रवा मुनि से हुआ था। उसके सहस्रमुख तथा दशमुख नामक दो पुत्र जन्मे। उनके जन्म के बाद देवताओं ने आकाशवाणी द्वारा कहा कि रावण दो हैं। रावण तो दो हुए परन्तु उनका नाम एक ही था। उन दोनों में जो कनिष्ठ था वह शिव जी का कृपाभाजन बनकर लंका में रहता था और ब्रह्मा जी के वरदान के बल से त्रैलोक्य का अनादर किया करता था। तथा उसका ज्येष्ठ भ्राता सहस्रमुख रावण लोकों को रुलाने वाला था। वह अपने प्राकृतिक बल के कारण पुष्करद्वीप में निवास करता था। वह सहस्रमुख रावण सूर्य-चन्द्र को भी पकड़कर उनसे भी गेंद की भांति खेल सकता है। वह कुलाचल पर्वतों को लेकर गेंद के समान उनसे खेलता रहता है। मानसरोवर पर्वत के उत्तरांचल में निर्मित नगरों का भेदन कर महात्मा दिक्पालों का उसने संग्रहण किया है। उसी स्थान में वह अपने नाना के परिवार सहित निवास करता है। वहीं पर एक सुरम्य इन्द्रपुरी है जिसमें वह स्वयं रहा करता है। उस राक्षसपति के अनेक मंत्री हैं। उसकी नगरी जीवधारियों के लिए अतीव दुर्लभ है। संसार के सार भाग को लेकर उस नगरी की रचना की गयी है। वह नगरी देवों तथा स्वर्गवासियों के अनुभव से भी परे है। महात्मागण भी उस पुरी में निवास करने की मनोभिलाषा से तपश्चर्या किया करते हैं। उस नगरी पर निशाचरपति सहस्रमुखी रावण का आधिपत्य है। वह रावण समस्त संसार को अपने भुजबलाधीन करके वहाँ का शासन करता है। उस रावण ने इन्द्रादि देवों, किन्नरों, गंधर्वों, दानवों, नागों तथा विद्याधरों को जीत रखा है। वह उन सबके साथ नित्य ही बालक्रीड़ा के समान खेल, खेलता रहता है। वह सुमेरु पर्वत को सरसों, समुद्र को गाय के खुर तथा सम्पूर्ण भुवनों को तिनके के समान समझता है। द्वीपों को मिट्टी के ढेले के समान समझने वाले उस रावण के समान दूसरा वीर पुरुष नही है। जब वह समस्त लोकों को त्रस्त करने लगा तब उसके पितामह पुलस्त्य मुनि तथा पिता विश्रवा मुनि ने उसे अपनी मधुर वाणी में 'हे तात, वत्स!' आदि कहकर उसे निवारित किया। हे जनकात्मजे! इस प्रकार वह महान पराक्रमी सहस्रमुख रावण उस पुष्करद्वीप में निवास किया करता है। हे जनकनन्दिनि ! उस

रावण का अनुज दशमुख रावण लंकापुरी में राज करता है। इस प्रकार वह ब्राह्मण अनेक विचित्र कथाएँ सुनाकर चातुर्मास्य पूर्ण कर तथा मुझे और मेरे पिता को आशीर्वाद देकर तीर्थ यात्रा करने के लिए चले गए। हे विप्रों ! सहस्रमुख रावण की कथा सुनकर मैं आश्चर्यान्वित हो उठी। मैं अब तक वह कथा भूली नही हूँ। वह मेरे मन में अब तक सजीव रूप से बनी हुई है। मेरे पतिदेव ने दशमुख रावण का अपने भुजबल से वध करके उसे उसके पुत्रों, सेवकों, भ्राताओं तथा बान्धवों सहित यमलोक भेज दिया, मेरे कारण उसकी नगरी को भस्म करा तथा समुद्र पर सेतु का निर्माण भी किया। उन्होंने कपिराज सुग्रीव तथा हनुमान के सहयोग से लोकहितार्थ अद्भुत और चमत्कारपूर्ण कार्य किये हैं। परंतु इतना सब होने पर भी मुझे वे सब घटनाएँ कुछ विस्मयकारिणी नहीं लगतीं। अब यदि मेरे स्वामी उस दुर्दान्त दुरात्मा सहस्रमुख रावण का भी संहार कर दें तो उनकी कीर्ति और उज्ज्वल हो जाएगी तथा जगत स्वास्थ्य-लाभ कर सकेगा। हे अग्नि सदृश विप्रो ! अतः आप मेरी हास्ययुक्त वाणी को क्षमा कर दें। इन सब वचनों को सुनकर समस्त मुनिगण धन्य-धन्य बोलकर जगत की हिताकांक्षिणी माता जानकी की सराहना करने लगे। सीता जी द्वारा ऐसे पौरुषवर्धक वाक्य सुनकर भगवान् श्रीराम जी सिंहगर्जन करते हुए उच्च स्वर से सबको आदेश देने लगे। वे बोले- हे ऋषिजनो ! हम आज ही उस रावण पर विजय पाने के लिए प्रस्थान कर रहे हैं। तत्पश्चात् लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न को भी युद्धभूमि में चलने की आज्ञा देकर वे पुनः बोले- हम अपने सखा सुग्रीव, हनुमान्, जाम्बवान् तथा समस्त सैनिक गणों के सहित वहाँ जायेंगे। महाबाहु श्रीराम ने ऐसा कहकर पुष्पक विमान का आवाहन करा। आवाहन करते ही पुष्पक वहाँ उपस्थित हो गया। उस विमान पर सर्वप्रथम श्रीराम सवार हुए, तदनन्तर समस्त योद्धागण, भरत, लक्ष्मण शत्रुघ्न उसपर आरूढ़ हुए। तत्पश्चात् वानरों के सहित कपिराज सुग्रीव तथा अपने राक्षसगणों के सहित महाबाहु विभीषण पुष्पक पर आरूढ हुए। सभी सीता जी की प्रेरणा तथा श्रीराम जी की आज्ञा लेकर अपने माता-पिता को सूचित किये बिना ही उनके साथ चल पड़े। श्रीराम के सुमन्त्रादि मन्त्री तथा मुनिगण भी वहाँ से निकल पड़े। फिर मन, वायु तथा गरुड़ के तुल्य वेग वाला पुष्पक विमान क्षणभर में पुष्कर द्वीप पहुँच गया। वहाँ पहुँचने पर सभी वीर चकित हो

गए। सहसा उनके मुख से निकल पड़ा- 'यह कैसा आश्चर्यजनक है'। तब प्रभु श्रीराम जी ने वानरों तथा भ्राताओं के सहित सिंहनाद करते हुए अपने धनुष को कर्षित किया। उनके धनुषाकर्षण जनित घोर शब्द के कारण समस्त पृथिवी सहित अंतरिक्ष का भेदन हो उठा। उससे पाताल के विवररन्ध्र भी पूरित हो गये। तब वह सहस्रमुख रावण 'यह सब क्या है' ऐसा कहता हुआ एकाएक उठ पड़ा। उसके साथ ही सभी राक्षस क्रोधित होकर एक साथ निकल पड़े और बोले- यह घोरगर्जन के शब्द कहाँ से आ रहे हैं, यह हम सबको पता लगाना चाहिए। तब वह राक्षसराज अपने बलवान राक्षसों के सहित क्रोध से अधरों को चबाता हुआ वेगपूर्वक निकला। वह सहस्रमुख रावण द्वादश आदित्यों के समान महान बलवान था। उसके दो सहस्र हाथ तथा दो सहस्र नेत्र थे, वह महामेघ के सदृश राक्षस अत्यंत क्रोधित होकर अपने सौ योजन के विस्तार वाले रथ पर अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लेकर प्रभु श्रीराम जी के सम्मुख आ खड़ा हुआ। उसने अत्यंत क्रोध से पूछा- मेरी नगरी में आकर सिंह के समान गर्जन करने वाला कौन है ? इस जगत में मेरा भी कोई शत्रु हो सकता है, यह बात मेरे लिए अत्यन्त निन्दनीय है। इन्द्रादि समस्त लोकपाल तो मेरे सेवक के तुल्य हैं। मैं यदि चाहूँ तो पाताल-रन्ध्रों में स्वर्ग को तथा स्वर्गलोक में पाताल तथा मानवों को भी एक साथ भर दूँ। मैं सुमेरु आदि पर्वतों को भी चूर्ण कर सकता हूँ। स्वर्गलोक को मर्त्यलोक और मर्त्यलोक को स्वर्गलोक में परिवर्तित कर सकता हूँ। पृथिवी तथा शेष को तो मैं अपने नाखूनों की नोक से उखाड़ सकता हूँ और पहले मैं यह किया भी करता था परन्तु ब्रह्मा जी ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया था। यदि वे मुझे न रोकते तो मैं इस भूतल पर राक्षसों के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्राणी को रहने न देता। सूर्य-चंद्र के रूप में स्थित होकर केवल मैं ही तिथियों का निर्धारण करता। मैं इन्द्र, यम, कुबेर आदि के पद भी सम्भाल सकता हूँ। इस प्रकार वह राक्षस विविध भाँति से गरजता हुआ अपने सेनापतियों के साथ श्रीराम के निकट आ गया। उसके सेनापति प्रबल पराक्रम वाले योद्धा थे, वे सब नाना प्रकार के वाहनों पर बैठकर प्रभु श्रीराम जी से युद्ध करने के लिए चल पड़े। इन सबने तथा उस रावण के पुत्रों ने भी प्रभु जी की सेना पर आक्रमण कर दिया। तत्पश्चात् कुबेर का कनिष्ठ भ्राता वह सहस्रमुख रावण अपने धनुष का टंकार करता हुआ मन

में विचार करने लगा कि यह कौन है और यहाँ किस कारण से आया है तब उसी क्षण उसे आकाशवाणी सुनाई पड़ी कि हे अमोघ वीर्य रावण ! ये साक्षात् धर्म के स्वरूप अवधनरेश श्रीरामचन्द्र जी हैं। इन्होंने लंका में परनारी का हरण करने वाले तुम्हारे अनुज का वध कर दिया है। ये विभीषण को राज्य देना चाहते हैं और अपने भाइयों, वानरों, भालुओं, राक्षसों तथा मनुष्यों के सहित तुम्हारा वध करने के लिए यहाँ आए हैं। यह सुनकर रावण दोगुने क्रोध से कुपित होकर बोल उठा- इसका वध कर दो। यह मेरे जैसे विश्वविजेता से साक्षात् युद्ध के लिए कैसे तत्पर हुआ। ऐसा कहकर वह पुष्पक विमान पर चक्र, पर्वत, तोमर तथा बाणों की वर्षा करने लगा तथा राक्षस भी वानरों से युद्ध करने लगे। जब श्रीराम जी की सेना ने राक्षस सेना का नाश कर दिया तब सहस्रमुख रावण स्वयं ही युद्ध के लिए आ गया और क्षण भर में ही समस्त वानरों आदि को मारने की सोचने लगा परन्तु फिर उसने पुनः विचार करा कि ये सब तुच्छ प्राणी अपना सर्वस्व त्याग कर मुझसे युद्ध करने आए हैं परन्तु यदि मैं इन तुच्छ मनुष्यों, वानरों, भालुओं तथा राक्षसों को मार भी दूँ तो मुझे क्या लाभ ? क्योंकि छुद्र जीवों पर बाण का प्रहार करने को पंडित जन प्रशंसा योग्य कार्य नही मानते। अतः ये जहाँ से आए हैं इन्हें पुनः उसी स्थान पर पहुँचा देना ही उचित होगा। यह निश्चयकर उसने वाय्व्यास्त्र से उन सबको उनके घरों में पहुंचा दिया। भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, सुग्रीव, हनुमान्, विभीषण आदि सब उस अस्त्र के प्रभाव से अपने-अपने गृहों में पहुँचकर विस्मित हो गए कि हम यहां कैसे आ गए और श्रीराम की चिंता करने लगे। पुष्कर द्वीप में बस भगवान् श्रीराम जी ही माता श्रीसीता जी के सहित पुष्पक विमान में स्थित रहे। उस राक्षस का वह अस्त्र प्रभु पर कुछ भी प्रभाव न दिखा सका। ऋषिगण भी यह सब देख चकित रह गए। परन्तु सीता माँ पवित्र हँसी से युक्त होकर वहीं स्थित रहीं। तब श्रीराम की सेना को न देखकर समस्त ऋषि शांतिपाठ करने लगे, सभी अंतरिक्षचारी प्राणियों में हाहाकार मच गया तथा देवता कहने लगे कि रावण ने यह क्या कर दिया। जिस समय भगवान विष्णु गरुड पर बैठकर सहस्रमुख रावण को मारने गए थे, उस समय रावण ने अट्टहास करते हुए उन्हें अपने बाएँ हाथ से खेल में ही खारे जल वाले सागर के पार फेंक दिया था। तबसे सब देवतादि उसकी गंध से भी भागने लगे। इस समय सब देवता

एक-दूसरे से कहने लगे कि श्रीराम के रावण पर विजय पाने से ही सबका भला होगा। उस समय भगवान् श्रीराम जी को तुच्छ जीव मानकर रावण गर्जन करने लगा। उसके दुष्कर कर्म को देख राम जी भी विस्मयान्वित हो गए। तब रावण का संहार करने हेतु भगवान् श्रीराम जी अत्यन्त क्रोध से भर गये। उस समय रावण श्रीराम को देखकर किलकारी भरने लगा। उसके इस कृत्य से उसे पराजित करने के लिए श्रीराम क्रोधाग्नि में जलने लगे। इसके परिणामस्वरूप रावण द्वारा श्रीराम पर प्रहार करने की अशक्यता से समस्त पृथिवी, समुद्र तथा ग्रहादि काँपने लगे। तब शत्रुविमर्दक भगवान् श्रीराम क्रोध से भरकर राक्षसों को मारने लगे। वे इतनी तेज बाण चलाते थे कि कोई देख ही नही पाता था कि उन्होंने कब बाण निकाला, कब उसे धनुष पर रखकर डोरी को खींचा और कब छोड़ दिया। वे अपने बाणों से निशाचरों के टुकड़े करने लगे। भगवान् श्रीराम जी ने शत्रु सेना का इस प्रकार संहार कर डाला जिस प्रकार प्रलय काल में भगवान् रुद्र प्राणियों का संहार करते हैं। प्रभु का यह दुर्धर्ष कार्य देख रावण स्वयं आगे आकर युद्ध करने लगा और बोला कि अरे राक्षस सैनिकों ! खड़े-खड़े क्या देख रहे हो ? इस आए हुए शत्रु का वध मैं अकेले ही कर दूँगा। तत्पश्चात् उसने कई दर्पपूर्ण बातें कहीं और वह प्रभु को युद्ध के निमित्त ललकारने लगा। अब रावण को अपने सम्मुख देखकर भगवान् श्रीराम जी अत्यन्त प्रसन्न हो गए, तब उन दोनों में राजा बलि और देवराज इन्द्र के समान अद्भुत युद्ध होने लगा। उन दोनों में दिव्यास्त्रों से युद्ध होने लगा। परमास्त्रवेत्ता भगवान् श्रीराम जी ने राक्षसराज के अस्त्रों को विफल कर दिया। तब वह क्रोधित होकर राम जी पर प्रस्तर खंड बरसाने लगा तत्पश्चात् वह बाणों द्वारा प्रभु के बाणों को काटने लगा। उस क्षण श्रीराम को व्यग्र देख सिद्धों तथा परमर्षियों को ऐसा लगा मानो राहु चन्द्र देव को अपना ग्रास बना रहा हो। उसी क्षण रावण भी मानो सूर्य का स्पर्श करता हुआ ऊपर को उछल पड़ा। इधर भगवान् श्रीराम जी भी भृकुटि ताने क्रोध से नेत्र लाल किए हुए ऐसे प्रतीत हुए कि मानो रावण को भस्म कर देंगे। प्रज्ञावान् भगवान् श्रीराम जी के क्रोधाविष्ट मुख को देख समस्त जीव भयभीत हो गये तथा पृथिवी काँपने लगी। उस समय सिंह, शार्दूल सहित सम्पूर्ण पर्वत तथा तटीय वृक्ष भभक उठे और सभी पर्वत अत्यन्त क्षुब्ध सागर के समान जान पड़ने लगे। तब भगवान्

श्रीराम जी ने लंका में रावण को मारने के लिए जिस तेजवान् बाण का प्रयोग किया था उसी बाण को उन्होंने पुन: ग्रहण किया। वह बाण प्रभु श्रीराम जी ने पूर्वकाल में महर्षि अगस्त्य से प्राप्त करा था। इस बार भी उन्होंने बाण को तूणीर से बाहर निकाला। वह बाण ब्रह्मा जी द्वारा निर्मित था तथा इन्द्रादि देवों ने अपना तेज देकर उसे अमोघ शक्तिशाली बना दिया था फिर उस बाण को त्रैलोक्यविजय की इच्छा रखने वाले देवराज इन्द्र को ही प्रदान कर दिया गया था। उस बाण के पंखों में वायु, फल में अग्नि तथा सूर्य का निवास था, उसकी शरीराकृति आकाशमय थी तथा उसके गौरव में सुमेरु और मन्दर पर्वत समाए थे। उसकी गाँठों में लोकपाल, वरुण, कुबेर तथा स्वयं मृत्यु के अधिष्ठाता पाशधारी यमराज विद्यमान थे। वह बाण शरीर से दीप्तिमान, स्वर्णपंखों से अलंकृत तथा सूर्यदेव के तुल्य तेजस्वी था। वह धुएँ से आच्छादित, कालानल के समान, प्रकाश में सूर्य के समान जाज्वल्यमान एवं रथों तथा अश्वसमूहों का अतिशीघ्र भेदन करने वाला था। वह सहस्रों परिघास्त्रों तथा पर्वतों का भेदक, वैविध्यपूर्ण रक्तों द्वारा लेपित तथा चर्बी से आच्छादित और अत्यन्त कठोर था। वह काल के तुल्य, महाध्वनि के द्वारा विविध शक्तियों का विनाशक वैरियों का त्रासक तथा उड़नशील सर्पों के समान पंखों से युक्त था। वह बाण कौओं, गीधों, बकों, गोमायुओं, भेड़ियों तथा राक्षसों को नित्य ही आहार देने वाला और राक्षसों के लिए भयदायक था। शत्रु के यश का हरण करने वाले उस बाण को श्रीराम ने अपने उत्थान हेतु मन्त्र से अभिमंत्रित कर वेदोक्त विधान के अनुसार अपने धनुष पर उसका संधान किया तथा वेगपूर्वक उसे रावण पर चला दिया। रावण को मारने के लिए श्रीराम जी के द्वारा छोड़ा हुआ वह बाण धुआँ उगलता हुआ जल उठा तथा वायु तुल्य गति से आगे बढ़ा। देवराज इन्द्र के द्वारा छोड़े हुए वज्र के समान, अत्यन्त दुर्धर्ष, काल के तुल्य उस अमोघ बाण को देखकर रावण ने उसे हुँकार करते हुए अपने बाएं हाथ से पकड़ लिया तथा उसे अपनी जाँघ से कर्षित कर उसने उस बाण को तोड़ डाला। उस बाण के टूटने से भगवान् श्रीराम जी विक्षुब्ध होकर खड़े रह गये। तत्पश्चात् रावण ने क्रुद्ध होकर पूरी शक्ति के साथ एक प्रवर बाण चलाकर श्रीराम के वक्षःस्थल को वेध दिया। रावण द्वारा छोड़ा गया वह बाण श्रीराम के वक्ष को चीरकर पृथिवी का भेदन करके पाताल में समा गया। उस

बाण के आघात से श्रीराम पुष्पक विमान में धराशायी होकर निश्चेष्ट हो गये। ऐसी स्थिति को देखकर समस्त प्राणी हाहाकार करने लगे। पर्वतों तथा वनों के सहित धरती हिलने लगी। उस क्षण सभी ऋषियों के द्वारा 'हा राम' के शब्द गुंजित होने लगे। तब शत्रुविजेता सहस्रमुखी रावण समरांगण में अह्लादित होकर नृत्य करने लगा, नभमण्डल से पृथिवी पर उल्कापात होने लगा। इस प्रकार की स्थिति देख सभी प्राणी अपने मन में प्रलयकाल का आकलन करने लगे। श्रीराम को मूर्च्छित देखकर ऋषिगण भय से कातर हो गए और कुछ मुनिगणों ने तो हाहाकार का स्वर करते हुए शान्तिपाठ करना आरम्भ कर दिया। ऐसी विकट परिस्थिति में भी सीता जी के मुख पर हास्यपूर्ण मुस्कुराहट को देखकर वसिष्ठादि महामुनियों ने सीता जी से कहा- हे सीते ! तुमने इस रावण के वृत्तान्त का वर्णन ही क्यों किया ? हे जनकनन्दिनि ! उसी के कारण यह भीषण तथा अकल्पित परिणाम उत्पन्न हुआ है। समस्त भाई-बन्धु तथा वानर न जाने कहाँ चले गये। हे भद्रे ! सभी मन्त्रीगण किधर गये ? राम की यह कैसी स्थिति हो गई। तब सीता जी ने मुनिजनों के ये वचन सुनकर तथा श्रीराम को पुष्पक विमान में मूर्च्छित अवस्था में देखकर उनका आलिंगन किया और अपने कमलवत् नेत्रों को उस समर में उन्मीलित किया। तब उस महाबली राक्षस को शब्द करता देखकर जनकतनया माता श्रीजानकी जी ने उच्चस्वर से अट्टहास करते हुए अपने स्वाभाविक रूप को त्याग दिया और अपना विकट रूप धारण कर लिया। माता सीता अपने उस रूप में क्षुधार्त, कोटराक्षी, क्रोध से चक्र के समान घूमते नेत्रों वालीं, दीर्घ जँघाओं वालीं, कर्कश स्वर वालीं, मुण्डमाला धारण किये तथा हड्डियों की किंकिणी धारण किये, महान वेग तथा पराक्रम वालीं, भयंकरी, तीक्ष्ण स्वर निकालने वालीं, अत्यन्त भीषणा, विकृता तथा विकृतमुखी, चतुर्भुजा, विशालतुण्डा तथा शिर पर प्रदीप्त शिरोभूषणधारण करी हुईं, लपलपाती जीभ वालीं, जटाजूट से विभूषिता, प्रचण्ड रोमावली वालीं, प्रलय सागर तथा काल के तुल्य घण्टा तथा पाश को धारण किये हुए थीं। अपने ऐसे रूप में माता सीता पुष्पक से नीचे उतर पड़ी। वे हाथों में खड्ग तथा खप्पर धारण करे हुए क्षणभर में ही रावण के रथ पर उसी प्रकार झपट पड़ीं जिस प्रकार बाज पक्षी की मादा अपने शिकार पर एकाएक झपट कर उसे दबोच लेती है। तत्पश्चात् क्षणभर में ही

लीलापूर्वक उन्होंने अपनी खड्ग से रावण के हजार शिरों को काट गिराया और इसके अतिरिक्त अन्य वीरों के शिरों को भी उन्होंने अपने नाखूनों से फाड़कर उन सभी दुष्कर्मियों को भूमि पर पाट दिया। उन्होंने किन्हीं-किन्हीं की आँतों को तीक्ष्ण नाखूनों से विदीर्ण कर दिया तो किन्हीं-किन्हीं के पैरों को तलवार के प्रहार से भग्न कर डाला। कुछेक वीरों के अवयवों के उन्होंने खड्ग से काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डाले तो कुछ को अपने पदाघात से मारकर उनकी अंतड़ियाँ बाहर निकाल दी। जगदम्बा सीता जी अपने अगल-बगल के निशाचरों को पार्श्व भाग से ताड़ित करने लगी तो किसी-किसी को शरीर से निर्गत होने वाले प्रचण्ड पवन के झकोरे से ही उन्होंने नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। भीमरूपा जानकी ने राक्षसों में भयंकर प्रलय मचा दिया। कुछ राक्षसों के तो उन्होंने अट्टहास करते हुए अपने पृष्ठभाग से ही दो टुकड़े कर डाले। कुछ राक्षसों को उन्होंने केशों से पकड़कर भूमि पर पीस डाला। कुछेक को उनके रथ, हाथी, घोड़े तथा तोमरों सहित नीचे खींचकर समुद्र में जलमग्न कर दिया तथा कुछ का गला घोंटकर ही उनको मार डाला। उन्होंने कुछ के कंधों पर उछल कर उनके शिर फोड़ डाले तो किन्ही के अट्टहास करते हुए हुँकार मात्र से ही प्राण निकाल लिये। उन्होंने किन्हीं-किन्हीं राक्षसों के शिर को चकनाचूर कर उनका वध कर डाला। इस प्रकार पलभर में ही जनकनन्दिनी ने उन सबका संहार कर दिया। अब वे उनके मुण्डों की माला पहन कर उस समरांगण में रावण के कटे शिरों को लेकर कन्दुक-क्रीड़ा करने की इच्छा करने लगीं। उनके अंतर्मन में यह इच्छा होते ही उनके रोमछिद्रों से अनेक विकटाकार माताएँ प्रकट होकर अट्टहास करती हुईं उस स्थान में आ गयीं तथा वे सभी गेंदक्रीड़ा में सीता जी का सहयोग करने लगीं। वे सब पर्वत शृंग के समान राक्षसों के मस्तकों को लेकर जानकी के साथ खेलने लगीं। कोई-कोई गले में मुण्डमाल डाले थीं तो कोई उन मुण्डों का आभूषण धारण किये थीं। गीध, कौए, शृगालों तथा मांस, रक्तादि के कीचड़ से युक्त पुर के समान प्रतीत हो रहे उस घोर समरांगण में महाकाली महाबला महाघोरा माता सीता नृत्य करने लगीं। इस कारण जिस प्रकार कोई नाव वायु के प्रबल झोंके के कारण नदी में डगमगाने लगती है उसी प्रकार धरती भी हिलने लगी तथा पर्वत और सागर कम्पायमान हो गये। आकाश में स्थित देवताओं के विमान भयभीत होकर गिरने लगे तथा

भगवान् सूर्य के घोड़े भी अपनी राह से भटकने लगे। जब पृथिवी सीता जी का भार न सह सकी और जानकी जी के चरणाग्र से पीड़ित होकर पाताल में धँसने लगी तब सीता जी और मातृकाओं के अट्टहास तथा हुँकारध्वनि से सभी लोग 'यह क्या हुआ' कहने लगे और प्रलय होने का अनुमान करने लगे। तब पृथिवी को पाताल में समाती देखकर सभी देवताओं ने भगवान् श्रीशिव जी से विनय की। उन देवों की विनती सुनकर शंकर जी स्वयं उस रणभूमि में आ गये और शिव जी ने पृथिवी को पाताल में धँसने से बचाने के लिए स्वयं शव का रूप धारण कर लिया और जानकी जी के चरणों तले अपने को स्तंभित कर दिया। भगवान् विरूपाक्ष द्वारा सीता जी के चरणों के नीचे स्थित होकर उनका सम्पूर्ण भार वहन कर लेने के कारण धरती अपने स्थान पर अचल हो गई। परन्तु पृथिवी के रुक जाने पर भी ऊर्ध्वलोक अभी तक स्थिरता के निकट नही पहुँच सके थे। सीता जी की पादध्वनि तथा हुँकार द्वारा निर्गत वायु के झकोरे से भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक आदि कम्पित हो रहे थे। धरणीतनया माता श्रीसीता जी के द्वारा भीषण नृत्य होते देखकर द्विजेन्द्र तथा इन्द्रादिक देवगण सीता जी का जयघोष करते हुए अपने मन में पृथिवी का प्रलय हो जाने का अनुमान करने लगे। माता श्रीजानकी जी के इस वेग और कोप को देखकर ब्रह्मा जी सभी लोकपालों, देवताओं, ऋषियों तथा पितृगणों के साथ सीता जी की क्रोधाग्नि को शान्त करने के लिए वहाँ आये और उन्होंने हाथों को जोड़कर बारम्बार उन्हें प्रणाम किया। तत्पश्चात् ब्रह्मादि ने उन दैत्यविनाशिनी सीता जी की स्तुति करी और कहा कि हे देवि ! परमेश्वर का आश्रयण कर तुम जगत् के सम्पूर्ण तापों को हरने वाली हो। हे महेश्वरि ! इस समय जीवों का संहार करना तुम्हारे लिए उचित नही है। तुमने रावण का उसके गणों सहित वध करके संसार को सुखी एवं निर्भय कर दिया है। परन्तु अब नृत्य करने के बहाने से पुनः इस सृष्टि का विनाश क्यों करना चाहती हो। ब्रह्मा जी की अभ्यर्थना से सन्तुष्ट होकर उन विशालनयना जगदम्बा ने ब्रह्मा सहित सभी देवों से कहा- इस समय मेरे कमलनयन पति वक्षःस्थल में तीव्र बाणाघात से आहत होकर पुष्पक विमान में मृतकवत् शयन कर रहे हैं। हे देवों ! उनकी ऐसी दुःखद दशा देखकर भी मैं किस प्रकार जगत् का हित चाह सकती हूँ। मैं इस चराचर जगत का एक ही ग्रास में भक्षण कर डालूँगी। देवी की

इस क्रोध भरी वाणी को सुनकर समस्त देवगण भयभीत होकर हाहाकार करने लगे तथा धरती कम्पायमान हो उठी। तब देवताओं सहित ब्रह्मा जी ने पुष्पक विमान में स्थित संज्ञाशून्य भगवान् श्रीराम जी का अपने हाथों से स्पर्श कर उन्हें चैतन्य किया। चैतन्यता प्राप्त कर कमलनयन महाबाहु श्रीराम तत्क्षण ही उठ बैठे और बोले- अरे रावण ! आज तू मेरे बाणों से विद्ध होकर निश्चय ही कुटिल भौहों वाले यमराज के मुख का दर्शन करेगा। इस प्रकार कहकर जब उन्होंने अपने धनुष को उठाया तब सामने देवताओं का खड़ा पाया। परन्तु उन्होंने वहाँ अपनी प्राणप्रिया श्रीजानकी जी को न देख उनके स्थान पर रणभूमि में नृत्य करती हुई महाकाली को देखा। वे चतुर्भुजा, लपलपाती जीभ वाली, हाथों में खड्ग-खप्पर लिये दिगम्बर वेश में शवरूपी शिव के हृदयस्थल पर विराजमान थीं। वे महाकाली भीषणाकृति, क्षुधातुरा, कोटराक्षी, मुण्डमाला से अलंकृत, रक्तपान करतीं हुईं संसार को अपना ग्रास बनाने के निमित्त उद्यत थीं तथा वे अनेक भीषण आकृति वाली मातृकाओं के साथ रणभूमि में क्रीड़ारत होकर सहस्रमुख रावण के मुण्डों को लेकर प्रसन्न मन से गेंद का खेल रहीं थीं। वे प्रलयकालीन घनघोर अधंकार के सदृश सदैव ही घरघराहट का शब्द करने वालीं, अंतड़ियों, मुण्डों, हाथों तथा आँखों की माला बनाकर पादचालन करतीं हुईं, हाथी-घोड़ों तथा रथखण्डों का निरीक्षण करती हुईं, मृत राक्षसों के शिरविहीन धड़ के साथ नर्तन क्रिया में संलग्न थीं। वहाँ पर किसी भी दानव के हाथ-पैर या शिर नहीं थे। केवल जो कबंध नाच रहे थे उनके ही चरण दिख रहे थे। उस क्षण श्रीराम ने मृत रावण के धड़ को भी वहाँ नाचते हुए देखा। उस समय मातृकाओं के सहित काली देवी को नृत्य करते देखकर भगवान् श्रीराम जी के हाथ से धनुष-बाण छूटकर भूमि पर गिर पड़ा। तब श्रीराम ने भयातुर होकर अपने दोनों कमल के समान नेत्रों को बन्द कर लिया। तब ब्रह्मा जी ने श्रीराम को आश्चर्यान्वित होते देख उन्होंने उनसे सारा पूर्व वृत्तांत कहा और फिर वे बोले कि हे राम ! आप इनके साथ जगत् को उत्पन्न करने के बाद उसका विनाश कर डालते हैं। हे राम ! आप इनके बिना कुछ भी करने में सक्षम नहीं है। इसी बात को सिद्ध करने के लिए सीता जी ने इस प्रकार का कृत्य किया है। हे महाबाहु राम ! आप भय छोड़कर इन जानकी की ओर देखिये। ये सबसे परे हैं। ब्रह्मा जी के ये वचन श्रीराम जी के लिए

कर्णसुखद, आत्मोन्नति के लिए हितकारी तथा शत्रुनाशी थे, जिन्हें सुनकर श्रीराम ने अपने मन से शोक को त्याग दिया और माता श्रीजानकी जी की ओर दृष्टिपात किया। तब भगवान् श्रीराम जी ने उन परमेश्वरी से उनका परिचय पूछा तब माता ने स्वयं को महेश्वर के आश्रित रहने वाली परमा शक्ति, अनन्ता तथा भव सागर से तारने वाली बताया। तत्पश्चात् माता श्रीसीता जी ने भगवान् श्रीराम जी को दिव्य दृष्टि प्रदान कर विश्वरूप दिखाया। उसे देखकर प्रभु जी ने माता सीता की सहस्रनाम द्वारा स्तुति करी। इस प्रकार स्तुति कर राम जी ने अपने हाथों को जोड़कर प्रफुल्लचित्त तथा रोमांचित हो सीता जी को सन्तुष्ट किया। श्रीराम जी ने सहस्रनाम के द्वारा स्तवन कर जानकी जी को प्रणाम कर उनसे हाथ जोड़कर पुनः कहा- हे परमेश्वरी ! मैं तुम्हारे इस भयंकर ईश्वरीय रूप को देखकर अत्यन्त भयकातर हो उठा हूँ। अतः अब तुम मुझे अपने शान्त और सौम्य रूप के दर्शन कराओ। भगवान् श्रीराम जी की इस विनती को सुनकर माता श्रीसीता जी ने अपना शांत एवं सौम्य रूप उन्हें दिखलाया। वह रूप स्वर्णिम कमल-सा तथा पद्मदल के समान सुगन्धित था। उनका वह रूप सुन्दर नेत्रों, दो भुजाओं तथा नीली अलकों से विभूषित था। वह रूप लालकमल के समान चरणों, रक्तवर्णीय हस्तों, विस्तृत सद्वृत्त भाल के ऊपर उज्ज्वल तिलकांकित, समस्त सुन्दर अंग आभूषणों से युक्त, स्वर्णनिर्मित विशाल सुरमाला धारण किये, बिम्बाफल के सदृश होंठों पर मन्द-मन्द मुस्कान बिखरे हुए, नूपुर और अम्बर से युक्त, प्रसन्नमुख, अलौकिक तथा अनन्त महिमा का स्थान था। सीता जी के ऐसे रूप को देखकर राम जी ने भय का त्याग कर माता की पुनः स्तुति करी तत्पश्चात् वे देवी के बगल में स्थित हो गये। तब जगदीश्वर के ऐसे वचन सुनकर सीता जी मुस्कुराती हुई अपने पति के प्रति उन्मुख होकर कहने लगीं कि आप मेरी एक बात सुनिये। रावण वध के लिए मैने जिस रूप को धारण करा उस रूप से मैं मानसोत्तर में निवास करूँगी। हे राम ! तुम प्रकृति के द्वारा नीलवर्ण होते हुए भी रावण से अर्दित होने के फलस्वरूप लोहित वर्ण के हो गये हो। इस प्रकार मैं नील-लोहितवर्णा होकर ही तुम्हारे साथ निवास करूँगी। हे राम ! मुझसे जिस वर की आकांक्षा हो वह मुझसे माँग लीजिए। सीता जी की बात को सुनकर राघव जी ने उनके वचन का समर्थन कर अंशभाग द्वारा उन परमेश्वरी से यह वरदान

माँगा- हे महाभागे देवी सीते ! तुमने मुझे ईश्वरीय रूप के जो दर्शन कराये हैं वह रूप मेरे हृदय में नित्य ही विराजमान रहे, यही वर मुझे चाहिए तथा हे कल्याणि ! मेरे बन्धु, वानर, विभीषणादि सुहृद तथा अवध सेना के प्रमुख योद्धागण जो रावण द्वारा प्रताड़ित किये गये हैं वे सभी मुझे पुनः प्राप्त हो जाएँ। उसी क्षण आकाश से दुन्दुभी बजने की ध्वनि होने लगी तथा भगवान् श्रीराम जी एवं माता श्रीसीता जी के ऊपर पुष्पवृष्टि होने लगी। तब श्रीराम जी की बातों को सुनकर हँसती हुई सीता माता ने कहा- ऐसा ही होगा। तत्पश्चात् श्रीराम ने ब्रह्मादि देवों को विदा कर सीता जी के साथ स्वदेश लौटने की इच्छा करी। तब अपनी भुजाओं में सीता जी को आलिंगित कर काकुत्स्थनंदन भगवान् श्रीराम पुष्पकारूढ़ हो अवध की ओर चल पड़े। पुष्पक रथ की ध्वनि सुनते ही भरतादि भ्राता तथा उनके प्रमुख योद्धागण राम जी के दर्शन के लिए आतुर हो उठे। उन्होंने अपने मन में माता श्रीसीता जी तथा ऋषियों के सहित प्रभु श्रीश्रीराम जी के आगमन का अनुमान कर लिया। उनके नेत्र प्रेमाश्रु के कारण छलछला उठे और उन सबने एकाएक आकर राम जी का वन्दन करा। तब सभी वानरों और राक्षसों को अपने नगर में लाकर कमलनयन श्रीराम ने उनसे रावणवध का समस्त वृत्तांत कह सुनाया। उस विस्मयकारी घटना को सुनकर सभी जन साधु-साधु कह उठे। तत्पश्चात् वे सभी श्रीराम को मधुसूदन तथा देवी सीता को तत्त्वरूपा विचारते हुए अपने-अपने वासस्थान को चले गये। उन सभी महात्माओं के प्रस्थान करते समय श्रीराम ने उन्हें सम्मानपूर्वक विदा करा। तब ऋषियों ने सीता-सहित रघुनाथ का अभिनंदन कर उन्हें आशीर्वाद प्रदान करा। तत्पश्चात् वे सभी भी अपने-अपने निवास स्थानों को चल पड़े। श्रीराम जी ने देवताओं के हित के लिए सीता जी तथा अपने महात्मा भ्राताओं के साथ भूतल को अकंटक बना दिया। भगवान् श्रीराम जी ने सरयू के तट पर अनेक श्रेष्ठ यज्ञों को सम्पन्न करा। इस प्रकार ग्यारह हजार वर्षों से कुछ अधिक काल तक प्रभु श्रीराम जी ने शासन करा। देवता, किन्नर, गन्धर्व, विद्याधर तथा महत् सर्प भी गुणों के निधान रमापति भगवान् श्रीराम जी को सदैव ही प्रणाम किया करते थे॥

॥ इति श्री ॥

मूलकासुरमर्दिनी भगवती सीता

आनन्द रामायण, राज्य काण्ड, पूर्वार्द्ध अनुसार

कुम्भकर्ण पुत्र निकुम्भ की गर्भिणी पत्नी सन्तान उत्पन्न करने के लिए मायके चली गई थी। जब भगवान् श्रीराम जी के साथ युद्ध करके रावण वंश समेत नष्ट हो गया तब उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम पौण्ड्रक हुआ। श्रोणानदी के तटपर बसी मायापुरी नामक नगरी में सौ सिरोंवाला रावण रहता था। जिसकी दो सौ भुजायें थीं। पौण्ड्रक ने उस रावण के साथ मिलकर श्रीविभीषण जी को परास्त कर दिया और वह स्वयं उस शतानन रावण के साथ लंका पर राज्य करने लगा। उस समय विभीषण जी प्रभु श्रीराम जी के पास गये और उन्हें सब वृत्तान्त सुनाया, तब मित्र पर आई विपत्ति को जानकर प्रभु श्रीराम जी माता श्रीसीता जी तथा श्रीविभीषण जी महाराज को साथ लेकर लंका को चल पड़े। वहाँ पहुंचकर उन्होंने उस शतानन रावण तथा पौण्ड्रक का वध करा तथा पुनः विभीषण जी को लंका का राज्य देकर प्रभु जी माता सहित अयोध्या जी में लौट आये। इसके बाद एक दिन प्रभु जी अपनी सभा में बैठे थे तब अपनी स्त्री, पुत्र तथा मंत्रियों सहित विषण्ण भाव से बैठे हुए विभीषण जी ने कहा- हे राम ! हे राजीवपत्राक्ष ! मैं आपका शरणागत हूँ, मेरी रक्षा कीजिए। पूर्वकाल की बात है, जब कुम्भकर्ण को मूल नक्षत्र में एक पुत्र हुआ था तब कुम्भकर्ण ने दूतों द्वारा उसको जङ्गल में छुड़वा दिया था। वहीं मधुमक्खियों ने उसके मुख में मधु की एक-एक बूंद टपकाकर उसकी रक्षा की। वह अब बड़ा हो चुका है। जब उसने यह जाना कि राम ने मेरे पिता तथा कुटुम्बियों का वध कर दिया है तब उग्र तपस्या करके उसने ब्रह्मा जी को प्रसन्न कर उनसे वर प्राप्त कर लिया। वर के प्रभाव से गर्वित होकर पातालवासी राक्षसों के साथ उसने लंका पर चढ़ाई कर दी। मैने छः मास तक उसके साथ भयंकर युद्ध किया परन्तु अन्त में उसने हमें परास्त कर लंका पर अपना अधिकार कर लिया। ऐसी अवस्था में मैं अर्द्धरात्रि में ही अपने पुत्र, स्त्री एवं मंत्रियों के साथ एक सुरङ्ग के द्वारा भागकर एक योजन दूर जाकर ठहर गया, जब रात्रि व्यतीत हो गयी तब आगे बढ़ा और यहाँ आपके पास आ पहुँचा। वह मूल नक्षत्र में जन्मा तथा

वृक्षों के नीचे उसका पालन-पोषण हुआ अतः लोग उसे मूलकासुर कहते हैं। युद्ध करते हुए एक बार उसने मुझसे कहा था कि इस रणभूमि में पहले तुझको मारकर लंका पर अधिकार कर लेने के बाद मैं मेरे पिता तथा मेरे कुल के संहारक राम के पास जाऊँगा तथा संग्रामभूमि में राम का वध कर मैं अपने पितृऋण से उऋण हो जाऊँगा। हे रघुनन्दन ! जितना मुझे ज्ञात है तदनुसार वह शीघ्र ही आपसे भी युद्ध करने के लिए आयेगा। ऐसी अवस्था में आप जो उचित समझें सो करें। विभीषण जी का हाल सुनकर राम जी बड़े विस्मित हुए तब उन्होंने तुरन्त ही श्रीलक्ष्मण जी से कहा कि जगत में जितने राजे हैं, उन सबको दूतों द्वारा शीघ्र बुलवाओ॥ लक्ष्मण जी ने राघव जी की आज्ञानुसार दूतों को भेजा तथा दूतों ने शीघ्र लौटकर प्रभु जी से कहा कि हम लोग सभी राजाओं के पास हो आये। उनमें से कुछ राजे तो आपकी आज्ञा का पालन कर रहे हैं और कुछ नहीं। इसका कारण यह है कि बड़े राजकुमार कुश की पत्नी चम्पिका और राजकुमार लव की पत्नी सुमति के स्वयंवर के समय उनके हृदय में जो क्षोभ जन्मा था, वह अब तक वैसा ही बना हुआ है। फिर शत्रुघ्न जी के छोटे पुत्र यूपकेतु की मार से उनका हृदय अलग विदीर्ण हो चुका है। जब वे यूपकेतु की पत्नी मदनसुन्दरी की वह अनोखी शोभा स्मरण करते हैं तो उनके हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। इन्हीं कारणों से वे आपकी आज्ञा का पालन नहीं करना चाहते हैं , जिन सुग्रीव आदि राजाओं ने आपकी आज्ञा पाली है, वे अपने दल-बल के साथ अयोध्या को आ रहे हैं। यह सुनकर प्रभु जी बोले- वे नीच राजे अब भी हमारे प्रति ईर्ष्या रखते हैं ? ठीक है, प्रथमत: मूलकासुर का वधकर तत्पश्चात् उन लोगों पर भी चढ़ाई करूँगा। इस प्रकार निश्चय कर भगवान् श्रीराम जी ने शुभ दिन तथा मुहूर्त में अपनी विशाल सेना तथा लक्ष्मणादि भ्राताओं सहित मूलकासुर का वध करने के लिए अयोध्या जी से प्रस्थान किया। अयोध्या से बाहर आकर उन्होंने कुछ सेना के साथ यूपकेतु को नगरी की रक्षा के लिए छोड़ दिया और अन्य कुश आदि सात लड़कों को राम जी अपने साथ ले गये। यात्रा के समय प्रभु जी ने सम्पूर्ण सेना को पुष्पक पर बिठा लिया। मार्ग में राम जी के अनुगामी राजे भी अपनी-अपनी सेनाओं के साथ आकर राम जी से मिल गये। उन लोगों को भी राम जी ने विमान में बिठा लिया। इस यात्रा में श्री सुग्रीव जी महाराज अठारह पद्म वानरों के साथ आये

थे, उनको भी भगवान् श्रीराम जी ने पुष्पक पर बिठा लिया। इसके अनन्तर माता श्रीसीता जी को अयोध्या में ही छोड़कर प्रभु श्रीराम जी विमानपर बैठे। आकाशमार्ग से अनेक देशों को देखते हुए वे लंका की ओर चले तथा थोड़े ही समय में वे निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये। उधर जब मूलकासुर को यह ज्ञात हुआ तब वह राम जी से युद्ध करने के लिए दस करोड़ सेना लेकर लंका के बाहरी मैदान में आ डटा। उस समय ब्रह्मा जी के वरदान के कारण वह बड़े घमण्ड में था। फिर क्या था, राक्षस वानरों को लातों से मारने लगे तथा वानर यूथ ने भी राक्षसों पर पहाड़ के बड़े-बड़े टुकड़ों तथा वृक्षों से प्रहार करना आरम्भ कर दिया। इस तरह सात दिवसों तक उन दोनों सेनाओं के मध्य घमासान युद्ध होता रहा। उस संग्राम में जो-जो वानर मरते थे उन्हें श्रीहनुमान जी महाराज संजीवनी लाकर जीवित कर देते थे। आठवें दिन राक्षसों की बस एक चौथाई सेना ही शेष रह गयी, बाकी सब मार डाले गये। मूलकासुर ने जब देखा कि अब थोडे से ही राक्षस बचे हैं तो क्रोधित होकर उसने अपने मन्त्रियों, सेनापतियों तथा सेना को लड़ने के लिए भेजा। जब राम जी के दल के वीरों ने देखा कि राक्षसों की और भी सेना युद्ध के लिए आ गयी है तथा वे अपने नाना भाँति के अस्त्र-शस्त्रों से हमारी सेना को मारकर ढेर किये दे रहे हैं तब वे सब वीर भी नाना वृक्षों तथा पर्वतों की बड़ी-बड़ी चट्टानों को लेकर उनसे तुमुल युद्ध करने लगे और उन्होंने थोड़ी ही देर में शत्रु के मंत्री, सेनापति तथा सेना को यम के धाम में पहुँचा दिया। जब मूलकासुर ने जाना कि वह सेना भी नष्ट कर दी गयी है, तब वह अत्यन्त क्रोध के कारण तमतमा उठा तथा स्वयं ही एक दिव्य रथ पर सवार होकर थोड़ी-सी सेना साथ लेकर युद्ध के लिए चल पड़ा। राम जी के साथी राजाओं ने जब उसे लड़ने को आया देखा तो वे हजारों राजे भी युद्ध के लिए तैयार हो-होकर मैदान में आ गये। उन लोगों ने दुन्दुभी की घनघोर गर्जना के साथ उस राक्षस पर बाणों की वर्षा प्रारम्भ कर दी, परन्तु मूलकासुर ने क्षणभर में ही उन सबको मूर्च्छित कर दिया। जब वे अनेक राजे मूर्च्छित हो गए तब भगवान् श्रीराम जी की आज्ञा से सुमन्त्र आदि मन्त्री अपनी-अपनी सेना के साथ लड़ने के लिए जा डटे। फिर जब मन्त्री भी बेहोश हो गये तब कुश आदि बालक जाकर युद्ध करने लगे। कुश आदि के पहुँचने पर वहाँ भीषण युद्ध हुआ। कुछ देर बाद कुश ने अपने बाणों द्वारा मूलकासुर को उठाकर फेंक

दिया और वह लङ्का की बाजार में जा गिरा। किन्तु वह तुरन्त ही उठ खड़ा हुआ और उत्तम शस्त्र तथा रथ प्राप्त करने की इच्छा से एक कन्दरा में घुस गया तथा उसने उस कन्दरा का द्वार बन्द कर लिया और वह राक्षस वहाँ तांत्रिक अनुष्ठान करने लगा। जब विभीषण जी ने हवन का धुआँ देखा तब वे भाइयों की मण्डली में कल्पवृक्ष के नीचे बैठे हुए प्रभु श्रीराम जी के पास जाकर इस प्रकार कहने लगे- हे राम ! वह दुष्ट कन्दरा में बैठकर हवन कर रहा है। अतएव पुनः वानरो को भेजिए। यदि कहीं उसका हवन सम्पन्न हो गया तो फिर वह अजय हो जाएगा। इसी बीच में अनेक देवताओं के साथ ब्रह्मा जी वहाँ आ गये। राम जी ने उन्हें प्रणाम कर उनका विधिवत् पूजन किया तदनन्तर कुछ देर बाद ब्रह्मा जी ने प्रभु श्रीराम जी से कहा- हे रघुनन्दन । पूर्वकाल की बात है, मूलकासुर की घोर तपस्या के कारण मैंने उसे यह वरदान दिया था कि तुम किसी वीर के मारने से नहीं मरोगे। अतः पुरुष के हाथ से इसकी मृत्यु नही हो सकती, यह किसी स्त्री के द्वारा ही मारा जा सकेगा। इसका एक कारण यह भी है कि एक बार शोकाकुल होकर मूलकासुर ने एक ब्राह्मणमंडली के समक्ष कहा था कि चंडी सीता के कारण ही मेरे कुल का नाश हुआ है। इस निष्ठुर बात को सुनकर एक ऋषि ने उसको शाप दे दिया कि जिस सती-साध्वी सीता के लिए तू ऐसे अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर रहा है, वही सीता तुझे भी शीघ्र ही मारेगी। मुनि का शाप सुनकर मूलकासुर ने उसे तुरन्त मार डाला। फिर उसके भय से अन्य ऋषि चुपचाप बैठे रह गये। मेरे कहने का अर्थ यह है कि उस ऋषि के शाप तथा मेरे वरदान से निस्संदेह सीता के हाथों से ही इस अधम की मृत्यु होगी। राम जी ने ब्रह्मा जी की बातें सुनकर विभीषण जी से कहा कि आज मूलकासुर के यज्ञ में विघ्न डालने की कोई आवश्यकता नही है। जब सीता यहाँ आ जायेंगी, तब वानरों को उसके यज्ञ में विघ्न डालने की आज्ञा दी जायगी। इसके उपरान्त राम जी ने श्रीगरुड़ जी महाराज से कहा- तुम जाओ और सीता को अपनी पीठ पर बैठाकर यहाँ ले आओ। चलते समय मार्ग में हनुमान दुष्टों से उनकी रक्षा करते रहेंगे। राम जी की आज्ञा को सादर स्वीकार करके वे दोनों वहाँ से अयोध्या जी को चल पड़े। उधर अवध में राम जी के चले जाने पर माता श्रीसीता जी प्रभु श्रीराम जी का स्मरण करती हुई उनके वियोग से व्याकुल होकर रहा करतीं थीं। क्षण भर के

लिए भी उनका हृदय चैन नही पाता था। वे कभी नर्तकियों का नृत्य देखकर जी बहलाना चाहती और कभी राम जी की विजय की कामना से भगवान् कार्तवीर्य का पूजन करती थी, तुलसी, पीपल आदि की प्रदक्षिणा करती थीं, ब्राह्मणों द्वारा मन्यु-सूक्त का पाठ करवाती थीं। कभी पृथ्वी पर गोबर द्वारा हनुमान जी की प्रतिमा बनाकर पूजन करती और हर रोज उनकी पूछ एक अँगुल बढ़ाया करती थीं। प्रभु जी की जय के वे लिए ब्राह्मणों द्वारा सौ-सौ रुद्री पाठ करवाती और दुर्गा जी की पूजा करती थीं। गणेश जी, मारुति तथा शिव जी, इनको जल में बैठाकर किवाड़ बन्द कर देतीं फिर खिड़की से उनपर जलधारा गिराती थीं। वे भगवान् श्रीरामचन्द्र जी के मंच पर भगवान् कार्तवीर्य अर्जुन जी के यंत्र को स्थापित कर सदा-सर्वदा उनका पूजन करती थीं। वे कभी सहेलियों के बीच बैठी-बैठी अपने अलंकारों को फेंक देती थी और जब सखियाँ उन्हें फौवारे के पास ले जाकर सुलाने की चेष्टा करतीं, तब भी उन्हें निद्रा नहीं आती थी। कभी अटारी पर बैठे हुए कौए को देखकर सीता जी कहने लगतीं "यदि मुझे शीघ्र प्रभु के दर्शन होनेवाले हों तो ऐ कौए ! तू यहाँ से उड़ जा, नहीं तो बैठ" सीता जी की बात सुनकर कौआ उड़ जाता, उससे सीता जी के हृदय को बहुत कुछ ढाढ़स बँध जाता था। इसके बाद सीता जी पवन से कहतीं-"हे पवन! तुम पहले मेरे स्वामी का स्पर्श करके फिर मुझे स्पर्श करो तो तुम्हारा बड़ा उपकार हो"। वे रात्रि के समय कभी-कभी चन्द्रमा से विनय करतीं कि- हे चन्द्रदेव ! तुम अपनी ठंढी किरणों से प्रभु के शरीर का स्पर्श करके उन सुखदायिनी किरणों को मेरे ऊपर डालो। शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को सीता माता विविध प्रकार के वस्त्र और आभूषण धारणकर सखियों के साथ प्रासाद के ऊपर जाती और इस भावना से चन्द्रदेव का दर्शन करतीं कि प्रभु जी आज जहाँ कहीं भी होंगे, चन्द्र देव का दर्शन अवश्य करेंगे। ईश्वर चाहेंगे तो शीघ्र ही मेरा और उनका मिलन होगा। जब से राम जी गये थे, तब से सीता माँ ने अपने शरीर में न हल्दी लगायी, न नयनों में काजल लगाया और न किसी प्रकार के वस्त्राभूषण ही धारण करे। प्रभु के विरह से पीडित माता सीता जी ने चन्दन, पुष्प, पुष्पमालाएँ, पुष्पों की शय्या आदि कुछ भी अङ्गीकार नही किया। प्रभु के दर्शनों की इच्छा से वे सदा शकुन उठाया करती थीं। यदि शकुन अच्छा उठ जाता तो उन्हें बड़ा हर्ष होता था। वे

समझती कि शीघ्र ही स्वामी का दर्शन होगा। इसी हर्ष में वे सखियों को मिठाईयाँ बाँटती थीं। जब से राम जी परदेश गये, तब से सीता जी किसीके घर नहीं गयीं। तभी से सीता माँ कभी अकेली नहीं बैठतीं, तन में उबटन नहीं लगाती, मिठाई नहीं खाती, ताम्बूल नहीं खातीं तथा अपने केशों को भी नहीं सँवारतीं थीं। जब से प्रभु गये, तब से उन्होंने किसी पुरुष के साथ बात नही करी। कभी किसी से मुस्कुराकर नहीं बोलीं, ऊपर मुँह उठाकर किसी की ओर नहीं निहारा, कभी किसी पुरुष ने उन्हें देख नही पाया तथा कभी भी उनके जी को चैन नही मिला। राम जी के विरह से पीडित सीता जी ने कभी शय्या पर शयन नही करा तथा ना ही कभी प्रभु के विरह से पीले पड़े हुए अपने मुखमण्डल को शीशे में ही देखा। न उन्होंने कभी रङ्ग-बिरङ्गे वस्त्र ही धारण करे। तब से वे कभी दरवाजे के चौखट पर नहीं खड़ी हुई तथा सरयू-स्नान करने को भी वे नहीं गयीं और किसी वन या उपवन में सैर करने भी वे नहीं गयीं तथा किसी बगीचे तथा पुष्पवाटिका में भी वे नहीं गयीं॥ तब से उन्होंने कोई मांगलिक कार्य नहीं किया। अनेक प्रकार की वस्तुएँ दे देकर उन्होंने ब्राह्मणियों को प्रसन्न किया और कितने ही प्रकार के व्रत करके अनेक देवियों का पूजन करा। इस तरह अनेक व्रतों का आचरण कर वे अपने उन नीरस दिवसों को बिताती रहीं। वे सदा इस तरह मन्नत मानती थीं, हे देवियों और देवताओं ! यदि मेरे स्वामी विजयी होकर अपने भाइयों और पुत्रों समेत शीघ्र अयोध्या वापस आयें तो हे हनुमान् जी ! मै बड़ी भारी माला बनवाकर आपको पहनाऊँगी। हे गणेश जी ! आपको पूरी तथा लड्डू का भोग लगाऊँगी और अनेक प्रकार के पकवान बनवाकर आपको समर्पित करूँगी। हे दुर्गे ! मेरे ऊपर प्रसन्न होओ, यदि प्रभु लौट आएँ तो आपके लिए बलिदान करूंगी। हे चण्डिके ! मैं आपको विविध प्रकार के स्वादिष्ट अन्नों तथा बलिदीप के साथ अपनी जिह्वा का रक्त अर्पित करूँगी, पाँच मङ्गलवार का व्रत करूंगी, एक महीने तक मिठाई तथा घृत नहीं खाऊँगी तथा हे महेश्वरी ! मैं कृष्णपक्ष की तृतीया तथा चतुर्थी को थोड़े-थोड़े गुड़ के साथ तिल खाऊँगी। मेरा यह व्रत तब तक चलता रहेगा, जब तक मुझे लक्ष्मणादि भ्राताओं के साथ मेरे स्वामी के दर्शन नहीं मिलेंगे। हे चण्डिके ! यदि मुझे शीघ्र मेरे प्रभु का दर्शन हो जाय तो मैं अपनी सहेलियों के साथ नवरात्र का व्रत करूँगी। हे सूर्य भगवान् ! मैं प्रत्येक रविवार को

आपका विधिवत् पूजन करूँगी। इस प्रकार प्रभु श्रीराम जी के वियोग वाले दिवसों में सीता माता प्रतिदिन अनेक प्रकार की मन्नतें माना करती थीं। वे ब्राह्मणों से अर्घ्यदान कराती रहती थीं। रात-दिन कभी निद्रा नहीं लेतीं थीं। इस तरह प्रभु के विरह से दुःखिनी माता सीता कहीं भी सुख नहीं पाती थीं। इसी प्रकार उर्मिला तथा चम्पिकादिक स्त्रियाँ भी अपने-अपने स्वामियों के वियोग से दुःखी होकर व्याकुल रहा करती थीं। वे समस्त स्त्रियाँ अपने महलों की मणिमयीं भूमियों पर लोट-लोटकर अपने दिनों को काटतीं थीं। उन्हें विश्व के किसी भी प्रदेश में आनन्द नहीं मिलता था। उनमें से कोई भी स्त्री न तो क्रीडामयूर को नचाती, न पिंजरे में बैठे हुए तोते को ही पढ़ाती, न पाले हुए नेवले को प्रेम करती, न मैना को पढ़ाती और न ही कोई स्त्री सारसों के साथ खेल ही करती थी। उन्होंने कोई भी सुख नहीं भोग। महलों में उन्होंने आनन्द नहीं लिया। वे न तो अपनी सहेलियों के साथ ही हँसी-दिल्लगी करती थीं और न वीणा बजातीं अथवा सुनती ही थीं। कल्पवृक्ष के पुष्प से उत्पन्न कुसुम की अमृतसरीखी सुगन्धि का भी वे उपयोग नहीं करती थीं। वे नारियाँ योगियों के समान अपनी दृष्टि को अपनी नाक के अग्रभाग में लगाकर रात-दिन बस अपने-अपने पतियों का ध्यान किया करती थीं। उन्होंने अपना-अपना मन अपने-अपने पतियों को अर्पित कर दिया था। वे झरोखे में लगी हुए चन्द्रकान्त मणि के समीप, जिसमें सदा रात के समय जल धारा बहा करती थी, वहाँ बैठकर वे कुछ देर उसी को निहारा करतीं थीं। कभी वे कमल के पत्तों की शय्या पर सोतीं और सखियों से केले के पत्तों द्वारा पंखा झलवाती थीं। इस प्रकार वे एक-एक रात्रि को युग के समान मानकर बड़े सन्ताप से विह्वल होकर समय बितातीं थीं। जब माता श्रीसीता जी इतनी कठिन यंत्रणा भोग रही थीं, उसी समय गरुड़ जी तथा हनुमान जी अयोध्या पुरी आ पहुँचे। सहसा जगदम्बा श्रीजानकी जी की बायीं आँख तथा भुजा फड़कने लगीं। इसे शुभ शकुन मानकर वे अपने मन में कुछ हर्षित हुईं। थोड़ी देर बाद गरुड़ जी और हनुमान जी राजसभा में बैठे हुए यूपकेतु के पास पहुँचे और उन्होंने प्रभु श्रीराम जी का सन्देश सुनाया। उसे सुनकर यूपकेतु ने माता सीता जी को बताया और श्रीराम जी की आज्ञानुसार सीता माँ उसी दिन कुछ ब्राह्मणों, पुरोहितों तथा अग्नि को साथ लेकर गरुड़ जी के ऊपर सवार हो गईं तथा हनुमान जी सीता

माता की रक्षा करने लगे और सीता माँ मार्ग के अनेक देशों को देखती हुई लङ्का की ओर चलीं। इस प्रकार अतिशीघ्र लङ्का पहुँचकर उन्होंने देखा कि भगवान् श्रीरामचन्द्र जी वहाँ कल्पवृक्ष के नीचे बैठे हुए हैं। जब जगदम्बा वहाँ पहुँची तो उन्होंने गरुड़ जी से उतरकर भगवान् श्रीराम जी को प्रणाम किया। तब श्रीरघुनाथ जी ने उनसे कहा- सीते ! मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारा मुँह कुम्हलाया हुआ है और शरीर दुर्बल हो गया है। राम जी की बात सुनकर मुस्कराती हुई माता सीता लजा के कहने लगीं- हे स्वामिन् ! यह सब आपके विरह का प्रभाव है। मुझे न निद्रा आती है, न जाग ही पाती हूँ और न खाती-पीती ही हूँ। आपसे वियुक्त होकर योगिनी के समान सदा आपका ध्यान किया करती हूँ। निद्रा के दरिद्र मेरे नेत्र स्वप्न मे भी आपके ही मुख को देखा करते हैं, उसी में इनको आनन्द प्राप्त होता है। आपके मुख का प्रतिनिधिस्वरूप चन्द्रमा भी उदित होता है तो मुझे अच्छा नहीं लगता। सन्ताप को दूर करने की कामना से भी उसकी ओर निहारने का मन नही करता। यद्यपि आपकी ही बोली के समान कोकिल की बोली भी होती है, किन्तु वह भी सुनने की इच्छा नही होती, उसकी बोली कानों को शूल के समान चुभती है। यद्यपि आपके अङ्गों के स्पर्श के समान ही मधुर धूप के सुगंध से मिश्रित वायु भी है, किन्तु उसका भी मैंने कभी आलिंगन नहीं किया। आपकी विजय के लिए मैं नाना प्रकार के व्रत-उपवास करती रही। आपकी विरहाग्नि से संतप्त होने के कारण मुझे कभी-भी सुख प्राप्त नही हुआ। तदनन्तर हँसकर भगवान् श्रीराम जी ने बार-बार सीता माँ को अपनी छाती से लगाया तदुपरान्त दूसरे दिवस राम जी ने स्नान किया तथा सीता जी को भी स्नान करवाया और उसके बाद उन्होंने थोड़े ही समय में सीता माँ को समस्त अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा दे दी। राम जी की आज्ञा से लक्ष्मण जी ने रथ तैयार किया। उस रथ के सारथी का नाम दारुक था, नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र उस रथ में रक्खे हुए थे तथा उस रथ के ऊपर गरुड़ से अंकित पताका फहरा रही थी। उसमें शैव्य, सुग्रीव, मेघपुष्प तथा बलाहक नामक चार घोड़े जुते हुए थे। उसपर सुन्दर छत्र लगा था तथा उसमें सुवर्णमण्डित दण्ड वाले दो श्वेत चमर रक्खे थे। उस रथ में स्थान-स्थान पर सुवर्ण निर्मित कीलें लगी हुई थीं। इस प्रकार वह सुसज्जित रथ देखकर प्रभु श्रीराम जी ने माता श्रीसीता जी से कहा- सीते ! अब तुम इस रथ

पर सवार होकर मूलकासुर का वध करो। तब सीता जी ने राम जी की बात को अङ्गीकार किया और अपनी तामसी छाया को प्रेरित किया। उन तामसी छायारूपिणी सीता जी ने बार-बार प्रभु श्रीराम जी की प्रदक्षिणा करी फिर वे घर्घर शब्द करते हुए रथ पर सवार हो गईं। उसी समय राम जी के द्वारा प्रेरित वानर लङ्का में पहुँचे और उन्होंने मूलकासुर को हवन कर्म से विचलित कर दिया, फिर लौटकर वे वानर प्रभु के पास पहुँचे और सब समाचार सुनाया। उधर मूलकासुर भी कुपित होकर अपने रथ पर सवार हो गया और युद्ध करने के लिए चल पड़ा। जाते-जाते मार्ग में एक जगह उसका मुकुट माथे से खिसककर धरती पर गिर गया तथा वह स्वयं भी फिसलकर गिर पड़ा। परन्तु तब भी वह लौटा नहीं, अपितु उसी गर्व के साथ रणभूमि में पहुँचा। इधर सीता माता भी रथ पर आसीन हुईं और अपने लक्ष्मणादि वीर सैनिकों के साथ रणभूमि की ओर चल पड़ीं। इसके बाद उन छायामयी सीता जी ने अपने धनुष का विकराल टंकार किया और युद्ध भूमि में जा डटीं, तब मूलकासुर ने भी उन्हें देखा। उस समय सीता जी के बड़े-बड़े दाँत, डरावनी आँखें, बिजली के समान पीतवर्ण के केशपाश, ताल की नाई लम्बी-चौड़ी जाँघ, सूप की तरह चौड़े पैर, कन्दरा के समान भयावना तथा मेघ के समान काला मुँह, लपलपाती जीभ और बड़ा भारी माथा था। उन्हें देखकर कुंभकर्ण पुत्र मूलकासुर ने डरकर कहा- तुम कौन हो ? यहाँ युद्ध करने के लिये क्यों आयी हो ? इन बातों का उत्तर दो और यदि तुम्हें अपने प्राण प्रिय हों तो मेरे आगे से हट जाओ। स्त्रियों से लड़ने के लिए मुझमें पुरुषार्थ नहीं है। थोड़ी ही देर बाद सीता माता आकाश मे भगवान् श्रीराम जी के संग विमान पर बैठी हुई दिखायी पड़ीं। तब सीता माता ने वहीं से अपनी घनघोर वाणी मे पर्वतों को भी कम्पायमान करते हुए कहा- हे मूलकासुर ! इस समय उग्र रूप धारण किये मैं चण्डिका सीता हूँ। जिसके कारण तुम्हारा सारा कुल नष्ट हो गया था और लंका ध्वस्त हो गयी थी, वही सीता मैं हूँ। तुमने मेरा पक्ष लेने वाले एक ब्राह्मण का वध करा है, उसके बदले आज तुम्हारा वध कर मैं उन ब्राह्मण देवता के ऋण से मुक्त हो जाऊँगी। इतना कहकर सीता माता ने अपना धनुष उठाया और अतिशीघ्रता से पाँच बाणों के द्वारा मूलकासुर पर प्रहार किया। इसके अनन्तर उस दैत्य ने भी अपना धनुष सम्हालकर माता सीता के ऊपर अनेक बाण चलाये। जिनको हनुमान

जी ने संजीवनी बूटी से जीवित कर दिया था, वे बहुत से राजे तथा वानर पुष्पक विमान पर उन दोनों के उस तुमुल युद्ध को देखने के लिए बैठे थे। थोड़ी देर बाद वानरो ने देखा कि राम जी सीता माता के साथ कल्पवृक्ष की छाँव में स्वर्णजटित आसन पर बैठे हैं तथा दासियाँ उन्हे पंखा झल रही हैं और उनके आगे-पीछे तकिया लगी हुई है। प्रभु श्रीरामचन्द्र जी वहीं से बैठे-बैठे छायामयी माता सीता तथा मूलकासुर का युद्ध देखते रहे। सीता जी मूलकासुर के चलाए बाणों को शीघ्रता से काट-काटकर अपने बाणों को उसके ऊपर छोड़ती जाती थीं। चार बाणों से सीता जी ने मूलकासुर के रथ मे जुते अश्वों को तथा तीन बाणों से उसके माथे का मुकुट, धनुष तथा कवच काट डाला। ऐसी अवस्था में वह पैदल दौड़ता हुआ गया और एक दूसरे रथ पर सवार होकर फिर सीता जी से युद्ध करने के लिए आ डटा। वहाँ पहुँचते ही उसने सीता माँ पर वह्नयस्त्र का प्रहार करा परन्तु सीता जी ने मेघास्त्र का प्रयोग करके उसके वह्नयस्त्र को शान्त कर दिया। फिर उसने सीता माता पर पर्वतास्त्र छोड़ा परन्तु सीता माँ ने पवनास्त्र छोड़कर उसका भी निवारण कर दिया। इसके बाद उसने वेग के साथ माता पर सर्पास्त्र चलाया परन्तु सीता माता ने गरुडास्त्र के द्वारा उसके इस अस्त्र को भी व्यर्थ कर दिया। इस प्रकार सीता माता तथा मूलकासुर के मध्य सात दिवसों तक महान युद्ध होता रहा। तदनन्तर कुपित होकर सीता माता ने मूलकासुर का नाश करने के लिए अपना एक महान् अस्त्र चलाया। जिससे पृथ्वी डगमगाने लगी और समुद्र अपनी मर्यादा को लाँघकर बड़ी-बड़ी लहरें उछालने लगा तथा दसों दिशाएँ धूल से व्याप्त हो गयीं। तब उन चण्डीरूपधारिणी माता सीता के उस महान् अस्त्र ने बात की बात में मूलकासुर के मुण्ड को उसके शरीर से अलग कर दिया तथा उसका धड़ लंका के राजद्वार पर जा गिरा। इस घटना से लंका के दैत्यों में हाहाकार मच गया। उधर देवताओं ने मूलकासुर के वध से प्रसन्न होकर अपनी दुन्दुभी बजायी और वे सब अपने-अपने विमानों पर बैठकर आकाश में आये तथा भगवान् श्रीराम जी तथा माता श्रीसीता जी के ऊपर उन देवताओं ने पुष्पवृष्टि की। इसके बाद सीता जी की छाया रणांगण से लौटकर भगवान् श्रीराम जी के समीप गईं और वहाँ राम जी तथा सीता जी को प्रणाम करके सीता माँ के स्वरूप में ही लीन हो गयीं। उस समय पुनः देवताओं ने अपने मंगलवाद्य बजाये तथा

अप्सराएँ नृत्य करने लगीं तथा मागध, बन्दीजनादिको ने सीता माता की स्तुति की और नटों ने उनका यशोगान किया। कुछ देर बाद ब्रह्मा जी समस्त देवताओं के सहित भगवान् श्रीराम जी के पास पहुँचे और उनको तथा माता श्रीसीता जी को प्रणाम करके इस प्रकार माता श्रीसीता जी की स्तुति करने लगे। ब्रह्मा जी बोले- हे जनकात्मजे ! हे सुवर्णसदृश दीप्तिमान भव्यमूर्तिधारिणी सीते ! हे भक्तों का पालन करनेवाली माँ ! हे रामचन्द्र जी की प्रेयसी। हमें ऐसा आशीर्वाद दो कि हमारा मस्तक तुम्हारे चरणकमल का भौंरा बना रहे। हे मूलकासुरघातिनि ! हे रामरक्षिते ! हे रामसेविते ! हे राम को मुग्ध करनेवाली ! हे रथारूढ़ होकर दुष्टों के दर्प को दूर करनेवाली सीते ! हमें आशीर्वाद दो कि हमारा मस्तक सदैव तुम्हारे चरणकमल का भ्रमर बना रहे। हे राम जी के साथ दिव्य सिंहासन पर आसीन होने वाली ! हे लक्ष्मी ! हे रामजीविते ! हे रामलालिते ! हे रामसंस्तुते ! हे रामरञ्जिते सीते ! हमें आशीर्वाद दो कि हमारा मस्तक सदा तुम्हारे चरणकमल का भ्रमर बना रहे। हे लोकपावनि ! हे श्री ! हे अजे ! हे वरे ! हे भूमिकन्यके ! हे लोकपालिके ! हे पद्मलोचने ! हे धरात्मजे सीते ! हमें आशीर्वाद दो कि हमारा मस्तक सर्वदा तुम्हारे चरणकमल का मधुकर बना रहे। हे कंजलोचने ! हे गजगामिनि ! हे स्वीयसत्सुखे ! हे रम्यरूपिणि ! हे रुक्मभूषिते ! हे मौक्तिकांकिते सीते ! हमें आशीर्वाद दो कि हमारा मस्तक सर्वदा तुम्हारे चरणकमल का भौंरा बना रहे। हे कमल के समान मुखवाली सीते ! हे चित्रवसने। तुम सदा अपने भक्तों की रक्षा करती हो। ऋषियों को दुःख देनेवाले राक्षसों को दुःख देनेवाली हे सीते ! तुम ऐसा कुछ करो कि जिससे हमारा मस्तक सर्वदा तुम्हारे चरणकमल का भृङ्ग बना रहे। हे रामसत्प्रिये ! तुम्हें देखते ही राक्षसों का राजा मूलकासुर नष्ट हो गया। तुम्हारे नेत्रों की शोभा देखकर मृगी लज्जित हो जाती है। ऐसे सुन्दरस्वरूप वाली हे सीते ! हमें यही आशीर्वाद दो कि हमारा मस्तक सदा तुम्हारे चरणकमल का भौंरा बना रहे। हे कुश-लव की माता ! हे कमल के समान मुखवाली ! हे कमल के समान नेत्रों वाली ! हे पाप को नष्ट करनेवाली ! हे मीठे स्वरवाली ! हे नूपुर सदृश मधुर स्वरवाली सीते ! हमें आशीर्वाद दो कि हमारा मस्तक सदा तुम्हारे चरणकमल का भौंरा बना रहे। हे मुस्कुराहट भरे मुखवाली सीते ! तुम्हारी नासिका अति सुन्दर है। तुम्हारे अधर

बिम्बफल के समान लाल हैं। आज तुमने संग्रामभूमि में मूलकासुर को मारकर हम सबका उद्धार कर दिया। जो प्रातःकाल में ब्रह्मा जी के द्वारा कहे गये इन नौ श्लोकों का पाठ करता है, उसकी समस्त कामनाएँ पूर्ण हो जाती है तथा अन्त समय में उसे भगवान् श्रीराम जी के समीप स्थान मिलता है। इस तरह ब्रह्मा जी ने स्तुति करके विविध प्रकार के वस्त्राभूषणों के द्वारा राम जी और सीता जी का पूजन करा तथा राम जी ने भी ब्रह्मा जी की विधिवत् पूजा की। तदनन्तर राम जी से आज्ञा लेकर समस्त देवताओं के साथ ब्रह्मा जी अपने लोक को चले गये। तब विभीषण जी ने श्रीभगवान् से प्रार्थना करी कि पहले जब आप रावण का वध करने के लिए लंका आये थे तब पिता जी की आज्ञा न होने के कारण आपने नगरी में प्रवेश नही किया था परंतु इस बार आप मेरे घर पधारकर मुझे कृतार्थ कीजिए। प्रभु श्रीराम जी ने वह प्रार्थना स्वीकार कर ली तथा वे अपने पुष्पक विमान पर बैठकर लंका में अपने सखा श्रीविभीषण जी के भवन में पधारे। वहाँ पहुँचकर राम जी ने विभीषण जी का अभिषेक कर उन्हें लंका के राजसिंहासन पर आसीन करा। उस समय बड़ा उत्सव मनाया गया। इसके बाद विभीषण जी ने राम जी, सीता जी तथा लक्ष्मण जी आदि का विविध रत्नों तथा वस्त्राभूषणों के द्वारा सत्कार किया। तत्पश्चात् उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति भगवान् श्रीराम जी को समर्पित कर दी। उस समय विभीषण जी की सारी सम्पत्ति में से प्रभु श्रीराम जी को भगवान् कपिलवाराह की मूर्ति अच्छी लगी। जिसका पूजन रावण स्वयं करा करता था। विभीषण जी ने भगवान् श्रीराम जी को वह मूर्ति दे दी। कपिल भगवान् ने मनःशक्ति के द्वारा उस मूर्ति की रचना की थी। अनेक दिवसों तक भगवान् कपिल मुनि ने स्वयं उस मूर्ति का पूजन करा तत्पश्चात् वह मूर्ति देवराज इन्द्र को प्राप्त हुई। उसके बाद जब रावण ने इन्द्र देव को संग्राम में पराजित करा तब रावण वह मूर्ति इन्द्र देव से छीन लाया तथा बहुत समय तक रावण ने उस विग्रह का पूजन करा। आज वही विग्रह विभीषण जी ने भगवान् श्रीराम जी को समर्पित कर दिया। राम जी ने बड़े प्रेम से उस विग्रह को अपने पुष्पक विमान में रख लिया। इसके पश्चात् अपने पति भगवान् श्रीराम जी तथा लक्ष्मणादि देवरों तथा कुश आदि बालकों के साथ सीता जी उस शिंशपा वृक्ष के नीचे गईं जहाँ रावण के हर ले जाने पर वे बहुत दिनों तक रहीं थीं। वहाँ पहुँचकर सीता माँ

ने भगवान् श्रीराम जी को बताया कि यह वही स्थान है, जहाँ आप से वियुक्त होकर मैं अनेक दिनों तक रही थी। इसके बाद राम जी के दाहिने हाथ की उँगली पकड़कर सीता जी अशोक वाटिका में इधर-उधर भ्रमण करती हुई उन स्थानों को दिखाने लगीं जहाँ वे स्नानादि कृत्य करती थीं। भ्रमण करते हुए सीता जी त्रिजटा के स्थान पर पहुँची तथा विविध प्रकार के वस्त्राभूषणों के द्वारा त्रिजटा का सत्कार किया। जब त्रिजटा प्रसन्न हो गयी तब विभीषण जी की पत्नी सरमा से सीता माँ ने कहा- जिस समय राक्षसियाँ अपना भयंकर मुख दिखाकर मुझे डराती-धमकाती थीं, तब यह त्रिजटा ही मेरी रक्षा करती थी। हे सरमे ! मैं तुमसे विनयपूर्वक कहती हूँ कि सर्वदा तुम मेरे ही समान इसका सम्मान करना। इतना कहकर सीता जी ने त्रिजटा का हाथ सरमा के हाथों में थमा दिया। इस तरह घूम-फिरकर राम जी सीता के साथ डेरे पर पहुँचे तथा लंका में मन्त्री को राज्य की देख-भाल करने के लिए छोड़कर विभीषण जी को अपने साथ लेकर अयोध्या जी को चल पड़े। अपने भक्त विभीषण जी के प्रार्थना करने पर राम जी ने उनकी रक्षा के लिए अपना धनुष उठाकर बड़े वेग से लंका के चारों ओर घुमाया तथा इस प्रकार कहा- हे राक्षसेन्द्र ! मैंने तुम्हारी रक्षा के लिये यह धनुष घुमाया है। मेरे धनुष की यह रेखा शत्रु के लिए दुस्तर होगी। मैं तुम्हें यह बाण भी दे रहा हूँ, इसे ग्रहण करो। इसमें मेरा नाम लिखा हुआ है, यह सदा तुम्हारे प्राणों की रक्षा करेगा। एक बात और भी है, वह यह कि तुम इस बाण को लिये हुए मेरे धनुष की इस रेखा को लांघोगे तो तुम्हें यह कोई कष्ट नहीं पहुँचायेगी। मेरा बाण जब लिये रहोगे, उस समय कोई शत्रु भी तुम्हारे ऊपर आक्रमण नही करेगा। इतना कहकर राम जी ने अपना बाण विभीषण जी को दे दिया। बाण को ग्रहण कर विभीषण जी ने राम जी को प्रणाम किया। इसके अनन्तर भगवान् श्रीराम जी पुष्पक विमान पर बैठकर अनेक देशों को देखते हुए अयोध्या पुरी को चल पड़े। मार्ग में अनेक राजाओं की भेंटो को स्वीकार करते हुए वे अपनी नगरी अयोध्या में पहुँचे। राम जी के वहाँ पहुँचने पर नाना प्रकार के बाजे बजे तथा अप्सराओं ने नृत्य करा। यूपकेतु ने अनेक लोगों के साथ लिये हुए भगवान् श्रीराम जी की अगवानी की तथा अयोध्यानिवासिनी नारियों ने श्रीसीताराम जी का दर्शन करके उनपर पुष्पवृष्टि करी। इसके बाद राम जी अनेक राजाओं के साथ अपने

सभाभवन में गये तथा सीता जी अपने महल में चली गयीं। बाद में राम जी ने वहाँ भगवान् कपिलवाराह के विग्रह को स्थापित करा। एक दिवस भगवान् श्रीरामचन्द्र जी ने प्रसन्न होकर वह मूर्ति श्रीशत्रुघ्न जी को दे दी तथा माता श्रीसीता जी ने भगवान् श्रीराम जी के वियोगकाल में जिन व्रतों तथा नियमों की मन्नतों को लिया था, उन सबको उन्होंने सम्पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न करा तथा उनका उद्यापन भी यत्न के साथ किया॥

॥ इति श्री ॥

श्रीसीता माँ के श्राप

आनन्द रामायण, यात्राकाण्ड के अनुसार

भगवान् श्रीराम जी पुष्पक विमान से गया जी गये तथा फल्गु नदी के पूर्वी तट पर विमान को त्यागकर वे दिव्य विष्णुपद के दर्शन करने के लिये गये। दर्शन उपरान्त वे पुनः यान के पास आ गये तथा रात्रि वहीं व्यतीत करके सबेरे ब्राह्मणों के सहित फल्गुनदी के पवित्र तीर्थ में स्नानार्थ गये। इतने में सखियों से घिरी हुई माता श्रीसीता जी फल्गु पर स्नानार्थ आयीं और उन्होंने स्नान करके सौभाग्यवती स्त्रियों का पूजन करा। पश्चात् वे भगवती महेश्वरी के पूजनार्थ बालू के पाँच पिण्डों से माता श्रीदुर्गा जी की प्रतिमा बनाने को उद्यत हुईं। जब वे बालुका का पिण्ड बनाकर उसे धरती पर रखनें लगीं, तब उन्हें पृथ्वीतल से निकलते हुए अपने ससुर महाराज श्रीदशरथ जी के सुन्दर हस्त के दर्शन हुए। उनका दाहिना हस्त सीता जी के हाथ से उस उत्तम पिण्ड को लेकर पुनः धरती में ही प्रवेश कर गया। यह देख सीता जी के मन में बड़ा कौतूहल हुआ। फिर पुनः सीता जी ने पिण्ड बनाकर जमीन पर रक्खा, परन्तु उस पिंड को भी पूर्ववत् वह हस्त ले गया। इस प्रकार सीता जी ने एक-एक करके कुल एक सौ आठ पिण्ड दुर्गा जी के पूजन के लिये रक्खे परन्तु उन सबको दशरथ जी का हाथ ले गया। यह देखकर सीता जी हार गयीं। अन्त में उन्होंने दुर्गा जी का मन ही मन पूजन करा और विमान के पास लौट आयीं। इस

घटना को न तो सखियों ने जाना और न ही राम जी ने। माता सीता जी ने भी प्रभु जी हमको क्या कहेंगे, इस डर से उस वृत्तान्त को छिपाकर रखा। बाद में जब राम जी ने पञ्चतीर्थ करने के उपरान्त प्रेतशिला पर जाकर पिण्डदान दिया तथा अपने हाथ की अनामिका अंगुली से रामनाम अंकित सुन्दर सुवर्ण की अंगूठी निकालकर दक्षिण दिशा को मुख करके मंत्र के द्वारा जमीन पर तीन रेखाएं खींची, पश्चात् उन्होंने कुशा बिछाकर उसपर तिल घृत मधु आदि से युक्त सक्तु का पिंड रखना प्रारम्भ किया। प्रभु ने जब दक्षिण हस्त में पिण्ड लेकर पृथ्वी की ओर देखा तब उन्हें अपने पिता के हाथ के दर्शन नही हुए। इसपर वहाँ के ब्राह्मण आश्चर्यचकित होकर राम जी से बोले- यहाँ सभी के पितरों के दाहिने हाथ पिंड लेने के लिये निकलते हैं, परंतु आपके पिता का हाथ क्यों नहीं निकला इसका कारण समझमें नहीं आ रहा। तब राम जी ने विस्मित होकर लक्ष्मण जी से पूछा- हे लक्ष्मण ! तुम बुद्धिमान् हो, क्या तुम इसका कारण जानते हो ? तब लक्ष्मण ने जी कहा- भैया ! जब हम लोग गोदावरी गये थे, तब तो इंगुदी फल के पिसान का पिण्डदान करते समय पिता जी का हाथ दिखाई दिया था, परंतु वह यहाँ नहीं दिखा इस बात का मुझे भी आश्चर्य है। आप इसका कारण भाभी से पूछें। यह सुनकर श्रीजानकी जी घबरा गईं और बोलीं- हे रघुराज ! आप क्षमा करें, मुझसे कुछ अपराध हो गया है। यह सुनकर प्रभु ने कहा कि घबराने तथा डरने की कोई बात नहीं है, जो भी बात हो वो स्पष्टता से कहो। तब माता श्रीजानकी जी ने सारा वृत्तान्त स्पष्ट रूप से बता दिया। यह सुनकर प्रभु श्रीराम जी ने पूछा- इसका साक्षी कौन है कि हमारे पिता जी ने तुम्हारे हाथ से पिंडदान ग्रहण किया है ?। तब सीता जी ने पास के आम्रवृक्ष को साक्षी कहा, परन्तु उससे पूछने पर उसने इनकार कर दिया। तब सीता जी ने उसको श्राप दिया कि अरे दुष्ट ! तूने असत्य कहा है, अतः मगध में तू फलशून्य होकर रहेगा। फिर सीता माता ने फल्गु नदी को अपना साक्षी बताया, परन्तु वह भी राम जी के पूछने पर भय से नाही कर गयी। इसपर सीता माँ ने उसको भी श्राप दिया कि तू सत्य बात में भी झूठ बोली है, अतः तू अधोमुखी (अन्तर्मुखी) होकर बहेगी। तब सीता जी ने कहा कि मेरी साक्षी यहाँ के रहनेवाले तथा उस समय मेरे पास खड़े ब्राह्मण देंगे, परन्तु उन्होंने भी विह्वल होकर राम जी के पूछने पर ना कर दिया। वे लोग विचार

करने लगे कि कहीं "यदि ऐसा था तो आप लोगों ने सीता को उस समय पिण्ड देने से रोका क्यों नहीं।" ऐसा कहकर सत्य कहने पर राम जो हमको शाप न दे दें। तब माता सीता जी ने उनको भी शाप दिया कि जाओ, तुमलोग द्रव्य से कभी तृप्त न होकर मारे-मारे फिरोगे। तब माता जानकी जी ने बिल्ली को साक्षी देने के लिए कहा, परन्तु उसने भी पूछने पर ना कह दिया। तब सीता जी ने उसे भी श्राप दिया कि उस समय मेरे समक्ष पूछ किये खड़े रहने पर भी तूने ना कर दिया है, अतः जा तेरी पूँछ अस्पृश्य हो जाएगी। तब जगदम्बा माता श्रीजानकी जी ने गौ को साक्षी देने के लिए कहा, परंतु भगवान् श्रीराम जी के पूछने पर उसने भी ना कह दिया। तब सीता जी ने कहा कि हे धेनो ! मेरे श्राप से तेरा मुख अपवित्र हो जाएगा। इसके पश्चात् सीता माता ने पीपल के वृक्ष को साक्षी देने के लिए राम जी के सम्मुख उपस्थित करा, परन्तु जब वह भी इन्कार कर गया तब सीता जी ने क्रोध करके उसे भी श्राप दिया कि तू आज से अचलदल हो जाएगा। तब अन्त में सीता माता ने कहा कि भगवान् सूर्य मेरी साक्षी देंगे। तब राम जी के पूछने पर सूर्य भगवान् ने कहा कि यह बात सत्य है तथा इस कार्य से आपके पिता अवश्य सन्तुष्ट हुए हैं। इतने में ही सूर्य के सदृश कान्ति वाले विमान पर आरूढ़ होकर स्वयं महाराज श्रीदशरथ जी वहाँ आ गये। फिर उन्होंने राम जी का दृढ़ आलिङ्गन करा तत्पश्चात् वे राम जी से बोले- हे राम ! तुमने यथार्थ में हमको तार दिया है। मैथिली के पिण्डदान से हमें अत्यन्त तृप्ति मिली है, तो भी लोकशिक्षा के लिए तुम गया श्राद्ध अवश्य करो। तब राम जी ने अपने पिता से पूछा कि आपने यहाँ इतनी जल्दी बालुकापिंड क्यों ग्रहण किया ? इसका क्या कारण है ? इसके उत्तर में दशरथ जी ने कहा- हे राम ! गया में पिंडदानके समय बड़े-बड़े विघ्न उपस्थित होते हैं। अतः मैंने त्वरा की थी। इतना कहकर राजा दशरथ राम जी के हाथ से भी कुछ कव्य ग्रहण करके विमान के द्वारा वहाँ से चले गये। पश्चात् राम जी ने प्रेतपर्वत पर पिण्डदान किया तथा वहाँ से वे प्रेतशिला गये। वहाँ काकबलि देकर वे धर्मवन गये तथा वहाँ एकोनपद स्थान में तिल पायस तथा शर्करा से युक्त सक्तु के अनेक पिंड पृथक-पृथक् करके दिये तथा वट श्राद्ध भी सम्पादित किया। तदनन्तर अष्टतीर्थी करके तीनों नियत स्थानों में सन्ध्यावन्दन करने के बाद उन्होंने विधिवत् बहुत से दान दिये। इसके बाद उन्होंने अनेक विभवों

से भगवान् गदाधर की पूजा की तथा मगधदेशस्थ आम्रवृक्ष का जल द्वारा सेचन किया। कहा भी है कि किसी एक मुनि ने कुशायुक्त हाथों में जलपूर्ण घड़ा लेकर आम्रवृक्ष के मूल में जल डाला, इससे आम्रवृक्ष भी सिच गया और पितर भी तृप्त हो गये। इसी के आधार पर **"एका क्रिया द्व्यर्थकरी"** यह कहावत प्रचलित हुई। इसी प्रकार प्रतिदिन विष्णुपद की पूजा करते तथा विमान पर चढ़कर भ्रमण हुए भगवान् श्रीराम जी ने गया जी में एक वर्ष व्यतीत किया। इसके पश्चात् वे सब लोगों को आश्वासन देकर अपने पुष्पक विमान पर आरूढ़ होकर पूर्व दिशा की ओर चल दिये। फल्गु नदी के किनारे जहाँ जगदीश्वर भगवान् श्रीराम जी का विमान खड़ा हुआ था, उस स्थान को वहाँ के विप्र रामगया कहने लगे॥

॥ इति श्री ॥

आनन्द रामायण के जन्म काण्ड के अनुसार जब भगवान् श्रीराम जी ने माता श्रीसीता जी को बताया कि वे उनका त्याग करेंगे तब राम जी के कहने से सीता जी ने अपना रजोगुण तथा तमोगुणमय एक अन्य रूप बनाया और वह रूप राम जी के दक्षिण भाग में स्थित हो गया तथा स्वयं सीता माता अपने सात्विक स्वरूप से प्रभु श्रीराम जी के वामांग में लीन हो गईं फिर प्रभु ने त्याग माता के उसी दूसरे स्वरूप का करा, वन को भी माता का वह दूसरा स्वरूप ही गया तथा माता के उस दूसरे स्वरूप ने ही श्रीवाल्मीकि जी के आश्रम में वास करा था। बाद में जब माता सीता धरती में समाने लगीं तब प्रथमत: श्रीराम जी ने धरती देवी से सीता जी को लौटाने की विनय की परंतु जब उन्होंने प्रभु की विनती सुनकर भी सीता माता को नही लौटाया, तब श्रीराम जी ने धरती का नाश कर डालने का निश्चय करा, तब तुरंत ही धरती माता ने माता सीता को श्रीराम जी को लौटा दिया और प्रभु की विनय करी। तब प्रभु ने उन्हें अभय कर दिया फिर उन्होंने सीता जी की स्तुति करी तदनन्तर श्रीसीता जी ने भी उनका पूजन करा फिर धरती माता अन्तर्धान हो गयीं। तदनन्तर भगवान् श्रीराम जी माता श्रीसीता जी के साथ अत्यन्त सुखपूर्वक रहने लगे तथा उन्होंने अनेक वर्षों तक नाना प्रकार की लीलाएँ करके फिर अपने परमधाम को गमन करा॥

श्रीसीता जी को माता अनसूया जी का उपदेश

श्रीरामचरितमानस, अरण्यकाण्ड के अनुसार

चौपाई-

अनुसुइया के पद गहि सीता । मिली बहोरि सुसील बिनीता ॥

रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई । आसिष देइ निकट बैठाई ॥

(प्रभु श्रीराम जी माता श्रीसीता जी तथा प्रभु श्रीलक्ष्मण जी के सहित चित्रकूट से अत्रि मुनि के आश्रम पर आए और मुनीश्वर से मिले तथा मुनिराज ने प्रभु की स्तुति करी। उसके बाद परम शीलवती और विनम्र माता श्रीसीता जी अत्रि जी की पत्नी माता श्रीअनसूया जी के चरण पकड़कर उनसे मिलीं। उस समय श्रीअनसूया जी के मन में बड़ा सुख हुआ। उन्होंने आशीर्वाद देकर श्रीसीता जी को अपने पास बैठा लिया॥

दिब्य बसन भूषन पहिराए । जे नित नूतन अमल सुहाए ॥

कह रिषिबधू सरस मृदु बानी । नारिधर्म कछु ब्याज बखानी ॥

और उन्हें ऐसे दिव्य वस्त्र तथा आभूषण पहनाये, जो नित्य-नये निर्मल और सुहावने बने रहते हैं। फिर माता अनसूया जी उनके बहाने मधुर और कोमल वाणी से स्त्रियों के कुछ धर्म बखानकर कहने लगीं॥

मातु पिता भ्राता हितकारी । मितप्रद सब सुनु राजकुमारी ॥

अमित दानि भर्ता बयदेही । अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥

वे कहती हैं- हे राजकुमारी ! सुनिये, माता, पिता, भाई सभी स्त्री का हित करनेवाले हैं, परन्तु ये सब एक सीमा तक ही सुख देनेवाले हैं। परन्तु हे जानकी! पति तो स्त्री को मोक्षरूप असीम सुख देनेवाला है। वह स्त्री अधम है, जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती॥

धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपद काल परिखिअहिं चारी ॥

बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना । अंध बधिर क्रोधी अति दीना ॥

धैर्य, धर्म, मित्र तथा नारी- इन चारों की परीक्षा विपत्ति के समय ही होती है।

वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अन्धा, बहरा, क्रोधी और अत्यन्त ही दीन-॥

ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना। नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥

एकइ धर्म एक ब्रत नेमा । कायँ बचन मन पति पद प्रेमा ॥

ऐसे पति का अपमान करने से भी स्त्री यमपुरमें नाना प्रकार के दुःख पाती है। शरीर, वचन और मन से पति के चरणों में प्रेम करना स्त्री के लिये, बस, यह एक ही धर्म है, एक ही व्रत है और एक ही नियम है॥

जग पतिब्रता चारि बिधि अहहीं । बेद पुरान संत सब कहहीं ॥

उत्तम के अस बस मन माहीं । सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ॥

संसार में चार प्रकार की पतिव्रताएँ हैं वेद, पुराण और संत सब ऐसा कहते हैं कि उत्तम श्रेणी की पतिव्रता स्त्री के मन में ऐसा भाव वास करता है कि जगत् में मेरे पति के अतिरिक्त दूसरा पुरुष स्वप्न में भी नहीं है॥

मध्यम परपति देखइ कैसें । भ्राता पिता पुत्र निज जैसें ॥

धर्म बिचारि समुझि कुल रहई । सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई ॥

मध्यम श्रेणी की पतिव्रता पराये पति को कैसे देखती है, जैसे वह अपना सगा भाई, पिता अथवा पुत्र हो। जो धर्म को विचारकर और अपने कुल की मर्यादा समझकर बची रहती है, वह निकृष्ट अर्थात् निम्न श्रेणी की स्त्री है, ऐसा वेद कहते हैं ॥

बिनु अवसर भय तें रह जोई । जानेहु अधम नारि जग सोई ॥

पति बंचक परपति रति करई । रौरव नरक कल्प सत परई ॥

और जो स्त्री अवसर न मिलने से अथवा भयवश पतिव्रता बनी रहती है, जगत् में उसे अधम स्त्री जानना। पति को धोखा देनेवाली जो स्त्री पराये पति से रति करती है, वह सौ कल्पतक रौरव नरक में पड़ी रहती है॥

छन सुख लागि जनम सत कोटी । दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ॥

बिनु श्रम नारि परम गति लहई । पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई ॥

क्षणभर के सुख के लिये जो सौ करोड़ अर्थात् असंख्य जन्मों के दुःख को नहीं समझती, उसके समान दुष्टा कौन होगी। जो स्त्री छल छोड़कर पातिव्रत धर्म को ग्रहण करती है, वह बिना ही परिश्रम परम गति को प्राप्त करती है ॥

पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई । बिधवा होइ पाइ तरुनाई ॥

किन्तु जो पति के प्रतिकूल चलती है, वह जहाँ भी जाकर जन्म लेती है, वहीं तरुनाई पाकर अर्थात् भरी जवानी में विधवा हो जाती है॥

सोरठा-

सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।

जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥

स्त्री जन्म से ही अपवित्र है, किन्तु पति की सेवा करके वह अनायास ही शुभ गति प्राप्त कर लेती है। पातिव्रत धर्म के कारण ही आज भी 'तुलसी जी' श्रीहरि को प्रिय हैं तथा चारों वेद उनका यश गाते हैं॥

सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं ।

तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित ॥

हे सीते! सुनो, तुम्हारा तो नाम ही ले-लेकर स्त्रियाँ पातिव्रतधर्म का पालन करेंगी। तुम्हें तो श्रीराम प्राणों के समान प्रिय हैं, यह पातिव्रतधर्म की कथा तो मैंने संसार के हित के लिये कही॥

चौपाई-

सुनि जानकी परम सुख पावा । सादर तासु चरन सिरु नावा ॥

तब मुनि सन कह कृपानिधाना। आयसु होइ जाउँ बन आना ॥

श्रीजानकी जी ने माता अनसूया जी के वचनों को सुनकर परम सुख पाया और आदरपूर्वक उनके चरणों में सिर नवाया। तब कृपा की खान प्रभु श्रीराम जी ने मुनि से कहा कि- आज्ञा हो तो अब दूसरे वन में जाऊँ॥

॥ इति श्री ॥

॥ दोहावली ॥

सीताचरन प्रनाम करि सुमिरि सुनाम सुनेम ।

होहिं तीय पतिदेवता प्राननाथ प्रिय प्रेम ॥

भलीभाँति नियमपूर्वक सीता जी के चरणों में प्रणाम करने तथा उनके सुन्दर नाम का स्मरण करने से स्त्रियाँ पतिव्रता हो जाती हैं तथा अपने प्रिय प्राणनाथ का प्रेम प्राप्त करती हैं॥

श्रीसीताराम की होली क्रीड़ा

सत्योपाख्यान, उत्तरार्द्ध, अध्याय अट्ठाइस के अनुसार

फाल्गुन मास में सखियों की प्रेरणा से श्रीसीता जी के प्रेमाग्रह पर प्रभु श्रीराम जी ने होली का उत्सव मनाने की आज्ञा दी। तब सखियाँ अनेक प्रकार के हाव-भाव प्रदर्शित करतीं हुईं हास-विलास पूर्वक नृत्य-गान करने लगीं। वे एक-दूसरे पर मुट्ठी भर-भर कर अबीर-गुलाल डालती हैं तथा लाल रंग को जल में घोलकर उसमें बहुत सा इत्र मिलाकर उसे पिचकारी के द्वारा एक-दूसरे पर छोड़ती हैं। तब भगवान् श्रीराम जी ने पिचकारी से उन सखियों को भगा दिया फिर माता श्रीसीता जी ने भी स्वर्ण की पिचकारी द्वारा राम जी को गीला कर दिया और राम जी का हाथ पकड़कर उन्हें ले जाकर रंग के कुण्ड में वस्त्र सहित ही स्नान करा दिया, तब राम जी ने भी सीता जी को पकड़ कर उसी रंग के कुण्ड में डुबा दिया । रंग कुण्ड से निकलने पर राम जी के सारे वस्त्र लाल हो गये। उस रंग के कुण्ड से निकल कर भगवान् श्रीराम जी अपने वस्त्र निचोड़ने लगे। उसी समय रंग में भीगीं हुईं सखियाँ राम जी के नेत्रों में काजल लगाने की इच्छा से वहाँ आ गईं। राम जी ने यह जानकर सोचा कि मेरा निरंजन क्यों सांजन होकर मिथ्या हो । यही कज्जल यदि मंथरा मौसी के चेहरे पर लग जाय तो हास्य-विनोद थोड़ा अधिक मनोरंजक हो जाय। अतः प्रभु श्रीराम जी हँसते हुये भागे तब श्री जी ने नेत्र के इशारे से सखियों को साथ आने को कहा और वे भी प्रभु श्रीराम जी के पीछे-पीछे उन्हे पकड़ने के लिए दौड़ीं। तब प्रभु श्रीराम जी मैय्या कैकेयी के घर में चले गये, कैकेयी अम्बा ने उन्हें एक स्थान पर छिपा दिया। जब सखियों के सहित सीता जी वहाँ पर पहुँची तथा राम जी को खोजने लगीं तब मन्थरा ने बता दिया कि बड़े राजकुमार उस अमुक स्थान में छिपे हैं। तब तो कैकेयी जी ने रुष्ट होकर मन्थरा को डाँटकर सीता माता से कहा- पुत्री ! इस बंदर के समान मुख वाली कुबरी को ही नाना रंगों से रंगकर विदूषिका बना डालो। यह सुनते ही सखियों ने मन्थरा के गाल, ललाट आदि सभी अंगों पर कज्जल आदि लगाकर उसको दर्पण दिया, तब वह अपना मुख कई रंगों में रंगा देखकर लज्जित होकर भागी और एक घर में जाकर उसने भीतर से कपाट बन्द कर

लिये। इसी बीच में भगवान् श्रीराम जी वहाँ से निकल कर बड़ी अम्बा कौसल्या माता के घर भागे, तब उनके वस्त्रों से रंग टपक रहा था। राम जी अपनी माता को पर्यंक पर बैठी देखकर तीन वर्ष के बालक के समान हँसते-हँसते उनकी उनकी गोद में गिर पड़े। तभी पिचकारी लिये हुये सखियों के सहित श्री जी भी वहाँ पहुँच गई परन्तु वहाँ अपनी सास को देखकर वे अपना सिर नीचा करके खड़ी हो गईं और सखियों को रोककर अपने हाथ की पिचकारी सुभगा सखी के हाथ मे देकर माता श्रीसीता जी कौसल्या माता से बोलीं- माता जी ! आपके पुत्र ने मुझे रंग से भिगो दिया और अब भागकर आपकी गोद में साधु बन कर बैठे हैं। स्वामी ने पिचकारी से मेरे एवं मेरी सखियों के सारे वस्त्र खराब कर दिये हैं। तब कौसल्या जी ने सीता जी को गोद में लेकर उनसे कहा कि बेटी ! तुम्हें ऐसी उपालम्भ की बात मेरे सामने नहीं कहनी चाहिये। देखो तो तुम्हारे भय से मेरा बच्चा यहाँ आकर छिप गया है। यह फाल्गुन मास तो खेलने का दिन ही है, अच्छा इसके दण्ड में मेरे पुत्र से भेंट-पूजा ले लो। ऐसा कहकर माता कौसल्या जी ने श्री जी को एवं सखियों को बहुत से बहुमूल्य वस्त्राभूषण दिये तथा अपने बेटे एवं बहू को विदा करा। तब श्री जी अपने महल में जाकर प्रभु श्रीराम जी का हाथ पकड़कर उनसे कहने लगीं कि अब कहिये यहाँ आपकी कौन गति की जाए ? इसपर प्रभु श्रीराम जी हँसने लगे। इसी प्रकार से अयोध्या पुरी में अनेक दिवसों तक भिन्न-भिन्न प्रकार से होली की क्रीड़ा होती रही॥

॥ इति श्री ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थ: ॥

॥ श्रीसीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥

॥ जय जय जानकीनाथ जय श्रीरामप्रिया वैदेही ॥

हमारे प्रकाशित ग्रन्थों का विवरण :

श्रीरामार्चन सर्वस्वम्
मूल्य : ४५० मात्र

श्रीसीतार्चन सर्वस्वम्
मूल्य : ३०० मात्र

ग्रन्थ प्राप्ति के लिए सम्पर्क सूत्र : 8303317498

॥ जय जय जानकीनाथ जय श्रीरामप्रिया वैदेही ॥